‘मलसॉमा’ उपन्यास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

‘MALSAWMA’ UPANYAS: EK VISHLESHANATMAK ADHYAYAN

ङुर्नुनसाङी

NGURNUNSANGI

हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय

DEPARTMENT OF HINDI
MIZORAM UNIVERSITY

'मलसॉमा' उपन्यास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

'MALSAWMA' UPANYAS: EK VISHLESHANATMAK ADHYAYAN

प्रस्तुतकर्ता

ङुर्नुनसाङी

NGURNUNSANGI

हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय

DEPARTMENT OF HINDI
MIZORAM UNIVERSITY

मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के शिक्षा एवं मानविकी संकाय के अंतर्गत
हिंदी विषय में मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल.) की उपाधि के लिए
अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध

प्रो. संजय कुमार
आचार्य एवं अध्यक्ष
हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आईजाल-796004

केंद्रीय विश्वविद्यालय
A Central University
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

Prof. Sanjay Kumar
Professor & Head
Department of Hindi
Mizoram University,
Aizawl-796004

Mobile No. - 09402112143; 09774517465; E-mail: sanjaykumarmzu@gmail.com ; Website : www.mzu.edu.in

दिनांक: 23.12.2019

<u>प्रमाण-पत्र</u>

प्रमाणित किया जाता है कि **डूर्नुनसाङी** ने मेरे निर्देशन में मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ॉल की **मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल. - हिंदी)** की उपाधि हेतु '**'मलसॉमा' उपन्यास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन**' विषय पर शोध-कार्य किया है। प्रस्तुत शोध कार्य शोधार्थी की अपनी निजी गवेषणा का फल है। यह इनका मौलिक कार्य है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध या इसके किसी भी अंश को किसी विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी प्रकार की उपाधि हेतु अद्यावधि प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ॉल की **मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल. - हिंदी)** की उपाधि हेतु मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करने की संस्तुति करता हूँ।

(प्रो. संजय कुमार)
शोध-निर्देशक

हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आइज़ॉल

दिसंबर - 2019

घोषणा पत्र

मैं **डूर्नुनसाङी** एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की विषय-सामग्री मेरे द्वारा किए गए शोध-कार्यों का सुपरिणाम है। इस शोध-सामग्री के आधार पर न तो मुझे और जहाँ तक मुझे ज्ञात है, न किसी अन्य को कोई उपाधि प्रदान की गई है और न ही यह लघु शोध-प्रबंध मेरे द्वारा कोई अन्य उपाधि प्राप्त करने के लिए किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में प्रस्तुत किया गया है। इस लघु शोध-प्रबंध लेखन के दौरान जिन ग्रंथों की सहायता ली गयी है उसे समुचित रूप से उद्धृत किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मिज़ोरम विश्वविद्यालय के सम्मुख हिंदी विषय में **मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल. - हिंदी)** की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

(डूर्नुनसाङी)
शोधार्थी

(प्रो. संजय कुमार)
अध्यक्ष

(प्रो. संजय कुमार)
शोध-निर्देशक

प्राक्कथन

प्राक्कथन

खोलकूङी मिज़ो भाषा एवं साहित्य का एक चर्चित नाम है, जिससे मैं बचपन से सुनती आ रही हूँ। 1977 में आयोजित एक ईसाई प्रेम-कहानी लेखन की प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए खोलकूङी द्वारा 'जोलपला ठ्लान त्लाङ' नामक अपने प्रसिद्ध उपन्यास की रचना की गयी थी, जिसे आगे चलकर उन्होंने स्वयं 1983 में प्रकाशन करवाया। मिज़ो भाषा में लिखित इस उपन्यास 'जोलपला ठ्लान त्लाङ' का ही हिन्दी में अनुवाद 'मलसॉमा' शीर्षक से किया गया है। दुर्भाग्य से इस उपन्यास में कहीं भी हिन्दी अनुवादक का नामोल्लेख नहीं मिलता है।

प्रस्तुत उपन्यास एक अनाथ ईसाई युवती एवं एक सुलझे हुए और ईमानदार ईसाई युवक के प्रेमकथा पर आधारित है। 'मलसॉमा' उपन्यास के कथानक को तात्कालिक मिज़ो समाज की वास्तविक स्थिति पर आधारित माना जा सकता है। उपन्यास के सभी पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ तथा उनकी धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि उपन्यास के लक्ष्य को रेखांकित और सिद्ध करने वाली हैं। उपन्यास की पृष्ठभूमि पात्रों के बीच आपसी समझ, उनका धर्म की शिक्षा के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित मनोभाव और आवश्यकता पड़ने पर निष्पक्ष भाव से एक दूसरे की सहायता करने की मनोवृत्ति से परिपूर्ण है।

प्रस्तुत उपन्यास मिज़ो समाज की सामाजिक एवं धार्मिक संरचना की दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण है। मिज़ो समाज का जातीय ऊँच-नीच की भावना से रहित होना और आवश्यकतानुसार सभी को अपने आगोश में लेने की प्रवृत्ति को भी पृष्ठभूमि का अभिन्न अंग माना जा सकता है। दूसरी ओर मिज़ो समाज में भी स्वार्थी, लालची और ईर्ष्या रखने वाले तथा लड़ाई-झगड़ा करने वालों लोगों की कमी नहीं है। परंतु ईसाई धर्म के मिज़ोरम में आगमन के पश्चात उसकी शिक्षाओं का गहरा प्रभाव संपूर्ण मिज़ो समाज पर पड़ा है। उपन्यास की पृष्ठभूमि इन्हीं मानवीय संवेदनाओं और परिस्थितियों पर आधारित है। मिज़ो समाज का हिस्सा होने की वजह से स्वाभाविक रूप से मिज़ो साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार खोलकूङी और

उनके साहित्य के प्रति मेरी रुचि प्रारंभ से रही है। एम. फिल. करते हुए जब मुझे ज्ञात हुआ कि उनके 'जोलपला ठ्लान त्लाङ' नामक मिज़ो उपन्यास का हिंदी अनुवाद 'मलसॉमा' शीर्षक से किया गया है। तब मेरी जिज्ञासा उसमें उत्पन्न हुई और मैंने उस पर शोध कार्य करने का निश्चय किया, जिसका परिणाम प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध है।

अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को तीन अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय 'खोलकूङी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' है। इसके अंतर्गत दो 'उप-अध्याय' रखे गए हैं। प्रथम उप-अध्याय में लेखिका खोलकूङी का जन्म, पारिवारिक जीवन, शिक्षा, व्यवसाय, पुरस्कार एवं सम्मान आदि का परिचय दिया गया है। दूसरे 'उप-अध्याय' में खोलकूङी के कृतित्व एवं उनके समग्र रचनाओं का परिचय देते हुए उनका विश्लेषण किया गया है ।

द्वितीय अध्याय : 'मलसॉमा' उपन्यास की संवेदना' है। इसके अंतर्गत चार 'उप-अध्याय' रखे गए हैं। प्रथम उप-अध्याय में उपन्यास की पृष्ठभूमि का उद्घाटन किया गाय है। द्वितीय 'उप-अध्याय' में उपन्यास के पात्रों का चरित्र चित्रण किया गया है। तृतीय 'उप-अध्याय' के अंतर्गत प्रस्तुत उपन्यास के आधार पर मिज़ो समाज की सामाजिक स्थिति एवं धार्मिक स्थिति आदि का विवेचन किया गया है। चतुर्थ 'उप-अध्याय' के अंतर्गत प्रस्तुत उपन्यास की मूल संवेदना का उद्घाटन किया गया है।

तृतीय अध्याय : 'मलसॉमा' उपन्यास के अनुवाद की चुनौतियाँ हैं, जिसके अंतर्गत दो 'उप-अध्याय' रखे गए हैं। प्रथम 'उप-अध्याय' में 'मलसॉमा' उपन्यास के अनुवाद की प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं का उद्घाटन किया गया है, जिसमें मिज़ो नाम, स्थान आदि के उच्चारण संबंधी दृष्टि से देवनागरी लिपि का अशुद्ध प्रयोग (वर्तनी की समस्या), शीर्षक परिवर्तन के कारण और भाषाई प्रकृत्ति की भिन्नता से उत्पन्न अन्य समस्याओं का विश्लेषण किया गया

है। दूसरे 'उप-अध्याय' में मिज़ो भाषा से हिन्दी में अनुवाद करते समय रखी जाने वाली सावधानियों का रेखांकन किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध प्रो. संजय कुमार (आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल) के निर्देशन में पूर्ण किया गया है। उनका स्नेहाशीष, सतत प्रेरणा और परामर्शों के फलस्वरूप ही यह शोध कार्य पूर्ण हो सका है। मैं उनके प्रति विशेष कृतज्ञता का अनुभव करती हुई, यही कामना करती हूँ कि उनका स्नेह हमेशा मुझ पर बना रहे।

हिन्दी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय के अपने अन्य आदरणीय गुरुजनों – प्रो. सुशील कुमार शर्मा, डॉ. सुषमा कुमारी, डॉ. अमिष वर्मा और डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा का भी मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर बहुमूल्य सुझाव एवं प्रेरणादायक सहयोग देकर प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध लेखन के कार्य को पूर्णता तक पहुँचाने में मेरी मदद की।

किसी भी कार्य को पूर्ण करने में बहुत सारे लोगों का प्रत्यक्ष और परोक्ष सहयोग मिलता है। उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। मैंने और बिनीता पांडेय ने एक साथ एम.फिल. में दाखिला लिया था, एक साथ ही लघु शोध प्रबंध लेखन का कार्य प्रारम्भ किया था। इस दौरान उसका सहयोग मुझे हमेशा मिलता रहा है। इसके लिए मैं उसकी आभारी हूँ।

मैं अपनी परिवार के सभी सदस्यों और मित्रों के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके सहयोग के बिना मैं इस कार्य को पूर्ण नहीं कर सकती थी।

अंत में, मैं उन सभी ज्ञात-अज्ञात विद्वानों, व्यक्तियों एवं मित्रों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिनका नामोल्लेख मैं अनजाने में ऊपर नहीं

कर पाई हूँ पर जिनका सहयोग किसी-न-किसी रूप में इस लघु शोध प्रबंध लेखन और प्रकाशन के दौरान मुझे मिला है।

(डूर्नुनसाङी)

शोधार्थी

विषयानुक्रमणिका

'मलसॉमा' उपन्यास: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्रमाण पत्र

घोषण पत्र

प्राक्कथन i - iv

प्रथम अध्याय: खोलकूङी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 1 - 38

क) खोलकूङी का व्यक्तित्व

ख) खोलकूङी का कृतित्व

द्वितीय अध्याय: 'मलसॉमा' उपन्यास की संवेदना 39 - 78

क) उपन्यास की पृष्ठभूमि

ख) पात्रों का परिचय

ग) उपन्यास में अभिव्यक्त मिज़ो समाज की स्थिति

I. सामाजिक स्थिति

II. धार्मिक स्थिति

घ) उपन्यास की मूल संवेदना

तृतीय अध्याय: 'मलसॉमा' उपन्यास के अनुवाद की चुनौतियाँ 79 - 89

क) समस्याएँ

ख) सावधानियाँ

उपसंहार 90 -100

संदर्भ ग्रंथ-सूची 101-105

(क) आधार ग्रंथ

(ख) सहायक ग्रंथ

शोधार्थी का विवरण

जीवनवृत

प्रथम अध्याय

खोलकूङी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(क)खोलकूङी का व्यक्तित्व

(ख) खोलकूङी का कृतित्व

प्रथम अध्याय

खोलकूङी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

क) खोलकूङी का व्यक्तित्व :

खोलकूङी मिज़ो साहित्य का एक ऐसा नाम है जिसने जीवन के प्रति अपने अनुभव तथा वैचारिक भावनाओं का परिचय उपन्यास के माध्यम से व्यक्त कर मिज़ो साहित्य को नया आयाम देने का प्रयास किया है।

जन्म:

खोलकूङी का जन्म 14 सितम्बर 1927 को आइज़ोल के मिशन वेङठ्लङ में हुआ था। इनके पिता का नाम हाउन्हार छूमा तथा माता का नाम जौकाइवेली था। इनके बचपन के बारे में प्रो॰ एल॰टी॰ खियाङते ऐसे लिखा हैं, *"Anni hian duat taka enkawlin, Kohhran boruak hip pha rengin an ṭhanlentira."*[1] जिसका हिन्दी अनुवाद कुछ इस तरह है- "इनका बचपन बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरन बीता। माँ-बाप का प्यार इन्हे भरपूर रूप में मिला, साथ ही ईसाई धर्म के शिक्षा तथा धार्मिक परंपरा के अनुसार इन्हे अपना बचपन गुजारने का बहुत ही अच्छा और स्वच्छ वातावरन मिला।" जिसका प्रभाव आगे चलकर इनके संपूर्ण व्यक्तित्व में दिखाई देने लगा। धार्मिक अनुष्ठान तथा विभिन्न कार्य कर्मों में इन्हे कई प्रकार की जिम्मेदारिया भी सोपा जाता था जिनका निर्वाहा, वह बड़ी मनोयोग्, लगन, महनत एवं सफलता पूर्वक किया करती थी। यह हसमुख और मिलनसार स्वभाव की थी। सब के साथ मुक्त हृदय से मिलना औरो कके सुख-दुख में भी यथाशक्ति साथ देना इनके चरित्र का महानतम एवं निश्च्छलता द्यीतक माना जाता था। इनके समकालीन सभी सहेलियाँ भी इन्हें सहेली ही नहीं बल्कि अभिवाहक की तरह मानते थे।

परिवार:

खोलकूङी के पिता का देहांत 1994 को हुआ और इसके अगले ही वर्ष 1995 को इनके माँ भी चल बसी। इस तरह 57 वर्ष तक जो

परिवार हँसी-खुशी के साथ अपने विश्वास के धरातल पर ईश्वर की भक्ति करने के साथ-साथ समाज सेवा को अपना कर्तव्य मानकर खुशी-खुशी जीवन व्यतीत कर रहे थे क्रूर हाथों असमय ही बिखर गया।

ये चार भाई और तीन बहन हैं जिनका नाम क्रमशः इस प्रकार हैं:

1. लललियानछूङा (स्वर्ग.)
2. एच. ज़ौखूमा (स्वर्ग.)
3. एच. लालसाङलूरा (स्वर्ग.)
4. ज़ौछूआना (स्वर्ग.)
5. ललछुआनओमी (स्वर्ग.)
6. छूआनकिमी (स्वर्ग.)
7. स्वयं खोलकूङी

तैंतीस वर्ष की उम्र में खोलकूङी ने 23 जनवरी 1960 को प्रथम असम रेजीमेंट (भारतीय सेना) में कार्यरत एवं हॉकी खिलाड़ी बुआलखूमा से विवाह किया। विवाह के चालीसवें वर्ष में 23 फरवरी 2004 को इनके पति का देहांत हुआ। इनके चार संतान, दो लड़के और दो लड़कियाँ हैं। जो इस प्रकार हैं – सबसे बड़ा लड़का के.थनपरा, बड़ी लड़की ललट्रनपुई, दूसरी लड़की रम्ह्ङ्आकलियानी और छोटे लड़के का नाम ज़ौथनसङा हैं। आज भी ज़ौथनसाङा सपरिवार मिशन वेङठ्लङ स्थित परिवार के पुश्तैनी घर में सपरिवार रह रहा हैं। 20 मार्च, 2015 को खोलकूङी की मृत्यु हुई।

खोलकूङी का व्यक्तित्व पर मिज़ो आलोचक प्रो॰ एल॰टी॰ खियाङते (**Prof. L.T.Khiangte**) ने इनके परिचयात्मक लेखन में ऐसे लिखा है- *"…ringtu ṭha tak, Pathiana innghat mi tak a ni a, khawhar hrehawm lutuk pawh nei lem lovin a thu leh hla thiamna lam chuan a hnem a ni chekang chu, kum 80 a tlin thlengin a kut a la chawlhtir lo. Lehkha a chhiarin a la ziak reng a, chu chu atan chuan khawhar hnemtu ṭha tak a ni."*[2]

चतुर्दिक, साहित्यिक गुणों से सम्पन्न खोलकूङी का व्यक्तिगत जीवन संघर्ष से पूर्ण रहा है। माता-पिता ही नहीं, बल्कि भाई-बहन तथा

पति की मृत्यु ने इनके जीवन को झक-जोड़ कर रख दिया था। फिर भी इनकी जगह कोई दूसरा होता तो शायद अंदर से टूट जाती। परंतु ईश्वार पर अथाह विश्वास रखने वाली खोलकूङी ने अपने दुखों को सहने की शक्ति ईश्वार की संगति के चलते पा लिया था। तभी मिज़ो लेखक एल॰टी॰ खियाङ्ते (**Prof. L.T.Khiangte**) ने इनके बारे बेझिझक लिखा है कि वह बहुत ही विश्वासी, ईश्वार पर पूर्ण रूप से आश्रित होने वाली थी। अतः अपनों से बिछुड़ने के गम को उन्होंने कभी अपने ऊपर हावी होने नहीं दिया। अस्सी वर्ष की होने तक भी उन्होंने अपने हाथ को रुकने नहीं दिया। लिखना और पढ़ना उनके लिए एक साधन बन गया था और यहीं आदत अकेलेपन में भी उन्हें आशावाशित करने का अमूल्य साधन बन गया था।

शिक्षा एवं व्यवसाय:

इनकी शिक्षा केवल छठवीं कक्षा तक रहीं । गरीबी के कारण यह छठवीं के बाद आगे कि शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकती थीं। परंतु इनके समकालीन सहपाठियों की माने तो मात्र छठवीं तक ही पढ़ने के बाद भी इनकी सोच और जीवन के प्रति इनके विचार को बड़े-बड़े विद्वानों और शिक्षित महानुभवों के विचारों से किसी भी दृष्टि से कम नहीं माना जा सकता है। सन् 1941 में जब प्रथम लुशाई कंपनी की स्थापना की गई थी तब इसके अधीन भारत स्काउट एण्ड गाइड में यह भर्ती हो गई । इनका उद्देश्य किसी तरह लोगों की सेवा करना ही था । वह स्काउट एण्ड गाइड के यूनिफ़ोर्म पहनकर फूला नहीं समाती थी । इनकी इमानदारी और संघर्षपूर्ण व्यक्तित्व को सभी कायल थे। अपने स्काउट एण्ड गाइड के वर्दी से इन्हे इतना लगाव था की जब यह अस्सी साल की थी तब भी वर्दी पहनती थी और एसीस्टेंट स्टेट कमिशनर के पद पर बनी रही। इन्होंने तत्कालीन मिज़ो समाज में विशेषकर छात्र-छात्राओं को भारत स्काउट एण्ड गाइड की शिक्षा लेने तथा निस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा करने के लिए प्रोतसहित किया। वे इसे ही अपना प्रथम कर्तव्य मानती थी। परिणामस्वरूप मिज़ो जनजतियों विशेषकर किशोर और किशोरियों में दूसरों की निस्वार्थ भाव से सेवा करने की मानसिकता का विकास होने लगा। दूरदराज के गाँवों में भी भारत स्काउट एण्ड गाइड और खोलकूङी द्वारा किशोर-किशोरियों को दी जाने वाली शिक्षा यथा स्वार्थहीन समाज सेवा के बारे में बहुत सारी बाते फैलने लगी। परिणामस्वरूप दूरदराज के

लोग आइज़ोल आने लगे। लोगों का उद्देश्य इनकी शिक्षा एवं समाज सेवा के गतिविधियों को देखना और सीखना होता था।

व्यवसाय :

कहा जा चुका है की खोलकूङी केवल छठवीं तक ही पढ़ी थी। अत: नौकरी पाने या करने को लेकर वह बहुत आस्वास्त नहीं थी। इसलिए द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945) के दौरान खोलकूङी **Women Auxiliary Corp** में भरती हो गई। सन् 1944 में तत्कालीन वायु सेना में क्लार्क की नौकरी करने लगी। उस समय ऐसा नौकरी में लड़कियों की भर्ती होना दुर्लभ थे। "*Eizawnna lamah chuan khawvel Indopui pahnihna (1939-1945) lai khan Women Auxiliary Corp-ah a ṭang ta tlat mai a. Kum1944 Airforce Clerk-ah a lut a ni, khatih lai hun phei kha chuan mi tam takin hmeichhe hna turah an ngai lo hle.*"[3] बाद में इसी नौकरी के चलते उन्हें कलकत्ता में रहना पड़ा। वह बड़ी अच्छी अंग्रेजी बोल लेती थी इसलिए उन्हे कलकत्ता में कोई विशेष परिशानी का सामना करना नहीं पड़ा।

वायु सेना में उनकी नौकरी केवल विश्व युद्ध के अंतराल तक के लिए ही था। युद्ध के समाप्त होते ही उनकी नौकरी को भी समाप्त माना गया। यहाँ तक की पेंशन या किसी अन्य आर्थिक स्त्रोत का भी कोई प्रावधान नहीं था। इस तरह दूसरे विश्व युद्ध के समाप्त होने के बाद सन् 1947 में खोलकूङी क्लार्क की नौकरी छोड़कर आइज़ोल आ गई। करीब-करीब बारह साल तक परिवार को गरीबी से निकालने के लिए संघर्ष करती रही। इस तरह सालों में उन्हें मिज़ो समाज एवं इसकी विभिन्न पहलुओं को करीब से देखने और जानने का मौका मिला। इसके बाद सं 1958 में उनकी इच्छा **P.W.D.** विभाग में क्लार्क की नौकरी करने को हुई। सौभाग्यवश बिना किसी परिशनी के उन्हे नौकरी मिल गई। वे इस पद पर रिटायर्ड होने तक काम करती रही। वे 30 सितंबर 1991 को रिटायर्ड हुई। अब खोलकूङी आज़ाद थी, वे अपनी अंतरात्मा की आवाज को मूर्त रूप देने के लिए स्वयं को शारीरिक एवं मानसिक रूप में तैयार करने लगी। जीवन के उतार-चढ़ाव के प्रति अनुभावों की उनमे कोई कमी न थी। आवश्यकता थी तो बस उन्हे साहित्य के विभिन्न रूपों में ढालने की। अतः इस कार्य के लिए अंदर ही

अंदर वे स्वयं को तैयार करने लगी। इस प्रकार वे पूर्ण रूप से साहित्य के क्षेत्र में आ गई।

पुरस्कार एवं सम्मान :

सन् 1987 को इन्हें पद्मा श्री (साहित्य) के लिए भारत सरकार द्वारा मनोनीत किया गया, उस समय वे साठ साल की हो चुकी थी। खोलकूङी के लिए यह एस क्षण था जिसकी इच्छा एवं कल्पना करने की भी उन्होने कभी हिम्मत ही नहीं किया था। फिर भी सं 1987, 28 मार्च शनिवार के दिन भारत की राजधानी दिल्ली में उन्हें महमहिम राष्ट्रपति के कर कमलों से पद्मा श्री की उपाधि से सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ। भारत सरकार ने इनके प्रशस्ति पत्र पर इस प्रकार इनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला:

"Citation

Smt. Khawlkungi is a popular authoress in the Mizo language and also works in the State P.W.D. which she joined in 1958.

Smt. Khawlkungi was educated in the Welsh Mission Girl's School, Aizawl in the early1940s. She took to writing very early and has by now, written over thirty books, twenty of which she has dramatized; these have been staged very successfully. One of her books "Zawlpala Thlan Tlangah" was adjudged as the best in a literary competition held in Mizoram and was also a textbook prescribed for the B.A.classes. Another of her works "Monu Sual" was awarded the top honours in a drama competition. Her creations are a reflection of her deep understanding of, and concern for the traditions and the life of the Mizo people,

their social problems, specially of the Mizo women and children. Her simple style and sensitive interpretation of her themes compel the reader to think about the human problems she projects. (p.53 Padma Awards-1987 Investiture Ceremony-Booklet)"[4]

इसके अतिरिक्त, "1991 में **Distinguished in Letters Awards"**[5], 1998 में **"Special Service Star Medal (BS &Guide),** 1998 में **Academy Award (by Mizo Academy of Letters)"**[6] आदि से खोलकूङी को सम्मानित किया गया था।

ख) **खोलकूङी का कृतित्व**:

खोलकूङी ने उन्नीस वर्ष की होते होते अपने विचार एवं अनुभवो को कलमबद्ध करना आरंभ किया था। इनकी रचनाओं को मुख्यतः दो भागों में बाँटकर देखा जा सकता है।

(1) मौलिक रचनाएँ

(2) अनूदित रचनाएँ

मौलिक रचनाएँ

"खोलकूङी ने करीब तीस से अधिक अंग्रेजी किताबों को मिज़ो भाषा में अनुवाद किया हैं"[7] जिसमें – **Sword of Fates (1952), Desiree (1968), Heidi (1989)** आदि प्रमुख हैं। अनुवाद कार्य के साथ साथ यह मौलिक रूप में एकांकी एवं नटकों की ओर भी समानान्तर रूप में कुछ न कुछ कार्य करती रहती थी। जिनमें 1972 में प्रकाशित इनकी एकांकी **'Hmuh theih ka va duh em!'** (काश में देख पाती), 1983 **'Monu Sual** (बुरी बहू),1985 **'Sikul Hmasawnna'** (विद्यालय के विकास हेतु) आदि रचनाएँ प्रसिद्ध हैं।

हालांकि 1970 से ही खोलकूङी ने एकांकी तथा नाटक लेखन आरंभ किया था फिर भी 1981 में लिखी इनके ' **Zawlpala Thlan Tlang'** (जोलपला के कब्र के पहाड़) नाटक से इन्हें बड़ी पहचान मिली। इस नाटक के बारे में दो बड़ी बातें कही जाती रही हैं – लेखिका ने पहले इसे नाटक के रूप में प्रस्तुत किया था। परंतु आगे जा कर सन् 1983 में इसमे अमूल चूल फेर बदलकर इसे उपन्यास का रूप दिया गया। अतः उनकी इस रचना के बारे में कहा जाता है कि पहले इसने नाटक के रूप में लोगों को अपने ओर आकर्षित किया फिर दो वर्ष बाद उपन्यास का रूप धराण कर लोगों के मन मस्तिष्क में अपनी अमित छाप छोड़ने में सफल हुआ। आगे जाकर जब इस उपन्यास का अनुवाद हिन्दी में किया गया तो इसके मूल शीर्षक **'Zawlpala Thlan Tlang'** को बदलकर '**मलसॉमा**' रखा गया। हालांकि, उपन्यास का मुख्य चरित्र के रूप में मलसॉमा के चरित्र को लिया जा सकता है। फिर भी अनुवादक ने उपन्यास के मूल शीर्षक को बदलकर इसके साथ कितना न्याय किया है? इस प्रश्न का सही उत्तर तो अनुवादक ही दे सकेंगे।

गहनता पूर्वक अध्यायन मनन करने से एक बात स्पष्ट हो जाती हैं कि खोलकूङी की सम्पूर्ण रचनाओं का परिचय तथा उनके विश्लेषण के लिए विशेषकर दो अलग दृष्टिकोण यथा धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता होगी। क्योंकि उनके व्यक्तित्व में बचपन से ही चर्च और ईसाई धर्म की शिक्षाओं का बहुत ही गहरा प्रभाव देखने को मिलता हैं। '**मलसॉमा**' उपन्यास के मूल चरित्रों में भी इनके धार्मिक प्रवृत्ति तथा मनोस्थिति के कई रूप दिखाई देती है। अतः इनके कृतित्व एवं समग्र रचनाओं का परिचय देने के लिए उनका विश्लेषण करने के लिए एक विशेष दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

खोलकूङी ने अपनी एकांकी व नाटक रचनाओं के बारे में कुछ इस तरह अपने अनुभावों के बारे में कहा हैं- " *Lemchan thawnthu ka ziah dawn chuan –*

1. *Ka mitthlain lemchanna hmun tur ka ngaihtuah hmasa phawta, lemchan thawnthu ka hman tur nen a inmil dan tur ka ruahman hmasa ṭhin.*

2. *Lemchan thawnthu ka ziah ah chuan a changtu turte ka ngaihtuh leh a, a tlêm thei ang ber chan theih dan ka ngaihtuah leh a.*
3. *Ṭawngkam sei lutuk hman hi lemchan atan chuan ka hmang ngailo. Thinrim ṭawng emaw, lawm leh hlima ṭawng danah ṭawngkam hman hi ka ngai pawimawh a. Radio-a chan turah phei chuan ṭawngkam hman dan hian awmzia a neih bik avangin ka hmang uluk hle ṭhin a ni.*
4. *Lemchan thawnthu a an hunlaia an inchei dan tur ka ngai pawimawh hle bawk. Puanzar khar zing lutuk hi mit a ti kham ka ti a, a tamlo thei ang bera siam ka tum ṭhin a ni.'*[8]

प्रस्तुत कथन का हिन्दी अनुवाद –

1. नाटककों से संबन्धित अपनी रचनाओं के बारे में कहती है कि सबसे पहले में नाटक की पृष्ठभूमि को अपने दिमाग में तैयार करती हूँ। फिर कोशिश करती हूँ कि नाटक की पृष्ठभूमि और पात्रों की चारित्रिक विशेष्ता के बीच कितना और कैसी तारतम्यता बन सकती है।
2. अपने नाटकों में कम से कम पात्र या चरित्र का निर्माण करने के पक्ष में हूँ।
3. संवाद की दृष्टि से बहुत लंबी संवाद के पक्ष में नहीं हूँ। विशेषकर रेडियों मंचन के लिए तो छोटे-छोटे संवादों को मेरी सहमति रहती है।
4. नाटककों में किस काल विशेष को विषय बनाया गया है यह मेरे लिए बहुत ही अहम होता है। क्योंकि उस काल विशेष के आधार पर ही पात्रों की वेश-भूषा और अन्य वस्तुओं का भी चयन करना आवश्यक होता है।

अपनी कहानियों के बारे में भी इस प्रकार दौड़ाती हैं-

"*Thawnthu ka ziak dan leh ka ṭhen dan hrang hrangte:-*

1. ***Naupang thawnthu**:-*
   Naupang thawnthu ka ziak dawn chuan thawnthu tawi te te ni se a ṭha in ka hria. Naupang thawnthu ka ziak chuan an ṭawng hman turah naupang ṭawng hman tur bik ka hmang hram hram a, an kal duhna tur te, an thil hriat duhzawng tur te, an tel ve châkna turte ka ngaihtuah ṭhin…"

2. ***Nula leh Tlangval thawnthu***:-

A bik takin hmeichhe dinhmun hi ka vei zual a. Nula tan hmingchhiatna hi ka vei zual a. Kan tlakna a sang vang vang hle tawh ṭhin a. Chuvangin, an nulat thianghlimna an vawn ṭhat theih nan thawnthu hi ka phuah ṭhin a. Tlangval tan pawh hmeichhe nikhua lo tak laka an inven nan pawh a lo ṭul ve tho mai…"

3. ***Nupa Chungchang***:-

…nun dan kaihhruai nan leh khawsak dan ka hmuh aṭangin nupa nun dan kaihhruai nan leh an nunn thlir let nan thawnthu hi ka phuah ṭhin a ni."[9]

अपनी कहानियों के बारे में कहती है कि, "बच्चों की कहानी, प्रेम कहानी (युवा-युवति) और पति-पत्नी से संबन्धित कहानियों को लिखने से पहले मैं इस प्रकार पृष्ठभूमि, शब्द और संवादों का चयन करती हूँ –

1. बच्चों की कहानी:-

बच्चों की कहानी बहुत लंबी नहीं होनी चाहिएँ। सरल और बोलचाल में प्रयोग की जाने वाले शब्दों का चयन करना आवश्यक मानती हूँ। इस के साथ ही छोटे-छोटे वाक्यों या यूँ कहें सरल से सरलतम वाक्यों का चयन करती हूँ।

2. प्रेम कहानी (युवा-युवति):-

प्रेम कहानी के पीछे जिन पात्रों की कल्पना की जाती है उनका संबंध मानव जीवन के उस काल विशेष से होता है जिसे हम जीवन का सबसे कीमती और महत्वपूर्ण काल मानते है। अतः एसी कहानियों में-

i) कहानी की पृष्ठभूमि

ii) नायक-नायिका के चरित्र के विशेषता

iii) भाषा प्रयोग और वाद-संवाद की सीमा आदि का भरसक खयाल रखने का प्रयास करती हूँ। क्योंकि यह काल जहाँ परिवार का बीजा-रोपण करने का समय होता है। अतः कोशिश करती हूँ कि कहानी से युवामन को अच्छी शिक्षा मिले।

3. पति-पत्नी से संबन्धित:-

यह ऐसा विषय है जिसकी सफलता एक अच्छे परिवार कि न्यू होती है और असफलता जमी-जमाई परिवार को तोड़ने का साधन।"

इनके द्वारा कुछ अंग्रेजी पुस्तकों की अनुवाद कार्य को किसी भी साहित्य के अनूदित समस्य तथा अनुवाद की प्रक्रित्ति के आधार पर विश्लेषण करने का प्रयास समीचीन ही होगा।

खोलकूङी की रचनाओं का प्रकृत्ति पूर्णतः विश्लेषण करने से पहले उनके मौलिक तथा अनुवाद में आने वाली रचनाओं के शीर्षक एवं प्रकाशन काल को उद्धृत करना समीचीन होगा।

क) **मौलिक रचनाएँ** (एकांकि एवं नाटक)

1) "Pangpar Bawm **(गुलदस्ता) – 1972**
2) Hmuh theih ka va duh em **(काश में देख पाती) -1972**
3) Krismas taktak **(असली क्रिसमस) – 1974**
4) RIP Thiala **(स्वर्गीय ठियाला) – 1976**
5) Josefa **(यूशेफ) – 1977**
6) Sikul Hmasawnna **(विद्यालय की विकास के लिए) – 1978**
7) Vur Vari **(सफ़ेद बर्फ़ीनी) – 1978**
8) Rammawi kalkawng **(सुंदर देश की पगडंडी) -1978**
9) Ngaihdamna Luipui **(क्षमा की नदी या क्षमा का सागर) – 1978**
10) Eden Huan **(एडेन का बगीचा) – 1979**
11) Phuba **(बदला) – 1979**
12) Monu Sual (**बुरी बहू) –** 1982
13) Kumhlui leh Kumthar **(पुराना और नया साल) – 1982**
14) A va pawi tak em! (**ओह! क्या ही बुरा हुआ) – 1982**
15) Thangthar Nun **(आधुनिक जीवन)** – 1982
16) Genevive – **(बाइबुल में उल्लेखित स्त्री पत्र**) - 1983

17) Jezebeli (जेजेबेली: बाइबुल में उल्लेखित स्त्री पत्र) – 1983

18) Nipui Vanglai Tawnmang (ग्रीष्म काल का सपना) – 1984

19) Khawchhak Mifing (पूर्व दिशा के विद्वान) – 1984

20) Sual man thihna (पाप का फल मृत्यु) – 1989

21) Dan Rangkachak (सुनहरा नियम)- 1990

22) Man leh mual (शादी का रास्म-रिवाज) – 1991

23) Chhungkaw Thubuai (पारिवारिक झगड़ा) – 1992

24) Drugs hlauhawmzia (द्रव्य पदार्थ की मयानकता) – 1993

25) Buhfaitham (दान पूर्ण चावल)– 1995

26) Krismas Thilpek (बड़े दिन का उपहार) – 1996

27) Rawngbawlna entawntlak (अनुसाहर्निया भक्तिकार्य)

28) In hrelo em a ni (नितांत अंजान हो)

29) Mi chhaw paruk (छह मूर्ख)

30) Hun Hlutzia (समय का मूल्य)

31) Hmeichhe chan chhiatzia (स्त्री का अभागापन)

32) Nunkawng dik (जीवन का सही रास्ता)

33) Kristian hma leh Kristian hnu (पहले का इसाई और बाद का इसाई)

34) Beram vengtu naupang leh uite (बालक चरवाहा और कुत्ता)

35) Krismas Tree (क्रिस्मास का पेड़)

36) Khawchhak Mifing Artabana (उत्तरी विद्वान अर्ताबना)

37) Centenary Documentary Film" [10]

ख) <u>"मौलिक कहानियाँ एवं उपन्यास :</u>

1) Zawlpala Thlan Tlang (जोलपला के कब्र की पहाड़ी) - 1977

2) Sangi Rinawmna (साङ्गी की विश्वसनीयता) – 1978

3) Thawnthu Pahnih (दो कहानियाँ) -1978

4) A tlai lutuk ta (देर हो गई) – 1979

5) Thawnthu min hrilh rawh (मुझे कहानी सुनाओ) – 1979

6) Fahrah nun (अनाथ का जीवन) -1979

7) Krista Thihni (युशु की पावन तिथि) – 1980

8) Thawnthu Pathum (तीन कहानियाँ) – 1981

9) Thawnthu Panga (पाँच कहानियाँ) – 1982

10) Pasal duhthlan (मन चाहा पति) – 1982

11) Thawnthu tawi (लाघु कथा) – 1983

12) Kan kutchaklo puihnan (हमारे हाथ कमज़ोरों की सहायता के लिए) – 1984

13) Thawnthu pariat (आठ कहानियाँ) – 1984

14) Hmanlai hian maw (बहुत समय पहले) – 1987

15) Thawnthu pasarih (सात कहानियाँ) – 1988

16) Thawnthu za (सौ कहानियाँ) – 1989

17) Hmanlai mithianghlimte (प्राचीन काल के पवित्र जन) – 1990

18) Kan chhehvel ram (हमारे आसपास की भूमि) – 1992

19) Duhtak Sangpuii (प्रिय साङ्पुई) – 1998

20) Thawnthu Sawmsarih (सत्तर कहानियाँ) – 1998

21) Thawnthu pasarih (सात कहानियाँ) – 2001

22) Chantawka Khuarel (भाग्य परिधि) – 2003

23) Lemchan thawnthu (एकाँकी)

24) Hmangaihna khua a var hmain **(प्रेम का भोर होने से पहले)**

25) Khawthlang thli leh khawchhak thli **(West wind and East wind)(उत्तरी एवं पश्चिमी हवा) –** 2007" [11]

नोट: अंग्रेजी के कहानी के तर्ज पर लिखी मिज़ो कहानियाँ।

अनूदित साहित्य / कहानियाँ :

प्रारंभ में खोलकूङी की अंग्रेजी अच्छी नहीं थी। परंतु कलकत्ता प्रवासकाल के दौरान उन्होंने अंग्रेजी के साहित्य का गहन अध्ययन भी किया। तभी इन्होंने अपने समय के परिचित कई अंग्रेजी कहानियों का मिज़ो भाषा में सफलता पूर्वक अनुवाद किया हैं। दूसरी ओर मिज़ो जन-जातियों के लिए इनकी कथा साहित्य के माध्यम से अंग्रेजों की वास्तविकता को समझने, जानने और उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मूल्यों आदि को समझने में बहुत ही अहम भूमिका इनकी अनुवादिक रचनाओं ने निभाया हैं। इसी प्रकार धार्मिक मान्यता की दृष्टि से भी अंग्रेजी सभ्यता के विभिन्न पहल्लुओं से मिज़ो जन जातियों को परिचित कराने का काम भी इनके अनुवाद कार्य ने बखूबी किया हैं।

उन दिनों मिज़ोरम में प्रेस (छापा खाना) के अभाव के कारण इनकी रचनाओं अथवा अनुवाद कार्यों को लोगों तक पहुँचाने के लिए साइक्लोस्टायल (cyclostyle) का प्रयोग किया जाता था। यह अपने आप में बड़ा कठिन कार्य होता था। यहीं कारण है कि इनकी कई रचनाओं का सहीं संवहन नहीं किया जा सकता था।

<u>उनके कुछ अनूदित कहानियाँ इस प्रकार हैं:</u>

1. "Rim of the Desert (1946) - (Bo)

2. Sword of Fate (1952) - (Cy)

3. Darjeeling Disaster (1970) - (Cy)
4. Oliver Twist (1983) - (Cy)
5. Rebecca Vol. I & III (1971) - (Cy)
6. The Other Side of Midnight - (Cy)
7. Memories of Midnight - (Cy)
8. Mad is the Heart - (Cy)
9. No Heart is Free - (Cy)
10. Elusive Earl - (Cy)
11. The Dream and the Glory - (Cy)
12. Boundary Line - (Cy)
13. Great Heart - (Cy)
14. No Trespassing - (Cy)
15. The Prince For Sale - (Cy)
16. Tempted to Love - (Cy)
17. The Smuggled heart - (Cy)
18. Dancing on a Rainbow - (Cy)
19. Island of Enchantment - (Cy)
20. Golden Condola - (Cy)

21. Heart of Paris - (Cy)

22. Desiree - (Cy)

23. Gold for the Gay Masters - (Cy)

24. The Daring Deception - (Cy) (Bo)

25. Between Pride and Passion - (Cy)

26. The Bored Bridegroom - (Cy)

27. Romance of Two Worlds - (Cy)

28. The Stormy Affairs - (Cy)

29. Forbidden Flame - (Cy)

30. Beware of Satan - (Cy)

31. The Flame & The Frost Vol. I & II - (Cy)

32. The Daughter of the Condemned - (P)

33. The Prince and the Pauper - (P)

34. Secret Power - (P)

35. D.L. Moody - (P)

36. Stranger than Fiction - (Cy)

37. Honeymoon - (Cy)

38. The Sins of Herod - (P)" [12]

(नोट: 'Cy'= Cyclostyle, 'P' = Press, 'Bo' = Lost)

मात्र छठवीं तक पढ़ी खोलकूङी द्वारा मिज़ो साहित्य के प्रति किए योगदान को किसी भी दृष्टि से कम कर नहीं देखा जा सकता है। यदि, उनके समय में आज की तरह प्रकाशन की व्यवस्था होती तो उनके मौलिक तथा अनूदित साहित्य की संख्या शायद काफी अधिक हो सकती थी।

अपने जीवन काल में खोलकूङी विभिन्न संस्थाओं से जुड़ी रही, परिणामस्वरूप उन्हें अनेकानेक संस्थाओं का सदस्य होने तथा संचालन करने का भी सौभाग्य प्राप्त होता गया। जिनमें निम्नलिखित मुख्य हैं:

1) **"Mission Vengthlang Pastor Bial Kohhran Hmeichhia – ah**

(a) Committee Member (1981-2004)

(b) Assistant Secretary (1982-1985)

(*हिन्दी में* **- मिशन कॉलोनी के पादरी विशेष के निश्चित क्षेत्र के अंतर्गत –**

क) कमिटी सदस्य – 1981-2004

ख) सहायक सचिव – 1982-1985)

2) "Mission Vengthlang Presbyterian Kohhran Hmeichhia-ah

(a) Committee Member (1978-1980)

(b) Secretary (1981-1991)

(c) Vice – Chairman(1992)

(d) Financial Secretary(1993-2004)

(e) Committee Member (2005-2015)

(*हिन्दी में* **-मिशन कॉलोनी प्रेस्बीटरियन कलसी (चर्च) के महिला वर्ग में**:

क) कमिटी सदस्य – 1978-1980

ख) सचिव – 1981-1991

ग) उपाध्यक्ष – 1992

घ) वित्तय सचिव – 1993-2004

ङ) कमिटी सदस्य – 2005-2015)

3) Mizo Hmeichhe Insuihkhawm Pawl

(a) Executive Com. Member (1987-2015)

(b) Runlum Editor/ Asso. Editor (1995 -2015)

(*हिन्दी में*- **मिज़ो महिला संघ (मुख्यालय**)

क) उच्च स्तरीय कमिटी का सदस्य – 1987-2015

ख) 'रून लूम' (**Runlum)** पत्रिका का सहायक प्रकाशक – 1995 - 2015)

4) Mizo Writers Association (MWA)

(a) Financial Secretary (1983-2005)

(b) Senior Adviser (2006-2015)

(*हिन्दी में*- **मिज़ो लेखक संघ**:

क) वित्तय सचिव - 1983-2005

ख) वरिष्ठ सलाहकार – 2006-2015)

5) Bharat Scouts & Guides

(a) Member (1941-1998)

(b) Asst. State Commissioner (1998 -2015)

(*हिन्दी में*- **भारत स्काउट एण्ड गाइड**

क) सदस्य – 1941-1998

ख) सहायक राज्य कमीशनर – 1998 – 2015…"[13]

खोलकूङी का पारिवारिक जीवन, शिक्षा, व्यवसाय तथा उनके अनूदित साहित्य एवं मौलिक साहित्य में दृष्टिगोचर रचनाओं की पृष्ठभूमि, पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ और रचनाकाल में परिलक्षित विभिन्न परिवेषों का गहन विश्लेषण करने पर खोलकूङी के व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले मुख्यतः चार बड़े घटकों को देखकर उनका उल्लेख किया जा सकता है यथा –

1) **आदिवासी जीवन पद्धति एवं सोच**
2) **व्यवसाय के क्षेत्र की विभिन्नता एवं विस्तृत्ता**
3) **धार्मिक मान्यता (ईसाई धर्म की शिक्षा)**
4) **अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य के प्रति रुचि**

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर खोलकूङी के व्यक्तित्व का अध्ययन करने पर कुछ सत्य स्वतः ही उजागर होती है। मसलन – अपनी जातीय एवं सामाजिक मूल्यों को आत्मसात करते हुए भी ईसाई धर्म की सभी शिक्षाओं एवं आदेशों के प्रति उनकी गहरी आस्था थी। जब की आदिवासी जीवन की मान्यताओं और ईसाई धर्म की शिक्षा एवं मान्यताओं में बहुत अंतर होता है। इसलिए इन दो बातें उनके व्यक्तित्व को बहुत ही गहराई से प्रभावित करती दिखाई देती हैं।

एक तरह से कहा जा सकता है कि उन के अंदर आदिवासी जीवन शैली की उन्मुक्त भाव, आदि को धर्म की शिक्षा के कारण जाने अनजाने जातीय परंपरा एवं सौहादपूर्ण सामाजिक नियम और कायदे को त्याग ने की विडम्बना आदि सच्चाई को उनके व्यक्तित्व का त्यागपूर्ण बीएचवी से ओतप्रोत पक्ष माना जा सकता है।

अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन विशेषकर छोटी-छोटी कहानियाँ रवां नाटक आदि जो जाने – अनजाने इनकी रचनाओं में देखने को मिल जाती है का प्रभवा उनकी लेखनी में भी दिखाई देती है।

दूसरी ओर , दुर्भाग्यवश खोलकूङी की ऐसी कई रचनाएँ है जिन्हें हम मिज़ो जातिओं ने भुला दिया है। विशेषकर उनकी बच्चों के लिए

लिखी कई कहानियाँ जिनमें 'प्राचीन काल के पवित्र जन', 'हमारे आसपास की भूमि', 'सो कहानियाँ', 'बच्चों की सात कहानियाँ', तथा 'राजकुमार और बिखारी' आदि प्रमुख है।

"A sulhnu zinga duhawm tak chu, Mizoten kan hlamchhiah fo leh kan tlakchham lai tak 'Naupang pual' bik thawnthu a ziak lhin hi a ni a. Chung zinga lar zualte chu, 'Hmanlai mi thanghlim chanchin' te,'Kan chhehvel hnamte thawnthu' te, 'Thawnthu za'te, 'Naupang thawnthu pasarih' te, 'Lal fapa leh kutdawh' leh a dangte a ni." [14]

संक्षिप्त में कहें तो उनकी रचनाओं में परिलक्षित विभिन्न पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं में उनकी अपनी आंतरिक भावनाओं एवं विचारों को कुछ सीमा तक देखा और समझा जा सकता है।

उपर्युक्त कथन की पुष्टि उन्हीं के शब्दों में पढ़ने सुनने को मिल जाता है एक जगह उन्होने अपनी रचनाओं के संदर्भ में कहा है कि कलम उठाने से पहले अमूर्त विचारों में प्रत्येक पात्र एवं उनके चरित्रों को स्वयं अनुभव करती हूँ फिर उन पात्र को स्वयं जीने की प्रयास करती हूँ। तब कही जाकर उन अनुभावों को कहानी, एकांकी या उपन्यास के माध्यम से कलमबद्ध करती हूँ। आगे वे लिखती है कि मेरा साहित्य अछूण्ण और परिपक्व है, ऐसा दावा में कदापि नहीं करती न ही करने की मुझमें कोई है। परंतु यह भी सच है कि अपने अंदर दिन-दिन उभरती भावना, संवेदना तथा जीवन के प्रति के अनुभावों को विभिन्न पात्रों के माध्यम से उद्घोषित करने का तुच्छ प्रयास भर करती रहीं हूँ। शायद साहित्य के क्षेत्र में मेरे जीवन का उद्देश्य भी यहीं रहा हो?

उनकी उपन्यास 'जोलपला ठ्लान ल्लाङ' जिसे पहले अंग्रेजी अनुवाद किया गया जिसे फिर बाद में हिंदी में अनुवाद किया गया है, का मूल भाव एक अनाथ ईसाई युवती और एक सुलझे हुए और ईमानदार

ईसाई युवक के बीच घटित प्रेम कथा है। हालांकि उपन्यास का प्रथम रूप नाटक के रूप में था, परन्तु मंचन के दो वर्ष बाद अर्थात 1983 में इसे पुनः अवलोकित कर उपन्यास का रूप दिया गया।

अपनी इस रचना को लेकर लेखिका ने अपनी जवानी के दिनों की भावनाओं एवं प्रेम की पवित्रता के प्रति अपने अनुभूतियों को उपन्यास के मुख्य चरित्र मलसोमा और वानललरेमी के माध्यम से उजागर किया है। परिस्थिति के चलते जब दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित होने लगते। दोनों के मन में ईश्वर को याद कर बिना पाप या यूँ कहें ' जवानी की अंधिचल' जैसी कोई वासना पूर्ण भावना ही नहीं था। वरन धार्मिक शिक्षा के अनुसार पवित्र एवं निश्छल मनोभाव से दोनों अपने प्रेम कथा को अंजाम देते हैं।

इन पात्रों की स्वच्छ विचार एवं सच्चे प्रेम के प्रति निश्छल एवं समर्पित भावों का यदि विश्लेषण करे तो एक बात स्वतः ही मन में उभरने लगती है। जिसका कभी परोक्ष तो कभी अप्रत्याक्षित रूप में दर्शनकिया जा सकता है।

स्वयं लेखिका ने जीवन के तैतिस वर्ष अकेले रहने के बाद अपना घर बसाया था। और इतने वर्षों तक कलकत्ता तथा अन्य कई जगहों पर व्यवसाय या जीविकोपार्जन के चलते रहने के बाद भी उनका चरित्र बेदाग और पाक-साफ था। लेखिका अपने इन्हीं गुणों को अपनी रचनाओं में किसी पात्र के माध्यम से उजागर करती रही हैं।

उपन्यास की नायिका वनललरेमी, छोटे से गाँव में जन्मी ईसाई धर्म के छत्र-छाया में पली बढ़ी गाँव की साधारण लड़की है। माता -पिता के निधन के बाद बुआ के घर रहने को मजबूर सरल और मित्त भाषी – रेमी ।

बुआ के शराबी पति- रौछीङा उसके प्रति अपनी जिम्मेदार न निभा सका। वह अपने मित्र शराबी ललमुआना के साथ रेमी की शादी करवाना चाहता था। उद्देश्य केवल इतना था कि इस बहाने उसे मन चाहा शराब मिलने में सुविधा रहेगी। और ललमुआना से उसे शादी के रश्म में बंदूक भी दिया जाएगा साथ ही कुछ रुपय पैसे का भी लेन-देन एक कारण था

बुआ की मजबूरी को रेमी अच्छी तरह जानती समझती थी। उसका एक दिन चुपके से सियाल्सूक गाँव में रहने वाले पादरी के घर जाना, परन्तु पादरी प्रचार-प्रसार के लिए अन्य गाँव गए हुए थे, सो, उनकी छोटी बहन की सलाह के अनुसार, रेमी का आइज़ोल पहुँचना, तद्पश्चात मिशनरी पि ज़ाई (Ms. Katie Hughes) (तथापि पि ज़ाई विशुद्ध अंग्रेज़ी महिला थी परन्तु स्थानीय लोग उन्हे पि ज़ाई के नाम से ही जानते और संबोधित करते है) के यहाँ सिलाई का काम सीखने के लिए पी जाई द्वारा अनुरोध को स्वीकारा जाना तथा छात्रावास में उन्हे रहने की सुविस्था मुहैया कराना आदि सब एसी घटना है, जो उपन्यास को गति देने में अहम भूमिका निभाते है।

उस समय के अनुसार धार्मिक प्रवृत्ति का एक पढ़ा – लिखा युवक से रेमी मुलाक़ात जो आगे जाकर पवित्र प्रेम कथा का मूलाधार होता है लेखिका की अन्तःस्थल के अतृत भावनाओं को उजागर करने का माध्यम बन जाता है।

उपन्यास का उपसंहार सभी पात्रों के अपने अलग-अलग चारित्रिक विशेषताओं को दर्शाने के साथ साथ मलसोमा और रेमी के पवित्र प्रेम को एक सुखद परिवार के परिधि में समाप्त कर लेखिका ने जीवन के विभिन्न उतार चढ़ाव, के प्रति पवित्र प्रेम की जीत को जीवन के अमूल्य निधि के रूप में दर्शाया है।

खोलकूङी की एकांकियों में A va pawi em! (काश,ऐसा न होता!) अपने इस एकांकी के बारे में लेखिका का कहना है की एकांकी का विषय और चरित्र एवं इसका सम्पूर्ण उद्देश्य 'नकारात्मक जीवन का अंत बुरा होता है किन्तु सकारात्मक जीवन का फल मीठा'। *"... sual chu sual a ni a, chhiatnain a tawp a, ṭhatna chu a ṭhat avangin rah ṭha takin a chhuah ṭhin..."*[15]

एकांकी का विषय दो अलग प्रवृत्ति के युवतियों के चारित्रिक भिन्नता पर आधारित है। उनमें से एक युवती, जीवन को उन्मुक्त तथा

स्वतन्त्रता पूर्वक जीना चाहती है। इतना ही नहीं वह खान-पान, वेश-भूषा आदि के आधुनिकरण के साथ-साथ जीवन को भरपूर जीने की लालसा रखने युवती है। दुर्भाग्यवश उसका अंत भी बड़ी क्रूरता तथा नाना प्रकार के बदनामियों के चलते होता है। दूसरे ओर दूसरी युवती वह अपनी चारित्रिक गुण तथा विश्वासनियता के चलते मित्रा मंडलियों में सब की चाहती बन जाती है। उसकी धार्मिक प्रवृत्ति पूर्ण विचारधारा एवं आचरण की शालीनता सब का मन जीत लेती है। अपने इन्हीं गुणों के कारण वह सहेलियों के बीच भी सबकी चाहती थी। दूसरी युवती को लेखिका के रूप में लिया जा सकता है।

तीस वर्ष पार करने के पश्चात उसका विवाह एक भारतिय सैनिक और अपने समय के मशयूर हॉकी खिलाड़ी बुआलखूमा से होता है। इस प्रकार अनेकानेक भावनाओं, कल्पनों के प्रति पूर्ण संवेदना रखने वाली लेखिका अपना घर बसा लेती है।

खोलकूङी की आदिकांश रचनाओं में उनके स्वतःअनुभवों, इच्छाओं, आकांक्षाओं आदि के साथ-साथ जीवन के प्रति उनकी आशापूर्ण एवं विकास का भाव स्वतः भी परिलक्षित है

तथापि, खोलकूङी की कहानी तथा एकाँकी के रूप में कई मौलिक रचनाएँ हैं। फिर भी उनकी मौलिक रचनाओं में 'Hmangaihna khua a var hmain' (प्रेम पूर्ण भोर होने से पहले) अपना अलग स्थान रखता है। कहानी के माध्यम से कहानीकार ने मिज़ो जनजातियों के जीवन की दो ऐसे पक्षों का उल्लेख किया है जो अतीत में मिज़ो समाज में अति महत्वपूर्ण माना जाता था।

प्रेम पूर्ण भोर होने से पहले कहानी का सार:

एक छोटे से गाँव में एक विद्धवा अपने पुत्र चलठ्याङा के साथ रहती थी। चलठ्याङा एक वीर ईमानदार और मित्तभाषी युवक था। वह अन्य युवकों की अपेक्षा शक्तिशाली और काफी अच्छा शिकारी था। इतना कुछ होते हुए भी तत्कालीन मिजो समाज की मान्यता के अनुसार वह स्वयं को किसी भी भरे-पूरे परिवार के युवकों के आगे हीन समझता था। उसके

हीनता का मुख्याकारण उन दिनों के सामाजिक व्यवस्था के चलते पितृविहीनों को अनाथ तथा तुच्छ मानने की प्रथा थी।

लेखिका ने चलठ्याङा को कहानी का मुख्य पात्र बनाकर तत्कालीन मिज़ो जन-जातियों की जीवन के प्रति यथा मृत्यु, आत्म, धर्म तथा सामाजिक मान्यताओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। कहानी में सामान्य परिवार की युवती चोङपुई को नारी पात्र के रूप में दिखाया गया है।

युवक चलठ्याङा और चोङपुई का एक दुसरी के प्रति आकर्षित होना, तद्पश्चात बिना किसी सामाजिक बंधन या रोक-ठोक के दीनों की शादी होना तत्कालिक मिज़ो समाज की एक बड़ी विशेषता को दर्शाता है, जैसे दहेज, जातीय उंच-नीच तथा अमीर और निर्धन की दृष्टि से पारिवारिक संबंध में कोई विशेष वास्ता या स्थान का न होना आदि।

दो संतानों की जन्म के बाद जब चोङपुई तीसरी संतान को जन्म देने की स्थिति में थी तो एक दिन चलठ्याङा सहित गाँव के कुछ शिकारी कुछ दिनों के लिए शिकार करने जंगल जाते है। उनके जाने के कुछ देर बाद ही चोङपुई का प्रशव समय आ जाता है। दर्द से उसका बुरा हाल हो जाता हैं। समय पर उचित सहायता न मिल पाने के कारण उनकी मृत्यु हो जाती है।

उसकी मृत्यु से अनजान चलठ्याङा एवं उसके मित्रगण शिकार में व्यस्त जब जंगल में थे तभी चलठ्याङा को स्त्री की आवाज सुनाई देती है। ध्यान से सुनने के बाद वह अपनी पत्नी की आवाज़ पहचान लेता है, उसकी पत्नी किसी अन्य मृतिका की आत्मा से कह रही थी की, 'हमारे मर्द शिकार करने गए है और में उनकी अनुपस्थिति में मृतलोकवासी हो गई हूँ। हमारे बच्चों को चूल्हे के ऊपर रखे सूखी मांस और अंडे के बारे में शायद पता न हो...' "*Kan pate ramchhuak an lo la haw si lo va, kei lah chu ka kal ta daih mai si a, kan fate khan, rappuichungsanga bellam chhunga ka artui dahkhawm leh sarep ka dah te kha an hre awm si lo va,*"[15]

चलठ्याङा अपनी पत्नी की आवाज़ पहचान लेता है। उसका मन बेचैनी से भर जाता है। जब वह गाँव लौटकर आता है तो बिना प्रभाव के पत्नी की मृत्यु और अपने लड़के और लड़की की दयनीय दशा देख वह बेबस हो जाता है।

जंगल में सुनी पत्नी की आवाज़ एवं कथन यथा सुखी मांस और अंडे की बात सही निकलती है। पत्नी की याद में घुट-घुटकर जीते हुए भी चलठ्याङा बच्चे अपने कर्तव्य का पालन करने में पीछे नहीं हटता। वर्षों बाद जब उसके दोनों बच्चे कुछ बड़े हो जाते हैं तो एक दिन वह शिकार करने रिह्दील (पुराने दिनों मिज़ो जनजातियों की मान्यता थी कि प्रत्येक मृत लोगों कि आत्मा रिह्दील में आवश्य आती और रहती है) के पास ह्रीङलङ ल्लाङ (Hringlang Tlang) की ओर देख रहा था तो उसे अपने पिता का मित्र श्री लियानथङा की आत्मा दिखाई थी।

"Aw ri bawk chuan, "Chala! Chawngpuii leh kan nu pawh min hmuak turin an lo thleng ve chiah a nih hi!" a rawn ti leh a …Chawngpuii aw chuan, "Kan fate an ngaihtuahawm lutuk! I lokal ve a la hun hleinem! Ṭha takin naupangte kha lo enkawl la, nupui rawn nei leh reng reng lo vang che aw. Kan fate'n nuhrawn an hrawn ka hlau teh a nia" a han ti a…"[16]

आत्मा उससे कहती है कि "देखो, मेरी पत्नी की आत्मा और तुम्हारी पत्नी चोङपुई कि आत्मा मेरी स्वागत करने आए हैं। " तभी चलठ्याङा को अपनी पत्नी कि आवाज़ सुनाई देती है। पत्नी की आत्मा कहती है कि, "अभी-भी हमारे बच्चे छोटे हैं, अतः तुम मेरे पास न आना, वापस चले जाओं। बिना दूसरी शादी किए बच्चों के बड़े होने तक उनका बड़ी अच्छी तरह देखभाल करना।" चलठ्याङा तुरंत लौट जाता है और बच्चों के पालन-पोषण में व्यस्त हो जाता है। वह आजीवन दूसरी शादी नहीं करता।

एक दिन गाँव में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए अंग्रेज़ मिशनरी आते हैं। तब तक चलठ्याङा के दोनों बच्चे भी शादी कर अपना-अपना घर बसा चुके थे। अंग्रेज़ मिशनरियों की सोहार्दपूर्ण धार्मिक शिक्षा को ग्रहण कर जब गाँव वाले ईसाई बनने लगे तो चलठ्याङा के दोनों बच्चे भी ईसाई बन

गए। उन्हें अपने पिता कि चिंता थी। परंतु उन के पिता का सोचना और कथनी तो अलग ही था।

चलठ्याङ ने अपने दोनों बच्चों से कहा कि, "यदि मैं धर्म परिवर्तन कर ईसाई बन जाऊँगा तो तुम्हारी माँ से नहीं मिल पाऊँगा क्योंकि ईसाई धर्म मित की आत्माओं से मिलने की बात न ही मानता है न ही स्वीकार करता हैं। " उसके विचार में उसकी पत्नी तो ईसाई नहीं बन पाती थी तो किसी भी दशा में उसकी और पत्नी की आत्मा का मिलन नहीं हो पाएँगा। और पत्नी आत्मा से वादा से किया था की मृत्यु के पश्चात दोनों की आत्मा आवश्य ही मिलेंगे। वह मरने से पहले वसीयत के रूप में अपने बच्चों से अपने इसी विश्वास की बात दोहराता है।

पिता की दयनीय मृत्यु के दुख को न सह पाने के कारण उसकी बेटी मुच्छित हो जाती है तभी उसका सासुर रौथङपुइआ अपने अनुभाव के आधार पीआर कहते है कि, "मृतिका की आत्मा का ह्रिङ लङ त्लाङ पहुँचने से पहेले यदि उसके राह में आने वाले ह्नआईकोन में उससे पहले पहुंचा जाए तो आत्मा को वापस बुलाया जा सकता है।" वह अपने मित्र ज़ोउखूमा को लेकर ह्नआईकोन की ओर दोड़ पड़ता है। इस प्रकार मृतिका की आत्मा को वे वापस ले आते हैं।

इस घटना के बाद उनके बच्चे इस बात को स्पष्ट रूप में समझने लगते है कि ईसा द्वारा दिए कुरबानी के एवज में पापियों के पाप का क्षमा होना तथा आत्मा का मोक्ष प्राप्त करना तथा इस सत्य से अनजान पहले परलोक सिधार चुके मृतकों कि आत्मा की स्थिति के अंतर को अच्छी तरह समझने लगे।

'प्रेमपूर्ण भोर होने से पहले' अर्थात ईसाई धर्म को अपनाने से पहले का समय जिसे आत्मा की मोक्ष मुक्ति के विषय में कुछ भी पता न करने को मोक्ष प्राप्त से पहले का समय कटा गया है। ईसा मसीह के द्वारा उद्धार किए जाने की सच्चाई की स्थिति को घटना एवं पात्रों के चरित्र के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष के रूप में निम्नलिखित तथ्यों को लिया जा सकता है-

1) कहानीकार का मिज़ो समाज के अतीत तथा उन दिनों कि सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताओं से अच्छी तरह परिचित थी।

2) समाज के दो तबके यथा उच वर्ग और निम्न वर्ग के कुछेक अंतरों के प्रति भी लेखिका अज्ञात नहीं है।

3) उन दिनों मिज़ो समाज की मुख्य सोंच और चिंता मृतकों की आत्माओं के प्रति यथा उनके रहने का स्थान एवं ढंग आदि को लेकर हुआ करता था।

4) प्रदेश में ईसाई धर्म का आगमन लोगों का धर्म परिवर्तन आदि धार्मिक विशेषताओं के बारे में भी लेखक ने पात्र तथा घटनाओं के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है।

5) आत्मीय संवेदना कि दृष्टि से देखे तो अपने मोक्ष कि अपेक्षा पत्नी के प्रति सच्चा प्रेम पर ज़ोर दिया गया है। शारीरिक रूप में ही नहीं आत्मिक रूप में भी मरने के बात पत्नी की आत्मा से मिलने की इच्छा को मोक्ष मुक्ति से अहम मानकर चलठ्याङा के माध्यम से कहानीकार ने सच्चे प्रेम की जीत को सर्वोपरि दिखाने का सफल प्रयास किया है।

इस प्रकार समय, परिस्थिति और तत्कालीन मिज़ो समाज की स्थिति के संदर्भ में कहानी की समीक्षा करे तो इसे सामान्य प्रेम प्रसंग से आरंभ होकर धार्मिक विश्वास के साथ साथ सांस्कृतिक मूल्यों के संक्रमण काल की रचना माना जा सकता है।

'Duhtak Sangpuii' (प्रिय साङपुई):

कहानीकार खोलकूङी की प्रसिद्ध कहानी 'Duhtak Sangpuii' (प्रिय साङपुई) मिज़ो समाज में नई सामाजिक मान्यताओं और पुराने सामाजिक मूल्यों के बीच के द्वंद्व तथा दिन दिन बदल रही जीवन शैली को कहानी की पृष्ठभूमि का आधार बनाया है। तथापि कहानी में कई चरित्र या यों कहें पात्र हैं, उनमें –

साङपुई और त्लुआङा को मुख्य चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इतिहास की दृष्टि से अस्सी का दशक मिज़ोरम और मिज़ो

जनजातियों के बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रगति और विकास की दृष्टि से देखे तो यह वह काल है जब मिज़ोरम में प्रथम बार वायुदूत हवाई जहाज का आगमन हुआ था।

दूसरी ओर विकास के विभिन्न क्षेत्रों में भविष्य के निर्माण को लेकर कई प्रकार की क्रिया-प्रतिक्रिया होने लगी थी। साथ ही उच्च शिक्षा के लिए भी प्रदेश से बाहर विध्यार्थियों का आना-जाना आरंभ होने लगा था।

स्पष्ट कहें तो प्रदेश की सम्पूर्ण जीवन शैली में आधुनिकरण का आग्रमण होने लगा था। स्पष्ट है कि समाज के विभिन्न पक्षों में दिन-ब-दिन होने वाली आमूल-चूल परिवर्तन का सबसे अधिक प्रभाव युवा जीवन शैली पर पड़ा था।

'प्रिय साङपुई' कहानी की पृष्ठभूमि ही नहीं वरण अलग-अलग मानसिकता वाले मिज़ो युवा-युवतियों के बीच घटी घटनाओं कि कहानीकार ने एक माला में पिरोने का प्रयास किया है।

मसलन साङपुई जो कहानी का प्रमुख स्त्री चरित्र है, अपने पिता की मृत्यु के बाद अपने परिवार के साथ मामा के यहाँ रहने आइज़ोल आती है। दसवीं पास करने के बाद मामा लललियाना आगे की पढ़ाई के लिए उसे दिल्ली भेजने की व्यवस्था करता है। लललियाना बीमारी के कारण कलकत्ता जाकर किसी अच्छे डॉक्टर से मिलने के तैयारी करता है। साथ ही साङपुई, जिसे पढ़ाई के लिए दिल्ली भेजना चाहता है, को साथ लेकर कलकत्ता तक जाता है। कलकत्ता में साङपुई की मुलाकात दो मिज़ो युवक त्लुआङा और वाला से होता है।

वे दोनों पहले से भी दिल्ली में पढ़ रहे थे। सो दूसरे दिन वे अपने साथ साङपुई को भी दिल्ली ले जाने के लिए कहते हैं। इस प्रकार दूसरे दिन साङपुई हाउड़ा रेल स्टेशन पहूँच जाती है परंतु त्लुआङा और वाला नहीं पहुँचते है।

दोनों युवक थङी नामक मिज़ो युवती जो वास्तव में नशीली पदार्थ का तस्करी करती है और कलकत्ता में पुलिस के चंगूल में फस जाती है, की सहायता करने के कारण समय पर स्टेशन नहीं पहुँच पाये थे।

दूसरी ओर जब साङ्पुई अकेली दिल्ली पहुँचती है तो एक होनहार युवक जिसका नाम हुसैन है सामान आदि उठाने में उसकी सहायता करता है। साङ्पुई की सहेली ह्मिङी उसे बताती है कि हुसैन उसी कॉलेज में पढ़ाते है जिस कॉलेज में साङ्पुई का एडमिशन हुआ है। हुसैन के आग्रह करने पर दोनों सहेलियाँ उस की गाड़ी से अपने ठिकाने पहुँचती हैं।

आगे जाकर कहानी का कथानक त्रिकोणीय प्रेम कहानी में उलझ जाती है। जैसे त्लुआङ मन ही मन साङ्पुई को चाहता है। साङ्पुई भी सच्चाई से अनभिग नहीं है। वह भी मन ही मन त्लुआङ को चाहती है। दूसरी ओर हुसैन साङ्पुई से एक तर्फा प्यार करने लगता है। दूसरी ओर साङ्पुई की सहेली ह्मिङी भी त्लुआङ को मन ही मन चाहने लगती है। वह साङ्पुई को त्लुआङ की नज़र से गिरानेके लिए हुसैन और साङ्पुई की मनगढ़त प्रेम कहानी गढ़ती है। साङ्पुई और हुसैन की ह्मिङी द्वारा फैलाई झूठी प्रेम कहानी के चलते सभी मिज़ो युवक साङ्पुई को धिक्कारने लगते हैं। उनका दर्द बस इतना ही था कि साङ्पुई ने अन्य जाती एवं बिरादरी के युवक को ही क्यों प्यार किया?

साङ्पुई सफाई देती रही पर सुनने वालों के कान में जू तक न रगी। दूसरी ओर त्लुआङ को अपने प्रेमचाल में फसाने के लिए जो चाल ह्मिङी ने चला था पूर्ण रूप से असफल हो गई।

दूसरी ओर जब हुसैन को वास्तविक स्थिति का पता चला तो वह स्वयं ही त्रिकोणीय प्रेम से हठ गया। ह्मिङी की अपनी चाल असफल हो गई, वह धीरे-धीरे हुसैन को चाहने लगी, धीरे-धीरे दोनों का प्यार परवान चलने लगा। परिणाम बहुत सुखद नहीं रहा। ह्मिङी ने हुसैन के बच्चे का जन्म दिया परंतु हुसैन उसे शादी करना नहीं चाहता था।

अतः उसने मन की बात ह्मिङी से छुपाई रखा और बहुत सारे रूपए देकर उसे कहा कि वह कुछ दिनों के लिए घर जा रहा है वहाँ से लौटकर उससे शादी कर लेगा। ह्मिङी झाँसे में आ गई। हुसैन के जाने के बाद उसे पता चला कि वह कभी लौटकर नहीं आएगा। वह नौकरी छोड़कर अपने देश 'जोर्डन' चला गया है।

साङपुई परीक्षा देकर मिज़ोरम लॉट गई परंतु जाते-जाते वह ल्लुआङा के नाम अपनी सच्चाई की सबूत रूपी पत्र छोड़ गई।

आइज़ोल पहुँचकर साङपुई को अपनी माँ कि बीमारी के बारे में पता चलता है उनकी दयनीय हालत देखकर मामा लललियाना किसी तरह से बड़े अधिकारियों से मिलकर साङपुई को उनके पुस्तैनि गाँव में प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक का काम दिलवा देता है।

ल्लुआङा पढ़ाई समाप्त कर आइज़ोल लौटता है। पिता के कहने पर वह अपने पारिवारिक व्यापार में लग जाता है। वह अपनी बहन की शादी मित्र वाला के साथ करा देता है। परंतु कहानी यही समाप्त नहीं होती।

साङपुई से उनके गाँव के सरदार का बेटा लियनफुङा एक तरफा प्यार करने लगता है। वह उससे शादी भी करना चाहता है परंतु साङपुई इसके लिए तैयार नहीं होती। साङपुई को यह नहीं पता था कि लियानफुङा और ल्लुआङा एक दूसरे को जानते हैं। इसी तरह ल्लुआङा और साङपुई के आपसी पहचान को लेकर लियानफुङा भी पूर्णतः अज्ञात था।

एक दिन लियानफुङा ल्लुआङा से कहता है कि उसने शादी के लिए एक युवती को पसंद किया है। वह ल्लुआङा को उस लड़की से मिलाने के लिए अपने गाँव ले आता है।

गाँव में साङपुई और ल्लुआङा एक दूसरे को देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं। लियानफुङा दोनों की सच्चाई से अनभिग अपने ही धुन में मस्त रहता है।

आगे जाकर कहानी अचानक नाटकीय ढंग से करवट लेती है।"*…Engmah, sawi a ngai tawhlo,ka la hmangaih reng che a, ka nupuia neih che ka duh a ni. Tlemte tal chuan min la hmangaih ve lo maw?...*"[17] इस प्रकार ल्लुआङा साङपुई के प्रति अपना दिल की बात कहकर कथानक अलग रास्ते की ओर मोड़ गया। ल्लुआङा और साङपुई के बीच सही स्थिति का स्पष्ट होना, लियानफुङा का अलग होना और अंत में साङपुई और ल्लुआङा का प्राण्य शुत्र में बन्ध जाने को कहानी का चरम-सीमा तथा सुखद अंत कहा जाएगा।

उपर्युक्त कहानी की पृष्ठभूमि, पात्रों के चरित्र एवं प्रत्येक घटना क्रमों का विश्लेषण करे तो कहानी को सामान्य श्रेणी में रखना समीचीन होगा।

खोलकूङी के कृतित्व तथा उनके समग्र रचनाओं का संक्षिप्त परिचय तथा उनका विश्लेषण करना कुछ अर्थों में कठिन प्रक्रिया है। क्योंकि आज उनकी अधिकांश रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं। इसके कई कारण बताए जाते है। मसलन उन दिनों मिज़ोरम में छपाखाना या प्रेस की कमी और अधिकांश पत्र – पत्रिकाओं का प्रकाशन cyclostyle के माध्यम से होना आदि। फिर भी उनकी कुछ मौलिक तथा अनूदित रचनाएँ आज जो भी आज उपलब्ध है उनके आधार पर खोलकूङी के साहित्यिक कृतित्व की विशेषताओं का इस प्रकार विश्लेषण करने का प्रयास किया जा सकता है।

उनकी कहानी, 'प्रेम पूर्ण भोर होने से पहले' (Hmangaihna Khua Avar Hmain) की पृष्ठभूमि मनुष्य जीवन के दो विपरीत पक्षों पर आधारित है। यथा ईसाई धर्म की शिक्षा के अनुसार जब तक व्यक्ति उसके पापों को अपने ऊपर ढोकर उसके बदले स्वयं अपने प्राण देने वाले ईसा मसीह को बलिदान पर विश्वास नहीं करता उसे संसारिक माया-जाल में उलझा हुआ माना गया है। इस दृष्टि से मिज़ो जन-जातियों को उनकी पुरानी धार्मिक मान्यताएँ मन को अनंत शांति नहीं दे सकता।

कहानी का मुख्य पात्र चलथङा के मरने के बाद उसकी आत्मा का मिलन उसकी स्वर्गीय पत्नी की आत्मा से होने की कल्पना को लेखिका ने मिथ्य माना है।

ईसाई धर्म की शिक्षा को ग्रहण कर प्रायः सभी गाँव वाले ईसाई धर्म को अपनाते है जिनमें चलथङा के दोनों बच्चे भी सम्मीलित है।

आत्माओं का देश रिहदील में सभी मृतकों की आत्मा का जाना और वहाँ उनका जीवन में बिछड़े अपनों को आत्माओं से मिलना आदि। पुराने मिज़ो समाज की ऐसी धार्मिक मान्यताएँ थी जिस पर सभी विश्वास करते थे।

मान्यता यह भी थी कि किसी मरणासन्न व्यक्ति की आत्मा को उसका रिहदील पहुँचने से पहले रास्ते में आने वाला बहुत महत्वपूर्ण पड़ाव ह्नुआइकोन में उससे पहले पहुँचकर यदि उसकी आवाज़ को वापस लौटने के लिए कहा जाए तो आत्मा लौटकर शरीर में दुबारा प्रवेश कर लेती है। इस प्रकार मरने वाला फिर से जी उठता था।

पुराने दिनों यह एक एसी मान्यता थी जिसका सत्यापन कइ बार किए जाने की बात बड़े-बुजुर्ग किया करते है।

लेखिका ने इस मान्यता का उल्लेख कर तत्कालीन मिज़ो जन-जातियों की धार्मिक आस्था का परिचय दिया है।

चलथङा द्वारा ईसाई धर्म स्वीकार कर अपने पुराने धार्मिक राश्म-रिवाजों को त्याग करने से मना करना, उसका अपनी स्वर्गीय पत्नी के सच्चा प्यार करने के भाव को बखूबी दर्शाता है।

इस प्रकार 'प्रेम पूर्ण भोर होने से पहले' कहानी में लेखिका ने ईसाई धर्म को अपनाने से पहले समाज द्वारा की जाने वाली सम्पूर्ण धार्मिक प्रतिष्ठानों को अंधेरे में किए गए अनार्थक काम कहा है। इन धार्मिक मान्यताओं का अनन्त-धाम या स्वार्ग से कोई सरोकार ही नहीं है। अतः कहानीकार ने उस काल के सभी धार्मिक क्रियाओं को अज्ञानतापूर्ण तथा 'अंधेरे में किया निरर्थक क्रिया' कहा है।

चारित्रिक गुण एवं विशेषता की दृष्टि से देखे तो चलथङाके चरित्र को कहानी के रीढ़ की हड्डी के रूप में लिया जा सकता है।

पत्नी को सच्चे दिल से प्यार करने वाला पति और अपने बच्चों के लिए पत्नी की मृत्यु के पश्चात भी दोबारा घर न बसाकर सम्पूर्ण जीवन को समर्पित कर देना चलथङा के चरित्र का सबल पहलू है। सच्चा प्यार करने वाला चलथङा अनंत मोक्ष मुक्ति से ज्यादा अपनी पत्नी की आत्मा से अपनी आत्मा की मिलन को महत्वपूर्ण मानता है। इसे उसका सच्चे प्यार के प्रति निष्ठा और विश्वसनीयता कहा जाएगा।

इस प्रकार 'प्रेम पूर्ण भोर होने से पहले' कहानी को तत्कालीन मिज़ो समाज की जीवन शैली, सामाजिक मान्यताएँ तथा धार्मिक विचारों

पर ईसाई धर्म की समप्रमुत्व,को दर्शाने वाला सफल कहानी माना जा सकता है।

तथापि कहानी के कुछ स्तरों पर सुधार की गुंजाइस भी परिलक्षित है।

लेखिका की मौलिक कहानियों में 'प्रिय साङपुई' (Duhtak Sangpuii) कहानी अपने पृष्ठभूमि पल पल बदलने घटनाक्रम त्रिकोणीय प्रेम का दर्द और अंत में नाटकीय ढंग से दो मुख्य पात्र साङपुई और त्लुआङा का प्राण्य सूत्र में बध जाना । किसी आम कहानी से अलग नहीं है।

कहानी का मुख्य पात्र साङपुई लुङदार गाँव की रहने वाली है। माध्यमिक विद्यालय का प्रधानाध्यापक की पुत्री साङपुई पिता के निधन के बाद अपने मामा के यहा रहने आइज़ोल आ जाती हैं।

यहाँ से कहानी आरंभ होती है। मामा लललियाना बीमारी के कारण उपचार के लिए कलकत्ता जाता है वह साङपुई को भी साथ ले जाता है। मामा कलकत्ता में रुक जाता है और साङपुई दिल्ली चली जाती है। कलकत्ता में साङपुई की मूलाकात त्लुआङा और उसके मित्र वाला से होता है।

कहानी में थङी का जिक्र भी आता है जो नशेली पदार्थ की तस्करी के कारण पुलिस के हाथों चढ़ी हुई है। दिल्ली में हुसैन द्वारा साङपुई को चाहने परंतु साङपुई का मन ही मन त्लुआङा की ओर आकर्षित होना, जहाँ एक तर्फा प्रेम करने वालों की मनोस्थिति को दर्शाता है वही ह्मिङी जो मन ही मन त्लुआङा को चाहती है। परंतु त्लुआङा मन ही मन साङपुई से प्रेम करता है । इस सच्चाई को जानने के बाद ह्मिङी का साङपुई को त्लुआङा के नज़र से गिराने के लिए हुसैन से प्यार करने का झूठा इल्जाम लगाना, हुसैन और ह्मिङी संबंध आदिके बीच अवैध घटनाएँ अविश्वासनीय लगती है। कुल मिलाकर कहानी की पृष्ठभूमि अस्सी के दशक के अंतर्गत मिज़ो समाज में आए आधुनिकरण की हवा के कारण युवाओं के जीवन शैली में आए विभिन्न परिवर्तन पर आधारित है।

इस दृष्टि से मनन करे तो कहानिकार द्वारा रचित विभिन्न चरित्र या पात्रों की पृष्ठभूमि को कुछ सीमा तक समझा जा सकता है।

कुल मिलाकर इस कहानी को सामान्य श्रेणी की कहानी कहा जा सकता है।

मौलिक रचनाओं के साथ साथ खोलकूङी ने कई अंग्रेजी कहानी एवं एकांकियों का मिज़ो में अनुवाद भी किया है। दुर्भाग्यवश उनमें से अधिकांश आज अप्राप्त है। इस तरह उनकी मौलिक रचनाएँ ही नहीं बल्कि अनूदित रचनाओं का आज उपलब्ध न होने का मुख्य कारण साठ से लेकर अस्सी के दशक के बीच सम्पूर्ण मिज़ोरम में अलगाववादी विचारधारा तथा उपद्रोहियों द्वारा भारत सरकार से युद्ध करने को मुख्य कारण माना जाता है। क्योंकि उन दिनों गाँव के गाँव उजड़े, असंख्य घर जले और कितने ही साहित्यिक एवं सरकारी दस्तावेज़ को आग के हवाले कर दिया गया था। सो, इस प्रकार विभिन्न घटनाओं के चलते खोलकूङी की रचनाएँ भी नष्ट हो गई होगी।

परंतु उनकी रचनाओं एवं अनुवाद कार्यों (जितना कुछ प्राप्त हैं) के आधार पर खोलकूङी की साहित्यिक कार्यों का विश्लेषण इस प्रकार करने का प्रयास किया है।

1. **<u>पाश्चात्य जीवन शैली का प्रभाव</u>**:

हालांकि खोलकूङी छठवीं तक ही पढ़ी-लिखी थी, परंतु उनका प्रारम्भिक समय द्वितीय विश्व युद्ध के आसपास का था। वायु सेना में क्लार्क के पद पर कार्य करने के कारण कम पढ़ी लिखी होते हुए भी अंग्रेजी भाषा में उनकी पकड़ बड़ी मजबूत थी।

वायु सेना विभाग की जीवन शैली पुणतः अंग्रेजी जीवन शैली से प्रभावित थी। खोलकूङी के अंग्रेजी साहित्य के प्रति लगाव तथा झुकाव भी इन्हीं परिवेश में ही हुआ। अतः इनकी रचनाओं में भी अंग्रेजी जीवन शैली तथा साहित्य का प्रचूर प्रभाव दिखाई देता है।

2. <u>प्राचीन मिज़ो जन-जातियों की जीवन पद्धति एवं मान्यताएँ:</u>

लेखिका स्वयं मिज़ो थी। अतः अपने समय के ही नहीं बल्कि पूर्वजों की जीवन शैली से भी अच्छी तरह परिचित थी। जिनमें सामाजिक जीवन के विभिन्न आयम यथा जीविकोपार्जन के साधन स्वरक्षा की विभिन्न क्रियाएँ ही नहीं बल्कि धार्मिक मान्यताएँ आदि पुरानी जीवन पद्धतियों को भी अपनी रचनाओं में उल्लेखित किया है।

ईसाई धर्म को अपनाने से पहले मृतकों की आत्माओं के बारे में जो विश्वास और मान्यताएँ थी उन्हें अंधविश्वास मानना और ईसाई धर्म की शिक्षा को ही जीवन का अमूल्य निधि मानना आदि भावों को अधिकाधिक रूप में विभिन्न पात्रों के माध्यम से उजागर करना उनकी ईसाई धर्म के प्रति निष्ठा एवं विश्वास के भाव को दर्शाता है।

इस संदर्भ में यह कहना भी अनुचित न होगा की लेखिका की अत्याधिक धार्मिक प्रवृत्ति के कारण उनकी रचनाओं में जीवन संघर्ष के मूल्यों की अवहेलना होती दिखाई देती है। क्योंकि प्रत्येक घटनाओं अथवा परिस्थिति विशेष में धार्मिक शिक्षा एव विचारधारा को प्रमुखता देकर इन्होने पात्रों की वैचारिक संवेदना को सीमित में बाँध सा दिया हे।

अतः उनकी अधिकांश रचनाएँ संसारिक जीवन मूल्यों से हटकर आद्यात्मिक मूल्यों पर केन्द्रित होता हुआ दिखाई देता है।

3. <u>ईसाई धर्म की शिक्षा से प्रभावित व्यक्तित्व</u>:

लेखिका का जन्म कट्टर ईसाई परिवार में हुआ था। बचपन से ही ईश्वर के प्रति आस्था और विश्वास रखने की भरपूर शिक्षा उन्हें दी गई थी। गिरजा में होने वाले विभिन्न गतिविधियों में बचपन से ही बढ़-चढ़कर भाग लेने वाली खोलकूङी का सम्पूर्ण जीवन ईसाई धर्म की शिक्षा को समर्पित था। यहीं कारण है कि विभिन्न स्थानों यथा कलकत्ता व अन्य शहरों में नौकरी करते हुए भी उनके चरित्र पर किसी ने ऊँगली नहीं उठायी।

दूसरी ओर उनका मूल उद्देश्य साहित्य के माध्यम से ईसाई धर्म कि शिक्षा ईसा मसीह के बलिदान और पुनरुत्थान के बारे में भरसक प्रचार-प्रसार करना है। यह सत्य उनकी रचनाओं में भी प्रचूर मात्र में परिलक्षित है।

4. **आधुनिकता:**

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय तत्कालीन मिज़ो समाज की शिक्षा के साथ-साथ विश्वज्ञन की अल्पता को देखते हुए छठवी तक पढ़ी खोलकूङी को काफी आधुनिक विचारधारा वाली कि माना जा सकता है। ईसाई मिशनरियों के संगति ने उसे पाश्चात्य जीवन शैली और धार्मिक मूल्यों की ओर प्रभावित किया है। वह आधुनिक विचार कि थी। अपने इन विचारों को अपनी वह रचनाओं के माध्यम से समाज तक पहुँचाना चाहती थी।

साहित्य के परिपेक्ष्य में उनकी धार्मिक कट्टरवादिता को अनदेखी कर समीक्षा करे तो उनका व्यक्तित्व सामान्य समाज सुधारक एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में ही दिखाई देगा।

5. **धार्मिक और सामाजिक भावनाओं में सामंजस्य बनाई रखने कि बाध्यता**:

खोलकूङी पूरवों की पारंपरिक धार्मिक विश्वास को छोड़कर कट्टर ईसाई बनी थी। दूसरी ओर जिस समाज में वह रह रही थी उसकी अधिकांश गतिविधि किसी न किसी रूप से पुरानी मान्यताओं के आधार पर ही होती थी। लेखिका यदि अपनी इसाइयत विचार-धाराओं के आधार पर ही लिखती तो समाज द्वारा पुनतः नकारा जाता। अतः उन्होने बड़ी होश्यारी के साथ बीच का रास्ता चुना अतः जहाँ कहीं भी उनकी रचनाओं में पुराने रस्म-रिवाजों के मूल्यों को समाहित करने की बात आती है या इसी तरह जहाँ वे पूर्ण रूप से ईसाई धर्म के शिक्षा पर ज़ोर देने कि बात आती है तो उन्होने इन परिस्थितियों में बीच का रास्ता अपनाने की भरसक कोशिश किया है।

6. कथानक:

खोलकूडी की प्रायः सभी रचनाएँ युवा प्रेम कहानी पर आधारित है। हाँ, उनकी रचनाओं में मुख्य या मूल चरित्रों को पूर्णतः साफ-सुधरा दिखाने कि चेष्टा स्पष्ट रूप में दिखाई देती है।

समाज में व्यक्त विभिन्न सामाजिक वैयक्तिक एवं पारिवारिक समस्यों पर आधारित अपनी रचनाओं में भी मुख्य पात्रों के चरित्र गुण के प्रति उनकी सोच बहुत ही ईमानदार रही है। साथ ही इन्होंने अपनी प्रायः सभी रचनाओं का अंत सुखद ही रखा है।

उपर्युक्त कथनों के आधार पर यदि खोलकूडी की रचनाओं का गहनता के साथ उभर आती है की साहित्य के विशाल कैनवास में अब भी रिक्तता की कमी नहीं है ।

संदर्भ सूची

1. Dr. Laltluangliana Khiangte, **'Khawlkungi leh A Kutchhuakte'**, L.T.L. PUBLICATIONS, B-43, Mission Veng, Aizawl – 796001, Mizoram, पृ॰13
2. वहीं पृ॰15
3. वहीं पृ॰17,18
4. वहीं पृ॰16
5. वहीं पृ॰19
6. वहीं पृ॰9
7. वहीं पृ॰19
8. वहीं पृ॰40
9. वहीं पृ॰44,45
10. वहीं पृ॰23,24
11. वहीं पृ॰26
12. वहीं पृ॰27
13. वहीं पृ॰29
14. B. Lalthangliana, **'Mizo Literature'**, Mrs. Remkungi (Publisher), Gilzom Offset, Electric Veng, Aizawl – 796001 , पृ॰ 424
15. Dr. Laltluangliana Khiangte, **'Khawlkungi leh A Kutchhuakte'**, L.T.L. PUBLICATIONS, B-43, Mission Veng, Aizawl – 796001, Mizoram, पृ॰21
16. Dr. Laltluangliana Khiangte, **'Khawlkungi leh A Kutchhuakte'**: *Hmangaihna Khua A Var Hmain,* L.T.L.

PUBLICATIONS, B-43, Mission Veng, Aizawl – 796001, Mizoram, पृ॰53

17. Dr. Laltluangliana Khiangte, **'Khawlkungi leh A Kutchhuakte'**: *Hmangaihna Khua A Var Hmain,* L.T.L. PUBLICATIONS, B-43, Mission Veng, Aizawl – 796001, Mizoram, पृ॰56

18. Dr. Laltluangliana Khiangte, **'Khawlkungi leh A Kutchhuakte'**: *Duhtak Sangpuii,* L.T.L. PUBLICATIONS, B-43, Mission Veng, Aizawl – 796001, Mizoram, पृ॰261

द्वितीय अध्याय

'मलसॉमा' उपन्यास की संवेदना

क) उपन्यास की पृष्ठभूमि

ख) पात्रों का परिचय

ग) उपन्यास में अभिव्यक्त मिज़ो समाज की स्थिति

I. सामाजिक स्थिति

II. धार्मिक स्थिति

घ) उपन्यास की मूल संवेदना

द्वितीय अध्याय

'मलसॉमा' उपन्यास की संवेदना

क) उपन्यास की पृष्ठभूमि:

मिज़ो उपन्यास साहित्य में उपलब्ध विभिन्न उपन्यासकारों की रचनात्मक पृष्ठभूमि से नितान्त अलग दिखाई देती है उपन्यासकार खोलकूङी की 'ज़ोलपला ठ्लान त्लाङ' उर्फ 'मलसॉमा' उपन्यास की पृष्ठभूमि । उपन्यास की संवेदनापूर्ण पृष्ठभूमि 'फूलपुई' गाँव के सामान्य व्यक्ति लियाना जो चर्च में प्राचीर (एल्डर) थे की मृत्यु के पाश्चात उसकी मातृ विहीन पुत्री वानललरेमी की संघर्षपूर्ण जीवन कथा पर आधारित है।

बचपन में ही माँ गुजर चुकी थी। सभी भाई-बहन कोई बाल्यावस्था में तो कोई किशोरावस्था को पार करते न करते भगवान को प्यारे हो चुके थे। अतः रेमी अपने पिता की एसी एकलौती संतान थी जिसे पिता ने माँ और बाप दोनों का ही प्यार एवं स्नेह देकर उसकी देखभाल की थी।

सिर से पिता का साया उठते ही रेमी पूर्ण रूप से अनाथ हो गई थी। दूसरी ओर ईसाई होने के कारण पिता ने उसे धर्म की अनेका नेक शिक्षा ही नहीं दी थी बल्कि उन शिक्षा एवं अनुभवों को जीवन में उतारने और जीने की साहस भी रेमी के मन में कूट-कूट कर भर दिया था।

"ज़ॉलपाला थ्लान तलांग (Zawlpapala Thalan Tlang) पहाड़ी की चोटी से उसने चारों ओर देखा। कुछ कोरल के पेड़ों पर लाल फूल खिल रहें थे। लाल धुएँ के बीच वह दूर तक की पहाड़ियाँ देख सकती थी। उसे बहुत अकेलापन महसूस हुआ। उसने अपने अतीत को याद किया और सोचा , कैसे उसके पिता कोमल स्वर में उससे बात करते थे, माँ आँगन में उसका हाथ पकड़ती थीं। फूलपुई गाँव, जहाँ उसका जन्म हुआ था और जहाँ वह बड़ी हुई थी, उसे छोड़ना बुरा लगा। वहाँ वह अपने परिवार के साथ रहती थी। लेकिन अब वह अनाथ हो गई थी, अपने जीवन की घटनाओं को याद करके उसका मन अपने जन्मस्थान को त्यागने का नहीं हो

रहा था। उसे पता नहीं था कि वह कहाँ जाएगा? आत्म-दया से अभिभूत हो वह जोरों से रोने लगी।..."[1]

इस प्रकार 'मलसॉमा' उपन्यास की पृष्ठभूमि इसके मुख्य चरित्र रेमी के जीवन में घटी विभिन्न घटनाओं के इर्द-गिर्द के वातावरण को समेटते हुए उन्हें उपन्यास का रूप दिया गया है। जिनमें पिता की मृत्यु के पश्चात रेमी का बुआ के यहाँ रहना और बुआ के पति के विचारों को स्वीकार न कर पाने के कारण सियालसूक गाँव में पादरी के घर शरण लेने की उसका फ़ैसला उसके उस चारित्रिक गुण को दर्शाता है जिसमें ईश्वार के प्रति आस्था तथा संसारिक भाव-वैभाव आदि के प्रति उदासीनता का परिचय देखने को मिलता है। "*प्रभु पर निर्भर करना सबसे अच्छा है।*" [2]

मलसोमा रैएक गाँव के माध्यमिक विद्यालय का प्रधानाचार्य है, गाँव की युवती ललखोथङी उसे चाहती है। परंतु मलसोमा मन ही मन रेमी को चाहता है। ललखोथङी मलसोमा को यथा संभव ध्यान रखती है। खाना बना देना, कपड़े धो देना, घर की साफ-सफाई आदि सभी काम करती है। परंतु मलसोमा के दिल को नहीं जीत पाती है।

प्यार में हारी ललखोथङी गाँव का ही फौजी वानथङा से शारीरिक संबंध बनाती है। वह गर्भवती हो जाती है।

वानथङा तो छुट्टी बिताकर वापस चला जाता है। परंतु गाँव वालों के बहुत पूछने पर भी वह अपने पेट में पल रहे बच्चे के नाम नहीं लेती है। वह चुप्पी साध लेती है। एस व्यवहार करती है कि गाँव वालों का शक मलसोमा की ओर आने लगता है।

इस तरह गाँव वाले मलसोमा को ही ललखोथङी के पेट में पल रहे बच्चे का पिता मानने लगते हैं। परंतु मलसोमा के प्यार पर पूर्ण विश्वास करने वाली और स्वयं भी उसे प्यार करने वाली रेमी मलसोमा को निर्दोष मानती है, उसे मलसोमा पर पूरा भरोसा करती है। आखिर अन्त भला तो सब भला के तर्ज पर सब को सच्चाई का पता चल जाता है, परंतु यह घटना मलसोमा के जीवन को पूर्ण रूप से बदल देता है। मलसोमा गुस्सा था, भाई से कहता है- "*पढ़ाना ही एकमात्र व्यवसाय नहीं है। अभी मेरा फैसला शादी*

न करने का है। अगर मेरे पास नौकरी नहीं होगी तो मैं परिवार कैसे चलाऊँगा? मैं अपनी पत्नी को निराष करूँगा। तुम नौकरी की तलाश में शिलाँग जा रहे हो, मुझे भी अपने साथ ले चलो। मुहे आशा है कि वहाँ मुझे नौकरी मिल जाएगी। फौज में कमीशन का मौका मिल सकता है।"[3] वह अध्यापकी छोड़ कर फौज में अधिकारी पद पर भर्ती हो जाता है। इस प्रकार अन्त में बड़ी-शान शौकत के साथ वह रेमी से शादी कर लेता है।

यदि उपन्यास के सभी पात्रों की अपनी-अपनी चारित्रिक विशेषताएँ तथा आध्यात्मिक एवं धार्मिक संवेदनाओं का गहराई से मनन् करे तो यह बात स्वतः स्पष्ट होता है कि उपन्यास की पृष्ठभूमि पात्रों के बीच आपसी समझ, धर्म की शिक्षा के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित मनोभव और आवश्यकता पड़ने पर निष्पक्ष भाव से एक दूसरे की सहायता करने की मनोवृत्ति और भाव से परिपूर्ण है।

उपन्यास की पृष्ठभूमि का दूसरा पक्ष मिज़ो समाज की सामाजिक संरचना की दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण है। मिज़ो समाज का जातीय ऊँच-नीच भाव रहित होना और आवश्यकतानुसार सभी को अपने आगोश में लेने की प्रवृत्ति को भी पृष्ठभूमि का अभिन्न अंग माना जा सकता है।

मिज़ो समाज भी अन्य मानव समाज कि तरह पूर्ण रूप से दोष मुक्त नहीं है। इसमें भी कई प्रकार कि कमियाँ हैं। स्वार्थपूर्ण मानव स्वभाव, लालची और ईर्ष्या रखने वाले तथा लड़ाई-झगड़ा करने वालों को भी कमी नहीं है। परंतु ईसाई धर्म की शिक्षा का कमावेश प्रभाव सभी पर पड़ा हैं। सो उपन्यास की पृष्ठभूमि इन्हीं मानवीय समवेदनाओं पर आधारित है।

इस प्रकार सम्पूर्ण उपन्यास की पृष्ठभूमि के संदर्भ में मुख्यतः इन तथ्यों को देखा जा सकता है यथा-

1) उपन्यास रचनाकाल को धार्मिक मान्यता की दृष्टि से धार्मिक पारगमन की आवधि के रूप में लिया जा सकता है।

2) उपर्युक्त कथन के चलते ही समाज में पुरखों के अन्धविश्वास की सीमा को तोड़कर नया धर्म को अपनाने और इसकी शिक्षाओं के प्रति दृढ़ता के साथ खड़ा रहने की प्रबलता भी पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण विषय है।

3) यहीं कारण है की प्रायः सभी मुख्य पात्रों की सोच और जीवन शैली में चारित्रिक गुण एवं शुद्धता का भाव देखने को मिलता है।

4) प्रायः सभी पात्र युवा ही है इसलिए युवा काल की मनोभाव, इच्छा और कल्पना आदि को भी पाक-साफ परिवेश के अंदर ही रखा गया है।

5) भाषा प्रयोग की विशेषता को भी पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण अंग माना जा सकता है। वैसे तो सभी भाषाएँ परिवर्तनशील होती है। उपन्यासकार ने जिन मिज़ो शब्दों और शब्द की अर्थागत विशेषताओं को नया आयम देने का प्रयास किया है। अतः इसे मिज़ो भाषा का संक्रामन काल भी कहा जा सकता है।

उपन्यास का आरंभ दुखद तथा करुण वातावरण से होता है। अनेका नेक घटना क्रमों को पार कर जब कथानक चरम्-सीमा पर पहुँचती है तो एक दूसरे को चाहने वाले मुख्य पात्रों का पति-पत्नी बनकर अपने संघर्षों का सुखद अन्त करना ही न होकर धर्म की शिक्षा के प्रति अपने विश्वास तथा परिपक्वता का परिचय देना होता है।

संक्षेप में 'मलसॉमा' उपन्यास की कथानक को तत्कालीन मिज़ो समाज की वास्तविक स्थिति पर आधारित माना जा सकता है।

ख) पात्रों का परिचय:

वैसे तो उपन्यास में छोटे-बड़े 34 पात्र हैं। परंतु पात्रों की भूमिका को देखते हुए इन्हें मुख्य पात्र, सहायक पात्र तथा गौण पात्र में बाँटा जा सकता है। जो इस प्रकार है-

मुख्य पात्र :-

नारी पात्र – वानललरेमी

पुरुष पात्र – मलसोमा

सहायक पत्र:-

नारी पत्र –

1) बियाककूङी
2) पी जाई
3) ललखोथङी

पुरुष पात्र –

1) रौछीङा
2) ललमुआना
3) मामा एलडर कोला
4) वानथङा
5) सहायक मोइया और फौजी ललमोइया

गौण पात्र :-

नारी पात्र –

1) पी छीङी (रेमी की पड़ोसी)
2) ठुआमी (रेमी की बुआ)
3) रौसाङी (बुआ की बेटी)
4) रौल्लुआङी (बुआ की बेटी)

5) रौथङी (हॉस्टल में रहने वाली)

6) पी छोनी (रैएक गाँव की एक औरत)

7) पी वुङी (मामा कोला की पत्नी)

8) वानथङा की माँ

9) लियानथङी (ललखोथङी की बहन)

10) रुआलखूमी (लियानथङी की सहेली)

11) पारतेई (वानथङा की बहन)

12) ज़ुइतेई (मलसोमा की बहन)

13) थियाङहिलमी (मामा कोला की बेटी)

पुरुष पात्र-

1) एलडर लियानदाईलोवा (रेमी के पिता)

2) एलडर हुयाइया (रेमी के पड़ोस)

3) नेपाली अजनबी (रेमी को सियालसूक तक रास्ता दिखाने वाला)

4) पादरी (रेमी के पिता का जान पहचान)

5) ललङूरा (ललखोथङी के बड़ा भाई)

6) थङरुआला (ललङूरा के मित्र)

7) वानदाईलोवा (वानथङा के पिता)

8) थङवेला (लली के पिता का मित्र)

9) बेला (मलसोमा का भाई)

10) पददी कोसतेलों (मलसोमा का आइरिश फौजी मित्र)

11) बियाकल्लुआङा (पी जाई के यहाँ एक कर्मचारी)

मुख्य पात्र :

नारी पात्र –

वानललरेमी का परिचय

उपन्यास फूलपुई गाँव में गिर्जा के अगुवाईकर्ता एलडर लियाना की एकलौती पुत्री वानललरेमी से होकर वानललरेमी पर ही समाप्त होता है। अतः उपन्यास का मुख्य पात्र वानललरेमी चहै। उसके चरित्र को विभिन्न संदर्भम में देखा और चित्रिण किया जा सकता है।

माँ की मृत्यु के पश्चात पिता के साथ रहने वाली रेमी बचपन से ही अपने धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा रखने वाली प्रवृत्ति की थी। पिता चर्च का एलडर होने के साथ-साथ शांत स्वभाव के मित्त-भाषी धार्मिक प्रवृत्ति पूर्ण एलडर थे। गाँव के सभी लोग उन्हें मानते और उनका इज्जत करते थे। मृत्यु सैया पर पड़े पिता अपनी पुत्री के लिए ईश्वर से प्राथर्ना करता है कि, "*ओ मेरे प्रभु, मैं तुम्हारे अपने घर आ रहा हूँ। मैं अपनी बेटी को बिना किसी देखभाल करने वाले के अकेला छोड़ रहा हूँ। कृपा करके इसकी देखभाल कीजिएगा, उसे में आपको सौपता हूँ। आमीन।*"[4] कहकर अपनी एक लौटी पुत्री को ईश्वार के हाथ सौपना उनके ईश्वार के प्रति अटूट विश्वास को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

रेमी में भी अपने पिता की यहीं धार्मिक विश्वास और संस्कार आरंभ से अंत तक दिखाई देता है। रेमी, मरते समय पिता द्वारा कही बातों को अमल करने से पहले किसी मजबूरी के कारण गाँव में ही अपनी बुआ ठ्उआमी के यहाँ रहने लगती है तो उसे कठिन परिस्थितियाँ का सामना करना पड़ता है। उनकी दुखद परिस्थितियों को पिता के क़ब्र में जाकर कहती है- "*डैडी, क्या तुम क़ब्र के इस गहरे ठंडे बिस्तर से मुझे सुन सकते*

हो? क्या मेरे लिए आपसे बात करना संभव नहीं है? मेरा भविष्य क्या होगा?...आज मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है। मैं कंगाल हूँ"[5]

बुआ के पति रौछीङा पीने का आदी है। वह अपने शराबी मित्र ललमुआनासे रेमी की शादी कराने का वादा तो करता है पर इसके एवज में मुआना से बंदूक देने की फर्माइस भी करता है।

रेमी बुआ के विवशता को समझकर पिता के अंतिम आज्ञा के अनुसार मामा के यहाँ जाना तो चाहती थी परंतु गाँव की राह से अनजान होने के कारण वह अपने क्षेत्र के पादरी के यहाँ सियालसूक चली जाती है। यहाँ पादरी से तो उसकी मुलाकाद नहीं हो पाती है परंतु पादरी की छोटी बहन बियाककूङी से उसकी मुलाकात होती है। यहाँ से रेमी के जीवन में एक नए अध्याय का आरंभ होता है। अपनी सहेली की सलाह मानकर वह अंग्रेज़ मिशनरी Ms. Katie Hughes जिसे स्थानीय लोग **पी जाई** नाम से जानते-बुलाते थे, के यहाँ सिलाई-कढ़ाई सीखने के लिए जाने का फ़ैसला करती है। स्वयं बियाककूङी भी पी जाई की छात्रा थी। वानललरेमी सहेली की बात मानकर आइज़ोल पहुँचती है।

उसकी दयनीय हालत और ईशवर के प्रति अत्यांत विश्वास की भावना को देखकर पी जाई ने उसे अपने यहाँ रख लिया। बहुत थोड़े समय में ही अपने अचारण से वह सब की चहेती बन जाती है। एक रात उनके निवास स्थान के पास ही बोईस स्काउट और गर्ल्स स्काउट कैंप फायर का आयोजन करती है। कैंप फायर की तैयारी में एम.ई.स्कूल ने मदद की। यहाँ जब दोनों की औपचारिक मुलाकाद होती है तब रेमी को मालूम पड़ता है कि बोईस स्काउट लीडर मलसोमा उसकी पिता की मृत्यु के रात पादरी के साथ फूलपुई गाँव आया था। परंतु उस समय दोनों के बीच कोई बात नहीं हो पाई थी।

मिज़ो अलगाववादियों और भारतीय सैनिको के बीच लड़ाई छिड़ने के कारण आइज़ोल का वातावरण बहुत अशान्त हो गया था। अतः पी जाई को भी अनिश्चित समय लिए अपना प्रशिक्षण कैन्द्रबंद करना पड़ा।

रेमी ने भी अपने मामा के गाँव रैएक जाने का फ़ैसला किया। सौभाग्यवश उसे पी छोनी मिल गयी जो अपने बच्चे के साथ रैएक जा रही थी। रास्ते में एक पुराना **ट्लाम** (अस्थायी रूप से झूम कि खेती में बनायी जानी वाली झोपड़ी) में उन्हें घायल मलसोमा को दिखाई दिया। मलसोमा को साँप ने काँटा था। वह उसे सहायता जरूरत थी। रेमी उसकी देख-रेख करने वहीं रुक जाती है और गाँव वालों को खबर देने के लिए पी छोनी अपने बच्चे के साथ आगे चली जाती है।

बेहोशी की हालत में मलसोमा रात भर कराहता रहा और रेमी उसे अपने चादर ओढ़ाकर रात भर चुप-चाप उसकी बगल में बैठी रही। दूसरे दिन जब गाँव वाले आते हैं तो तब तक मलसोमा को होश आ चुका था। तब रेमी को पता चलता है कि मलसोमा की नियुक्ति रैएक में माध्यामिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रूप में हुई हाई। और वह इसी सिलसिले में रैएक जा रहा था।

यहीं से दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति चाहत का बीज पड़ने लगा। परंतु दोनों में से कोई भी संकोच तथा लज्जा के कारण मन की बात जुबा पर न ला सके। फिर भी आपस में बोलचाल तो हो ही जाती थी।

आरंभ में मलसोमा भी रेमी के मामा के घर पर रहने लगा था। बाद में जब गाँव वालों ने उसके लिए अलग घर बनाया तो वह अपने नए घर में चला गया। फिर भी कई समय शिष्टाचारवश वह मामा के यहाँ कुछ देर के लिए आया जाया करता था।

हालांकि मलसोमा ने स्पष्ट कुछ भी रेमी को नहीं बताया था फिर भी वह रेमी से अंदर ही अंदर प्यार करने लगा था। वह रेमी की मित्तभाषी होना तथा चरित्र के पवित्रता और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण ही रेमी को चाहने लगा था।

परंतु रेमी के मन में मलसोमा के प्रति इज्जत और सम्मान पूर्ण भाव के सिवा प्रेम जैसी कोई चीज शायद नहीं था। तभी वह बिना किसी हीच-किचाहट के उसके साथ सामान्य व्यवहार करती थी।

दूसरी ओर गाँव के ही सामान्य कद-काठी की युवती ललखोथङी उर्फ लली मलसोमा का काफी ख्याल ध्यान रखने लगी थी। जब मलसोमा

आइज़ोल आता है तो लली के लिए कपड़ा लाता है यह जानकार रेमी के मन में एकाएक दर्द और ईर्ष्या की भावना जगाने लगती है। तभी उसे पता चलता है कि वह जाने-अन-जाने मलसोमा को चाहती है। जब मलसोमा उसे उसके लिए लाई आँगुठी देता है तो यह दोनों के लिए एक दूसरे के प्रति प्यार और चाहत को कहने का माध्यम बन जाता है।

लली को जब पता चलता है कि मलसोमा और रेमी एक दूसरे को चाहते हैं तो उसका मन प्रतिहिंसा की भावना से भर जाती है। गाँव के एक युवक फ़ौजी वानथङा जब छुट्टी में गाँव आता है तो उसके साथ संबंध बनाकर गर्भवती हो जाती है और वह बच्चे के बारे में मौन धारण कर लेती है।

वह ऐसा व्यवहार करती है कि गाँव वाले मलसोमा पर भी शक करे। इस बदनामी के घड़ी में भी रेमी का मलसोमा के चरित्र को पाक-साफ मान कर उसकी बातों पर विश्वास करना उसके सच्चे प्रेम पर अपने सम्पूर्ण रूप अंतस्तल में विश्वास करने की अद्‌भुत शक्ति को दर्शाता है।

उपन्यास का प्रमुख पात्र होने के कारण कथानक भी रेमी के इर्द-गिर्ड ही चलती रहती है। अपने प्यार की पवित्रता को अंतिम पड़ाऊ तक पहूँचाने के लिए दोनों का तुरंत ईसाई धर्म के अनुसार चर्च में शादी करने का फ़ैसला लेना रेमी के मन में सच्चाई के प्रति आस्था और अन्याथी का सामना करने की प्रवृत्ति को दिखाता है।

परंतु शादी के पहले अधिकारियों द्वारा मलसोमा को आइज़ोल बुलाकर उसका नियुक्ति किसी अन्य विद्यालय में करने के कारण आहत मलसोमा खुद अध्यापकी छोड़ कर फौज में एक ऑफिसर की हैसियत से भर्ती हो जाता है तो भी रेमी अपने सच्चे प्यार को अक्षुणण बनाए रखने के लिए अपनी चरित्र पर बदनामी का एक भी धब्बा लगने नहीं देती है।

इस तरह अनेकानेक दुख और नाना प्रकार की अवहेलनाओं को सहने के बाद भी रेमी अपने प्यार को किसी भी हालत में अपने संजोए रहती है। अंत में जब मलसोमा से उसकी शादी ईसाई धर्म के नियम के अनुसार बड़ी धूम-धाम से होती है तो रेमी और मलसोमा का प्यार सारी समाज में एक बहुत ही सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करने वाली शादी बन जाता है।

शादी के बाद के बाद जब मलसोमा अपने पोस्ट पर वापस जाने लगता है तब वहाँ रेमी को दूरदराज़ अपने माता-पिता के साथ न रहकर वह चाहे तो आइज़ोल में ही मैडम जाई या अपने मामा एलडर कोला के यहाँ रहने के लिए कहता है। तब रेमी का यह कहना कि, *"मैं कहीं भी नहीं जाऊँगी। तुम्हारा घर मेरा घर है। तुम्हारा परिवार मेरा परिवार है। में तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि तुम्हारे माता-पिता के साथ रहने में मुझे महसूस होगा, जैसे में तुम्हारे साथ रह रहीं हूँ।"*[6]

उपन्यास के मुख्य पात्र रेमी के इस कथन से सच्चे प्रेम के प्रति उसका समर्पन भाव, पति के प्रति विश्वसनीयता तथा उनके घर के सम्पूर्ण परिवेश को खुले दिल से अपनाने का भाव स्पष्ट रूप से होता है। अतः रेमी के चरित्र को दुख और कष्टों के बीच भी ईश्वर पर आस्था रखने वाली, आज्ञाकारी तथा पतिव्रता नारी के चरित्र के रूप में देखा जा सकता है।

पुरुष पात्र –

मलसोमा का परिचय

प्रस्तुत उपन्यास का मूल शीर्षक 'ज़ोलपाला ठ्लान ल्लाङ' का अनुवाद हिन्दी में 'मलसॉमा' शीर्षक के नाम से किया गया है। यह उपन्यास के पात्र मलसोमा की एहमियत को स्वतः ही उजागर करता है। सम्पूर्ण कथानक में मलसोमा की उपस्थिति मुख्य पात्र के रूप मेब परिलक्षित है।

एक पढ़ा लिखा और शांत स्वभाव का युवक मलसोमा लंबा , घुँघराले बालों वाला सुंदर युवक है। अपनी सज्जनता और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण समाज में अपना अलग स्थान रखता है। स्काउट एण्ड गाइड के अनुशासन पूर्ण गति विधियों से अनुशासित मलसोमा की मुलाक़ात जब फूलपुई गाँव की अनाथ युवती से होती है तो आगे जाकर इनकी यह मुलाक़ात धीरे-धीरे प्यार में बदल जाती है। प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत पढ़ा-लिखा और शालीन युवक के प्रति गाँव के युवती ललखोथङी का दिलों जान से आकर्षित होना विचित्र बात नहीं लगती। परंतु मलसोमा का उसके प्रति सामान्य व्यवहार करना तथा जवानी के जोश में किसी भी गलत कदम उठाने से स्वयं को बचाई रखना उसके चरित्र और सोच की

परपक्कता का द्योतक माना जा सकता है। दूसरीओर अपने एक तरफा प्यार से निराश होकर जब लली फौजी वानथङा के साथ संबंध बनाती है जिसके फल स्वरूप वह गर्भवती हो जाती है , पर वह अपने पेट में पल रहे अवैध संतान के पिता का नाम उजागर नहीं करती। दूसरी ओर वह ऐसी हरकते करती है जिसे लोगों को लगे कि उसके अवैध संतान का पिता मलसोमा ही है।

लली की झूठी अरोप से भी वह विचलित नहीं होता। ईश्वर के प्रति आस्था और रेमी के प्रति सच्चे प्रेमके कारण मलसोमा और रेमी तुरंत ईसाई धर्मके अनुसार शादी करना चाहते है परंतु उसे तुरंत आइज़ोल आने की आज्ञा मिलने के कारण शादी से पहले आइज़ोल चला जाता है। यहाँ अधिकारियों द्वारा उसे दोषी मानने तथा किसी अन्य विद्यालय में झगड़ा उसका तबदला करना उसकी अहं पर चोट करती है। स्वाभिमानी था और बिना वजह झूठे-झूठे आरोप को अपने ऊपर बोझ की तरह उठाना उसे मंजूर न हुआ। अतः वह नौकरी छोड़ देता है।

उपन्यास के कथानक में यह एसी घटना है जो मलसोमा के चरित्र की पवित्रता को दर्शने के साथ साथ उसके अंदर की आत्मसम्मान एवं सच्चाई के लिए सब कुछ सहने अथवा कर गुजारने की भावना को भी उजागर करती है। इस तरह मलसोमा पात्र उपन्यास को गति देने वाला प्रबल पात्र के रूप में उभर कर आता है।

मलसोमा बियाते गाँव का रहने वाला था अतः रेमी से विवाह करने एक बाद वह पत्नी के साथ पुस्तैदी गाँव बियाते जाता है।

वह जब छुट्टी समाप्त होने के बाद वापस फौज में लौटने की तैयारी करता है तो उसका अपनी पत्नी से कहना कि, *"मुझे दुःख है कि मैं तुम्हें साथ नहीं ले जा सकता । यह गाँव आइज़ोल से भी बहुत दूर है। मेरे माता-पिता तुम्हारे बिना रह सकते हैं। अगर तुम चाहो तो मैडम ज़ाई या मामा कोला के साथ रह सकती हो। मुझे बंदोबस्त करने में एक साल से भी कम लगेगा। वैसे तुम जहाँ भी चाहो वहाँ रह सकती हो।"*[7]

इससे स्त्रीयोंके प्रति उसके मन में सहानुभूति के साथ-साथ इज्जत के भाव को भी स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

पत्नी ही नहीं अपने माता-पिता के प्रति उसका प्यार और पारिवारिक सम्बन्धों के प्रति उसकी संवेदना कथानक में उसके चरित्र को और भी ऊँचा कर देती है इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'मलसॉमा' उपन्यास में मलसोमा पात्र कथानक को गति देने और सम्पूर्ण उपन्यास को प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उसका फौज में भरती होना,अपने सभी प्रशिक्षण को समाप्त कर रेमी के साथ विवाह के बंधन में बाँधना, जीवन के उस सच्चाई को मूर्त रूप देता है जिसके कारण उसे धीर-गंभीर ,ईश्वार के प्रति आस्था रखने वाला, सच्चाई का पुजारी,सज्जन इंसान के रूप में स्वीकार दरहसाता है।

सहायक पात्र:

नारी पात्र –

बियाककूङी का परिचय

उपन्यास के सह पात्रों में बियाककूङी के पात्र को मुख्य पात्र रेमी के जीवन में संकट-मोचक पात्र के रूप में लिया जा सकता है। सियालसूक क्षेत्र के पादरी की बहन युवती बियाककूङी कोमल मन की और साफ हृदय की युवती है। वह उपन्यास में जीवन की मार से व्यथित वानललरेमी के लिए संकट-मोचक के रूप में खड़ी दिखाई देती है।

किकर्ताव्यविमूड और परेशान रेमी जब सियालसूक में उनके यहाँ पहुँचती है तो वह रेमी को अपने साथ आइज़ोल में ईसाई मिशनरी पी जाई के यहाँ सिलाई-कढ़ाई का काम सीखने के लिए प्रेरित करती है। साथ ही उसकी भरसक सहयता भी करती है। इस तरह रेमी के प्रारम्भिक संघर्ष काल में बियाककूङी उसके साथ हमेशा बनी रहती है।

इतना ही नहीं जब रैएक में रेमी की शादी मलसोमा के साथ तय होती है तो वह सच्ची सहेली का फर्ज़ निभाने आइज़ोल से रैएक जाती है।

परंतु जब शादी मलसोमा के स्थानांतरण के कारण स्थगित कर दी जाती है तो वह इस दुःख की घड़ी में भी रेमी के साथ बनी रहती है।

यथा- "*रेमी के होश में आने पर उसके पास बैठी बियाकी ने उसे सान्तवना देने की कोशिश की-"ऐसा इसलिए नहीं हुआ कि वह तुमसे प्यार नहीं करता, इसलिए शादी ताल दी है। थोड़े समय के लिए तुम परिस्थितियों की वजह से अलग हुई हो। उसने तुम्हारे भविष्य की भलाई के लिए ऐसा किया है। तुम दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हो। निस्संदेह तुम दोनों फिर मिलोगे।*" [8]

उसका रेमी का दिल बहलाने के लिए उसे कभी उनके पुश्तैनी गाँव फूलपुई ले जाना, फिर आइज़ोल में भी उसकी आवश्यकतानुसार देख-रेख करना अपनी सहेली के प्रति उसके सच्चे प्यार को दर्शाता है।

अंत में जब रेमी और मलसोमा की शादी होती है तो बियककूङी अपना कर्तव्य का निर्वाह करने में पीछे नहीं हटती। दुल्हन की सहेली होने नाते सम्पूर्ण धार्मिक अनुष्ठान आदि भी वह बड़े मनोयोग से निभाती है इस तरह कथानक के सह पात्रों में बियाककूङी का चारित्रिक गुण अपना अलग छाप छोड़ता है।

पी जाई का परिचय

पी जाई का असली नाम Ms. Katie Hughes था। यह सन् 1924 में Wales से ईसाई मिशनरी के रूप में मिज़ोरम आई थी। चातुर्दिक गुणो से सम्पन्न Ms. Katie Hughes ख्रिस्टिय भजन की अच्छी गायिका थी। लोगों को भी सिखाया करती थी। अतः स्थानीय लोगों ने उनका नाम अपनी भाषा में Pi Zaii (पी जाई) रख दिया। पी जाई का शाब्दिक अर्थ 'वह सम्मानित महिला जो गाती रहती है'। इन्हें भी लोगों ने हमेशा गाती रहने वाली मिशनरी के रूप में स्वीकार किया।

ईसाई मिशनरी थी, ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार इनका मुख्य उद्देश्य था। परंतु धर्म प्रचार के साथ साथ विशेषकर युवा-युवतियों को जीविकोपार्जन के लिए तैयार करना इनके मिशन का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य था। अतः धर्म प्रचार के साथ साथ विद्यालाय में भी पढ़ाती थी और लड़कियों के लिए सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण कैन्द्र भी इन्होने आइज़ोल में

खोला था। यहाँ दूरदराज के गाँवों से लड़कियाँ सिलाई-कढ़ाई सीखने आती थी। वे आगे जाकर इसे जीविकोपार्जन का साधन भी बनाती थी।

कथानक में सियालसूक गाँव के पादरी की बहना बियाककूङी जो इनके यहाँ सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण ले रही थी की सहायता से मुख्य पात्र वानललरेमी को भी प्रशिक्षण लेने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

रेमी के सुख-दुख में पी जाई ही उसका संबल रहा है। अपनी ममतापूर्ण छात्र छाया में अनेकानेक दुखों की मारी वानललरेमी के लिए पी जाई ईश्वार का अवतार बन उसे अपने स्नेहपूर्ण आगोश में संभालती है। जब रेमी और मलसोमा की रैएक में शादी होने से पहले कुछ अप्रत्यासित घटनाओं के चलते शादी नहीं हो पाती है तब दुखित और बेसहारा रेमी को पी जाई के पनाह मिलती है। इस तरह कथानक में पि जाई केवल इस धर्म प्रचारिका ही नहीं बल्कि समाज सुधारक, जीविकोपार्जन के लिए युवाओं को तैयार करने वाली और जमाने के मारे बेसहराओं को अपने अगोश में लेकर उन्हें जीवन के प्रति आशा का दीप दिखाने वाली ममतापूर्ण हृदय की महिला है।

पी जाई के कारण ही मलसोमा और रेमी की शादी में तत्कालीन कई अंग्रेज़ आधिकारीयों ने भी वर-वधू को आशीर्वाद देने आए थे । साथ ही शादी में काँटे जाने वालों कैक का प्रचलन का सुभारम्भ पी जाई द्वारा की गई थी।

इस प्रकार उपन्यास के कथानक में पी जाई सहपात्र के रूप में आती तो है पर इनके योगदान को मुख्य पात्र से किसी भी दृष्टि से कम करके नहीं आंका जा सकता ।

ललखोथङी का परिचय

सहपात्र के रूप में ललखोथङी का चरित्र कथानक को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रैएक गाँव की सुंदर युवती अपने गाँव में आए सुंदर और सुशील युवक मलसोमा की ओर आकर्षित होते है। आगे वह उसे प्यार करने लगती है। युवाधड़कन अपने लिए योग्य साथी को तलाशे,

यह कोई विचित्र बात नहीं है। परंतु विचित्र घटना तभी घटती है जब एक तरफा प्यार हार जाता है तथा वह बदले की भावना से पागलपन की हद पार कर जाती है।

ललखोथङी उर्फ लली पात्र की यहीं विशेषता कथानक में देखने को मिलता है।

जब उसे पता चलता है कि मलसोमा रेमी को चाहता है तो उसका दिल बुरी तरह टूट जाता है। बदले कि भावना के चलते वह फौजी वानथङा से शारीरिक संबंध बना लेती है।"*वनथंगा मीठे सवर में उसकी प्रशंसा कर रहा था। लाली तब क्या कर सकती थी? ओ फरिश्तों, लाली की रक्षा करो! वह वन थंगा के जाल में फँसने जा रही है।...लाली के पास सिवाय उसकी बात मानने के कोई चारा नहीं था। वह अपनी शुचिता जिसके लिए उसे गर्व था, खो बैठी।*"[9] वानथङा तो अपनी छुट्टी समाप्त कर लोट जाता है पर लली अपने पेट में पल रहें अवैध संतान को लेकर चुप्पी साध लेती है। परंतु वह ऐसा व्यवहार करती है कि उसके अपने ही नहीं बल्कि लोगों को भी शक होने लग जाता है कि हो-न-हो उसके पेट में मलसोमा का ही अवैध संतान पल रहा है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कुछ सीमा तक ललखोथङी को कथानक में खलनायिका के पात्र के रूप में लिया जा सकता है।

इस पात्र की दो बड़ी विशेषताएँ देखने को मिलती है:

क) प्रेम में असफल मन-मास्तिष्क का विभत्स्य रूप अनादिकाल से मानव मन की सच्चाई रही है।

ख) मलसोमा का भविष्य में जाकर फौजी ऑफसर बनने और रेमी के साथ आइज़ोल में भव्य रूप से विवाह रचाने और पी जाई द्वारा सर्वप्रथम शादी के उपलक्ष्य में कैक काँट कर खुशी मनाने की प्रथा का मिज़ो समाज में परिचय देना आदि को ललखोथङी के प्रतिशोद्ध का ही फल माना जा सकता है।

पुरुष पात्र –

रौछीङा का परिचय

उपन्यास की कथानक में रौछिङा एक ऐसा पात्र है जिसका चरित्र रेमी का जीवन ही नहीं बल्कि अपनी बेटी के जीवन को भी नरक बना देता है। रौछीङा शराबी ही नहीं बल्कि धूर्त व्यक्ति था। रेमी के पिता एल्डर लियाना भी रौछीङा के साथ अपनी छोटी बहन की शादी कराने के खिलाफ थे। परंतु परिस्थिती वश वे अपनी बहन को रोक न सके। इस प्रकार रौछीङा ने अपना परिवार जमाया था। वह शराबी ही नहीं गुस्सैल प्रवृत्ति का धूर्त व्यक्ति था। पत्नी पर भी हाथ उठा लेता था।

उसने अपने घर को शराबियों का अड्डा बना लिया था। गाँव के मुखिया का मुख्य सलहकार का पुत्र ललमुआना से उसकी काफी छनती थी। ललमुआना उसी की तरह शराबी था।

पिता की मृत्यु के बाद जब रेमी उनके यहाँ रहने लगी तो रौछीङा को रेमी का गिर्जा जाना, प्रार्थना करना आदि राज़ नहीं करना आया। वह रेमी की शादी ललमुआना से कराना चाहत था। परंतु शराबी ललमुआना को रेमी ही नहीं बल्कि उसकी बुआ भी पसंद नहीं करती थी। ललमुआना के प्रति पत्नी और रेमी की नकारात्मक सोच के कारण उसका गुस्से में यह कहना कि, *"मैं परिवार का मुखिया हूँ। मैंने तय कर लिया हैं कि बीज बोने के बाद इस लड़के से इसे ब्याह दिया जाएगा। इसके बदले में मुझे डबल बैरेल बंदूक मिलेगी। तुझे पता हैं कि इस बंदूक की मुझे कितनी बड़ी चाहत है। लेकिन मेरे पास खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। क्या तू मेरा विरोध करेगी?"*[10]

उसके इस कथन से उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को बखूबी समझा जा सकता है। वह अपने स्वार्थ की पुर्ती अर्थात डबल बरैल बंदूक के लालच में रेमी का विवाह अपने निकम्मा और शराबी मित्र ललमुआना से कराना चाहता है।

अपनी पत्नी और बच्चों पर भी बिना वजह हाथ उठाने से भी परहेज न करने वाला रौछीङा ललमुआना के बारे में सब कुछ जानते हुए

भी अपनी बेटी रौसङी की शादी उससे करा देता है। जो आगे जाकर टूट भी जाती है।

परंतु अंत में पवित्र आत्म की संगति पाकर उसका मन पछतावे से भर जाता है।

मुक्तिदाता यीशु मसीह के चरण में उसके जीवन का कायाकल्प हो जाता है। सभी पुरानी बुरी आदतों को त्याग कर वह सच्चा ईसाई बन जाता है। मोक्ष और मुक्ति को पाकर वह धन्य देता है। इस तरह नए रौछिङा का जन्म होता है।

रौछीङा के चरित्र में परिलक्षित दो विपरीत पक्ष कथानक को गति देने में अहम भूमिका निभाता है।

ललमुआना का परिचय:

'मलसॉमा' शीर्षक उपन्यास के सहपात्रों में ललमुआना का पात्र अन्य सह-सहायक पात्रों की अपेक्षा काफी महत्वपूर्ण है। वह फूलपुई गाँव का रहने वाला शराबी युवक और मुख्य के प्रमुख सलाहकार का बेटा है। इसलिए तत्कालीन मिज़ो समाज की आर्थिक दृष्टि से देखे तो वह बंदूक और पैसे के बल पर बहुत कुछ कर गुजरने की बात कहने से गुरेज नहीं करता।

पिता की मृत्यु के बाद रेमी अपनी बुआ के यहाँ रहने लगती है। बुआ का पति रौछीङा शराबी है। मुख्य सलाहकार के पुत्र ललमुआना से उसकी काफी छनती है क्योंकि दोनों ही शराब पीने की शौकीन है। रौछीङा ललमुआना से रेमी का सौदा इस प्रकार करता है कि ललमुआना उसे बंदूक देगा और वह रेमी से उसका शादी करा देगा।

परंतु रेमी को वह राज़ी नहीं कर पाता है। मित्तभाषी शालीन स्वभाव की रेमी के दिल में शराब और शराबी के लिए कोई स्थान नहीं है। इस सच्चाई से ललमुआना अच्छी तरह वाकिफ है तभी वह कहता है की, *"मेरा पीछा नहीं कर रही है, वह मुझसे नफरत करती है। कहते हैं कि लड़कियाँ और पिल्लों को निकट परिचय से मोहा जा सकता है। एक समय आएगा जब वह मुझसे प्यार करेगी। समय का इंतज़ार और पैसा मुझे जीता देगा।"*[11]

इस कथन के साथ आरंभ में ललमुआना दिखाई देता है परंतु कथानक ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जाता है यह पात्र स्वतः ही रेमी की जिन्दगी से अलग हो जाता है। हालांकि रौछीङा अपनी पुत्री का हाथ ललमुआना के हाथ में सौपकर बहुत ही बड़ी गलती कर बैठता है। क्योंकि कुछ महीनों के बाद ही शराब के लत के चलते वह पत्नी को तलाक दे देता है।

एल्डर कोला का परिचय

एल्डर कोला रिश्ते में रेमी का सगा मामा है और रैएकगाँव में रहता है। मरने से पहले रेमी के पिता ने भी उनके मरने के बाद रेमी को मामा एल्डर कोला के यहाँ जाकर रहने के लिए कहा था। एल्डर कोला एक अच्छा ईसाई ही नहीं बल्कि मिलनसा व्यक्तित्व वाले खाते-पीते घर का मालिक है। इनके इन्हीं विशेषताओं के कारण सभी गाँव वाले उनका काफी मान सम्मान करते थे।

जब अलगाववादी तत्व के कारण बाहर वालों के लिए आइज़ोल में रहना असंभव होने लगा तो अपनी संरक्षिका पी जाई की सलाह के अनुसार रेमी भी रेएक जाकर मामा एल्डर कोला के यहाँ रहने लगी।

पहली बार जब मलसोमा और रेमी की शादी की बात चली थी उस समय भी एल्डर कोला मामा की जगह रेमी के पिता बन अपना फर्ज निभाने को तैयार था। परंतु यह शादी स्थगित हो गई थी।

आइज़ोल से रैएक आने के बाद रेमी ने मलसोमा से शादी करने से पहले का अपना सम्पूर्ण समय इन्हीं के घर बिताया। जब शादी नहीं हो पाने के कारण रेमी दुख में खोई हुई थी, तब भी मामा कोला अपनी पुत्री रेमी की खुशी के लिए उसे बियाकी के साथ उनके गाँव में क्रिसमास मनाने का आज्ञा दिया। "*...वह जहाँ भू खुश रहे वहाँ रह सकती है। मैं उसके लिए यहीं चाहता हूँ।...*"[12] मामा कोला तत्कालीन मिज़ो माँ-बाप से कई आधुनिक भी हैं।

सरल स्वभाव के एल्डर कोला का मन बहुत ही नैक और साफ था। जब मलसोमा और रेमी की शादी आइज़ोल में बड़ी धूम-धाम के साथ

हुई थी तब अत्याधिक वृद्ध होने के कारण उस शादी में सम्मिलित नहीं हो पाए थे।

इस तरह एल्डर कोला 'मालसॉमाँ' उपन्यास के सहायक पात्रों में अपना अलग ही स्थान रखता है।

फौजी वानथङा का परिचय

रैएक गाँव का युवक वानथङा फौज में जाने के बाद छुट्टी मनाने अपने गाँव आया हुआ है। वह गाँव की युवती ललखोथङी को चाहने लगता है। ललखोथङी भी मलसोमा से अपना एक तरफा प्यार में असफल होने के कारण मलसोमा की प्रेमिका से खाए-खाए बैठी थी। अतः वानथङा को उसके साथ संबंध बनाने में ज्यादा महेनत नहीं करना पड़ा। वानथङा तो अपनी छुट्टी बिताकर लौट जाता है परंतु ललखोथङी के पेट में पल रहा उसकी अवैध संतान मलसोमा और रेमिके लिए अभिश्राप बन जाता है।

इस प्रकार बिना किसी वाद-संवाद के वानथङा कथानक में बहुत बड़ी घटना का कारण बन जाता है।

तथापि वानथङा मस्त-मौला फौजी था परंतु धोखेबाज या चालाक प्रवृत्ति का फौजी नहीं था ललखोथङी की अमानवीय व्यवहार के कारण मलसोमा और रेमी की शादी न हो पाने का दुख उसे भी था और वह एक तरह से स्वयं को भी दोषी मानता था। इस प्रकार वानथङा मस्त-मौला फौजी होने के साथ-साथ सच्चे दिल का युवक था जो मलसोमा और रेमी के प्रति स्नेह भाव रखते हुए भी परिस्थिति के कारण उनके पास नहीं आ सका था।

सहायक मोइया का परिचय

उपन्यास के कथानक में मलसोमा के पास रहने वाला मोइया को उसके सहायक के रूप में दिखाया गया है। किशोर मोइया मलसोमा के सभी कामों को करने के साथ-साथ घर का देख भाल भी करता है। तथापि, इसकी उपस्थिति उपन्यास के अंत तक बनी रहती है फिर भी मुख्य पात्र के रूप में मोइया की भूमिका को नहीं लिया जा सकता। फिर भी कहीं न कहीं

इस पात्र की उपस्थिती कथानक को गति देने में अहम भूमिका तो निभाता ही है।

फौजी ललमोइया का परिचय

फौज में जाने के बाद मलसोमा और ललमोइया की मुलाकात पोस्टिंग के दौरान होती है । जब मलसोमा और रेमी की शादी होती है तो ईसाई धर्म के अनुसार दूल्हे के मित्र के रूप में फौजी ललमोइया अपना फर्ज निभाता है। इसके अलावा कथानक में इनकी कोई विशेष भूमिका नहीं के बराबर है।

इस प्रकार उपन्यास में छोटे-बड़े अलग-अलग 34 पात्र समाहित है। परंतु कथानक की दृष्टि से इनमें से दस विशेष पात्रों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है और अन्य पात्रों को गौण पात्र के रूप में देखा गया है।

ग) उपन्यास में अभिव्यक्त मिज़ो समाज की स्थिति

I) सामाजिक स्थिति:

मिज़ो समाज की सामाजिक स्थिति का अध्ययन कई संदर्भों में की जा सकती है। 'मालसॉमा' उपन्यास के कथानक में मिज़ो समाज की कुछ छोटी-बड़ी विशेषताओं का संदर्भानुसार उल्लेख किया गया है। जिनकी सामाजिक पृष्ठभूमि तथा उपयोगिता को इस प्रकार देखा और समझा जा सकता है।

1) <u>खान पान</u>:

विश्व की अन्य आदिवासियों की तरह ही मिज़ो जन जातियों में भी कुत्ते का मांस खाने का प्रचलन है। परंतु हर कोई इसे नहीं खाता लेकिन जो लोग कुत्ते का मांस खाते है वे बड़े चाव से खाते है।

मित्र मंडली या किसी विशेष मौके पर जहाँ कुछ लोग मिलते है तो उनका कुत्ता काट कर चावल के साथ पकाकर खाना मिज़ो समाज की खान-पान की दृष्टि से अपनी अलग विशेषता है।

प्रस्तुत उपन्यास में भी अंकल रौछीङा और उनके कुछ नशेड़ी मित्रों द्वारा कुत्ते का मांस खाने का जिक्र किया गया है।

2) <u>झूम खेती</u> :

मिज़ो समाज में प्रारम्भिक काल से ही जंगलों को काट कर झूम खेती करने की प्रथा चले आ रही है। सरदार या मुख्य तथा उनके विशिष्ट सलाहकारों के देख-रेख में प्रत्येक परिवार अपनी आवश्यकता एवं देख-रेख करने की क्षमता के अनुसार जंगल काटते हैं। जंगल काटने का मौसम उत्तरी मिज़ोरम में दिसंबर की माह दक्षिण मिज़ोरम में जनवरी की महीना होता है। मार्च महिने तक सूखने के लिए छोड़ने के बाद महिने के अंत या अप्रैल के प्रथम सप्ताह में कटे जंगल को जलाया जाता है। इसके बाद अपने अपने झूम खेती में अस्थायी झोपड़ी जिसे स्थानिय भाषा में 'ठ्लाम' कहा जाता है, बनाया जाता है।

इसके बाद धान का बीज डाला जाता है। यह विशेषकर युवा वर्ग के लिए सामुहिक रूप में हूँसी-खुशी काम करने का विशिष्ट समय होता है। साल भर में तीन बार झूम खेती में उसे घाँसों की सफाई किया जाता है। साल के आंत अर्थात् नवंबर माह को धान की कटाई बड़े ज़ोर-शोर के साथ की जाती है। झूम खेती के लिए जंगल काँटने से लेकर फसल की कटाई, धुनाई और ढोकर घर पहुँचाने तक का कार्य थकानपूर्ण और संघर्षपूर्ण होते हुए भी युवक-युवतियाँ हँसी-खुशी के साथ मिल जुलकर सभी कष्ट और दुखों का सामना करते हैं। मिज़ोरम में जीविकोपार्जन का यह साधन पुर्खों से चली आ रही है। धान के साथ-साथ मक्की, ज्वार, अरबी, कद्दू आदि विभिन्न प्रकार के मौसमी सब्जियाँ भी झूम खेती में उगाई जाती हैं।

संघर्षपूर्ण कार्य होते हुए भी झूम खेती के आरंभ से लेकर अंत तक की कठिन गतिविधियाँ युवाओं के लिए रोमांच और खुशी से भरा होता है । क्योंकि यह उन में एकता, आपसी-समझ, एक दूसरे के प्रति प्यार और विश्वास आदि भावों को जगाने का प्रबल साधन होता है।

3) मरण और सामाजिक प्रतिक्रिया :

पुराने समय से आज तक मिज़ो समाज की सबसे बड़ी खूबी दुख और सुख में खुले मन से एक दूसरे का साथ देना रहा है। जब किसी की मृत्यु होती है तो, सभी गाँव वाले मृतक के घर एकत्र होते है। रात भर भजन कृतन का दौर चलता है बीच-बीच में धार्मिक प्रवचन भी एल्डर व अन्य धार्मिक अगुआई कर्ता द्वारा दी जाती है। यदि रात भर जागने की नौबत आती है तो गाँव के सभी युवक और युवतियाँ दुखित परिवार के साथ उन्हें सान्तवना देते हुए जागते हैं। कब्र खोदना, लाश दफनाना और कब्र को चिन्हित करने के लिए आवश्यकतानुसार पत्थर और लड़की बाँस की सहायता से बार बनाना आदि सभी आवश्यक काम युवावर्ग ही करते है। इसमें जात-पात, ऊँच-नीच आदि के लिए कोई स्थान नहीं होता । सभी आवश्यक काम को मिलजुल कर सम्पन्न करते हैं। मृतकों के घर जवान लड़के कुछ दिनों के लिए रात को सोते है इसका मुख्य उद्देश्य उनके घर के गंभीर वातावरण को सामान्य बनाना होता है।

4) सामाजिक एकता का भाव:

इसी प्रकार किसी भी जरूरत मंद के लिए गाँव वालों का मिलकर घर बनाना, झूम-खेती के आवश्यक कार्यों को निपटाना आदि काम गाँव वाले बिना किसी बहाने करके मिलकर सम्पन्न कर देते हैं। यह एक ऐसी सामाजिक क्रिया है जिसे हम मिज़ो समाज का उत्तम प्रवृत्ति कह सकते हैं। उपन्यास में गाँव वालों द्वारा मलसोमा का घर बनाने पीछे भी यही सामाजिक सेवाभाव परिलक्षित हैं।

5) खाद्य वस्तुओं का खुशी-खुशी आदान प्रदान का चलन:

मिज़ो समाज जातिय ऊँच-नीच और छुआछूत विहीन समाज है। इस समाज में शादी-विवाह, खाना-पीना आदि के लिए जातिय ऊँच-नीच आदि का कोई बंधन नहीं हैं । अतः साग-सब्जी से लेकर माँस-मछली तक कोई भी पड़ोसी अपने पड़ोसी की आवश्यकता को देखकर अपने हिस्से का कुछ भाग उन्हें दे देते हैं। इसे स्थानीय भाषा में 'चोह्मेह सुआह' कहते हैं। यह

क्रिया समाज में एक दूसरे को आपस में जोर ने और उनमें आपसी समझ और प्यार बढ़ाने में सहायक होता है।

6) ईमानदारी और पर-सेवाभाव:

मिज़ो समाज का नींव पर-सेवाभाव और ईमानदारी को माना गया है। अतः समाज के प्रत्येक गतिविधियों में सभी लोग मिलजुल कर हिस्सा लेते हैं भागीदार बनते हैं। जाती-पाति की सीमा न होने के कारण सामाजिक गतिविधियों में लोगों को सामुहिक रूप में भाग लेने अथवा कार्य करने में काई असुविधा नहीं होती। किसी के यहाँ संतान को पैदा होने की खुशीपूर्ण माहोल से लेकर चाहे वह शादी विवह का वातावरण हो या जरूरत मंद की सहायता के लिए रात-दिन संघर्ष पूर्णकार्य में खपने की बात हो सभी मिल जुलकर परिस्थिति का सामना करते है। इस तरह समाज में सौहादपूर्ण भाव को आगे बढ़ाते है। यह मिज़ो समाज की ऐसी विशेषता है जो समाज के प्रत्येक सदस्य को आपस में जोड़े रखता है।

प्रस्तुत उपन्यास में भी विभिन्न परिवेश में मिज़ो समाज की किसी न किसी सामाजिक विशेषत या पक्ष से संबंधित घटनाओं का उल्लेख किया गया है। जैसे- रेमी के पिता एल्डर लियाना की मृत्यु पर लोगों द्वारा रेमी का साथ देने एवं सभी सामाजिक एवं धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न करना आदि।

सर्पदंश से घायल मलसोमा का रेमी द्वारा अकेली रात भर जाग कर देखभाल करना और दूसरे दिन सामूहिक रूप में उसकी सहायता के लिए गाँव वालों का आना आदि सभी क्रियाएँ मिज़ो समाज की विशेषता का द्योतक है।

II) धार्मिक स्थिति :

धार्मिक स्थिति की दृष्टि से देखे तो मिज़ो समाज के अतीत और वर्तमान में बहुत बड़ा अंतर दिखाई देती है।

ईसाई धर्म के आगमन के पहले मिज़ो समाज की स्थिती –

समाज में कच्ची शराब का सेवन पुरुष और स्त्री के लिए सामान्य बात हुआ करती थी। हर घटना पर शराब का मोहर लग ही जाता था। जैसे शत्रु

का सिर काटकर ले आने वाले वीर का स्वागत कच्चे शराब के सेवन और नाच-गान से किया जाता था। प्रसिद्ध गायिका Saikuti (साइकूती) द्वारा अपने प्रेमी का हत्यारे Lai (लाइ) जाती के वीर के सिर काटकर ले आने वाले वीर के प्रति यह कहना कि,

"Laimî man la, tanchhâwn ka hlan ang che,

Tualah her la, lenrual suherin."[13]

हिन्दी अनुवाद :

"पकड़ लाए जो 'लाइमी' को

विजय चिह्न तानछोन उसे पहनाऊँगी,

विजय उत्सव में-निर्भाक नाचेगा वह,

मेरे समतल आँगन पर"[14]

उन दिनों शराब के चलन को उद्धरित करता है।

Darpawngi (दारपोङ्गी) द्वारा यह कहना की,

"Tahpuan kan khâwng mawh e

Tahpuan kan khâwng mawh e

Thlûm hâng kai tha, Laldânga rûnah

Tlaini ka lêng leh e."[15]

हिन्दी अनुवाद:

"बुना नहीं जाता, बुना नहीं जाता-

सुंदर कपड़ा, बुना नहीं जाता,

ललदङ के घर, कच्ची शराब का सुरूर-

मदहोशी में यूँ फिर –शाम बसर किया।

स्पष्ट है – उन दिनों कच्ची शराब का सेवन आम बात हुआ करती थी। दारपोङी सुंदर चादर बुनना चाहती थी। परंतु ललदङ के घर से आती शराब की खुशबू उसे अपनी ओर खींचने लगी; फिर क्या था। कच्ची शराब का दौर दिन भर चलने लगा। शाम भी मदहोशी में ही गुजर गई। मदहोशी भरे दिनचर्या को दारपोङी ने अपनी इन पंक्तियों में बेबाक होकर अभिव्यक्त लिया है।"[16]

इन गीतों से स्पष्ट हो जाता है कि जीवन के सुख-दुख में शराब साए की तरह समाज के साथ चलता था। इतना ही नहीं विभिन्न औशरों पर चाहे वह विषादपूर्ण हो या खुशी का क्षण शराब की उपस्थिती अनिवार्य माना जाता था। तीज त्योहार यथा *मीम्कूट , चपचार कूट* और *युवा-युवतियों* द्वारा मनाई जाने वाली Chawngchen (चोङचेन) सभी औशरों पर शराब का होना अनिवार्य हुआ करता था।

परंतु ईसाई धर्म के आगमन के बाद धीरे-धीरे शराब का चरण कम होता गया। इसका मुख्य कारण ईसाई धर्म की शिक्षा में शराब को शैतान का आस्त्र-शास्त्र मानना या सीधे शब्दों में कहे तो इसे पाप का मुख्य कारण मानना है। अतः धर्म की शिक्षा के अनुसार शराब सेवन को पाप माना है इसलिए, धीरे-धीरे ज्यू-ज्यू लोगों में ईसाई धर्म के प्रति आस्था बढ़ती गई त्यू-त्यू उनके जीवन से शराब भी दूर होता गया। यह उपन्यास का वह मूल मंत्र है जिसे लेखिका ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है।

शराबी रौवा के मूल अवगुण का कारण उसका अत्यधिक शराब का सेवन करना है जिसके चलते उसका सारा परिवार हमेशा दुखित रहता था। शराबी ललमुआना के हाथ देकर उसके जीवन को बरबाद करने के पीछे भी उसका शराबी होना ही है।

परंतु जब रेमी और उसकी सहेली के द्वारा उसे ईसा मसीह के प्यार, बलिदान और पापों के उद्धार के लिए यीशु मसीह के वचन सुनने का मौका मिलता है तो उसके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन होता है। यथा सभी अवगुणों को त्यागकर एक अच्छा ईसाई बनना।

ईसाई धर्म के आगमन से पहले मिज़ो जन-जातियों की धार्मिक व्यवस्था एवं मान्यताएँ:

1) विश्व के अन्य जन-जातियों की तरह ही ईसाई धर्म के आगमन से पहले मिज़ो जन-जातियाँ भूत-प्रेत, आत्मा तथा अन्य कई अन्धविश्वासों को लेकर अपना अलग ही धार्मिक दृष्टिकोण रखता था। इस दृष्टिकोण से वे अपने धर्म को 'Sakhua' कहते थे। 'Sakhua' दो शब्दों के योग से बना शब्द है यथा- 'Sa' जिसका अर्थ है जानवर 'Khua' जिसका अर्थ है गाँव या पहड़ इस प्रकार 'Sakhua' का अर्थ धर्म या किसी काल्पनिक अंधविश्वास की पुष्टि के लिए किया जाता था।

   इस 'Sakhua' के अंतर्गत एक बड़ी विचित्र बात हुआ करती थी। जैसे प्रत्येक परिवार का अपने काल्पनिक ईश्वार को खुश करने के लिए किसी एक जानवर को अपना 'Sakhua' मानना। जैसे- एक परिवार का 'Sakhua' स्वार है और उसकी पत्नी के परिवार का 'Sakhua' बकरा, तो लड़का बकरा नहीं खाएगा और लड़की स्वार नहीं खाएगी। शादी के बाद खाने में जब स्वार का मांस बंता था तो घर का बुजुर्ग बहू को, "लो इसे खा लो, यह तो बकरी का मांस है।" बहू जानबूजकर अनजान बनती थी और स्वार का मांस खा लेती थी। इस तरह वह अपना कूल धर्म छोड़कर पति के धर्म को अपना लेती थी।

2) मिज़ो पूर्वजो का मानना था कि मरने के बाद प्रत्येक आत्मा रिह्दील (Rihdil)जाती है। और यह भी मान्यता थी कि यदि उसने जीवन में कुछ किया उसके आधार पर ही मृतलोक यानी पियालराल (Pialral) में उसके रहने की व्यवस्था की जाती है। मिज़ो कवियत्री Darpawngi

ने अपने तीन साल के बेटे की मृत्यु को लेकर इस पंक्ति बड़े दुखी मन से कहा है-

"Ka awihlai, ka puaklai ve kha…

Lungrâwn a liam zo ve, zing phûlah,

'Ka chûn ka ngai' ti ve maw?'[17]

इसका हिन्दी अनुवाद –

"जिसे खिलाती थी गोदी में कभी लगाती सीने से-

समा गया कब्र की गोदी में-

चला गया आत्माओं के देश

क्या कभी कहा होगा-उसने-

"मुझे माँ की याद आती है।

पुत्र विछोह के शोक में व्यथित माँ की अंतर्गत वेदना को बहुत ही सहज परंतु प्रभावपूर्ण ठंग से दारपोङी (Darpawngi) ने इन पंक्तियों में व्यक्त किया है। तीन वर्ष के मासूस पुत्र को खाने का दुख:तिस पर मृत्युलोक का विचित्र वातवरण। माँ को खोजता एक मासूम की भयातुर आँखों की कल्पना कर यह कहना कि 'क्या मेरे पुत्र को वहाँ कोई ऐसी आत्मा मिली होगी-जिससे वह कह सके कि – मुझे माँ की याद आती है। मेझे मेरे माँ से मिला दो।"[18]

3) एक विचित्र मान्यता (जिसे धार्मिक और सामाजिक दोनों ही दृष्टि से देखा और लिया जा सकता है।) थी कि अपने जीवन काल में जो जितना वीर और पार्यक्रमी होता था। मरने के बाद भी पियालराल में उसका उतना ही मान सम्मान किया जाएगा। अतः इस विश्वास के चलते जब किसी सरदार या वीर की मृत्यु होती थी तो उनकी लाश के साथ जीवित नौकर को भी दफ्ना दिया जाता था। मान्यता थी कि यह नौकर जाकर पियालराल में भी मालिक की उतनी ही सेवा करेंगे जितना

उनहोंने जीवन काल में किया था। इस विश्वास के चलते ही तत्कालीन सरदार, युद्धार आदि अपने जीवनकाल में शत्रुओं के सिर काटकर अपनी वीरता की परिचय देना ही अपना सबसे बड़ा कर्ताव्य मानते थे।

परंतु 1894 को जब मिज़ोरम में ईसाई मिशनारियों ने प्रवेश किया। यथा J.H. Lorrain और F.W.Savidge तो उनका मुख्य उद्देश्य तत्कालीन मिज़ो जन-जातियों के धर्म के प्रति अज्ञानता तथा अंधविश्वास को दूर करना था। अतः ईसाई धर्म की शिक्षा के अनुसार भूत-प्रेत, आत्मा इत्यादि इत्यादि पर यीशु मसीह ने क्रूस में स्वयं को बलिदान कर इन सब को हमेशा हमेशा के लिए जीता है। अतः जो भी यीशु मसीह को विश्वास करेगा वे सब अंधविश्वास के साधन से दूर हो जाएँगे।

ईसाई धर्म का प्रचार करने के साथ-साथ इन दोनों मिशनरियों ने मिज़ो भाषा की प्रकृत्ति के अनुसार रोमन लिपि में अमूल-चूल परिवर्तन कर इसे लिपि बद्ध किया। इस तरह मिज़ो भाषा को नई लिपि मिली। साथ ही आइज़ोल जैसे शहर में ही नहीं बल्कि दूर दराज के गाँव तक धीरे-धीरे लोगों ने ईसाई धर्म को स्वीकार करना आरंभ किया।

सन् 1903 तक आते-आते सभी मिज़ो जन जातियों के लोग ईसाई धर्म को अपना चुके थे। ईसाई धर्म की मान्यताओं के अनुसार प्रत्येक वर्ष क्रिश्मास को सारे मिज़ोरम में बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। गिर्जा घरों में प्रवचन स्तुति गीत आदि के साथ-साथ भव्य-भोज का अयोजन किया जाता है।

नए वर्ष का स्वागत भी धार्मिक रीति रिवाजों के अनुसार ही किया जाता है। प्रतिवर्ष मार्च और अप्रैल माह में यीशु मसीह के पापियों को बचाने के लिए क्रूस पर बलिदान होना तथा इनके तीन दिन पश्चात फिर जी उठने को गुड फ्राइडेय और ईस्टर सनडे के रूप में बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है।

मिज़ोरम ही नहीं वरण भारत के विभिन्न प्रदेशों के साथ-साथ विश्व के कुछ देश यथा अफ्रीका, थाइलेन्ड, म्यानमार,चीन तथा नेपाल आदि

देशों में ईसाई धर्म के प्रचार करने के लिए कई प्रचारको को मिज़ोरम के विभिन्न गिर्जा घरों द्वारा भेजा गया है। इस प्रकार अपने धर्म के प्रति निष्ठा रखने की शिक्षा भी गिर्जा घरों में बचपन से ही दी जाती है।

इन्हीं धार्मिक मान्यताओं के चलते प्रस्तुत उपन्यास में भी एल्डर लियाना की सुपुत्री रेमी का पालन पोषण भी धार्मिक शिक्षा के अंदर ही हुआ जिसका प्रभाव रेमी के चरित्र में देखा जा सकता है। रेमी ही नहीं मलसोमा, बियाककूङी, एल्डर कोला आदि पात्रों के जीवन में भी ईसाई धर्म की शिक्षा और मार्ग दर्शन के विभिन्न रूप एवं फल दिखाई देता है।

रेमी और मलसोमा की शादी भी ईसाई धर्म के विधि के अनुसार ही होता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक भी ईसाई धर्म की शिक्षा, मान्यता के साथ-साथ इसे न मानने वालों की जीवन चर्या के अवगुणों आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास क्यी गया है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत उपन्यास का मूल आधार ईसाई धर्म के शिक्षा पर आधारित है। लेखिका का मूल उद्देश्य भी बुरी आदतों को छोड़कर यीशु मसीह पर विश्वास करने की ओर लोगों को ले जाना है। इस संदर्भ में उपन्यास का सहायक पात्र शराबी रौछीङा के जीवन में आए परिवर्तन को साक्ष्य के रूप में देखा जा सकता है।

धर्म की दृष्टि से उपन्यास का उद्देश्य:

प्रस्तुत उपन्यास में भी उपन्यासकार ने ईसाई धर्म की उत्तम शिक्षा और इसे विश्वास कर धार्मिक आज्ञा को मानने वालों के बारे में पात्रों के माध्यम से बहुत कुछ कहने का प्रयास किया है।

मसलन उपन्यास के मुख्य पात्र मलसोमा और रेमी इन दोनों शराब ही नहीं बल्कि सभी नशीले पदार्थों से परहेज करने वाले है। ईश्वार पर विश्वास करना, झूठ न बोलना अपने से बड़ो की आदर करना तथा उनका कहना मानना और दूसरों की बुराई नहीं करना न ही चाहना तथा घोर आपति या मुश्किलों के समय भी विचलित न होकर ईसा-मसीह पर

विश्वास रखना आदि सभी धार्मिक प्रवृत्ति इन दो पात्रों में ही नहीं बल्कि अन्य त

बीमार एल्डर लियाना मिसेज छीडी से यह कहना कि,

"मिस्टर लियाना बोले-"हाँ, में चर्च जाना चाहता हूँ। लेकिन में दिन पर दिन कमज़ोर होता जा रहा हूँ। मेरा स्वास्थ्य मुझे चर्च जाने की इजाज़त नहीं देता। मुझे कोई विशेष दर्द नहीं है, लेकिन कमज़ोरी बहुत लग रही है। ईश्वर की कृपा से में ठीक हो जाऊँगा।... "[19]

लियाना के इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर के प्रति उनका विश्वास कितना गहरा और अटूट था।

शराबी रौछीङ (रेमी की बुआ के पति) द्वारा रेमी से कहना कि, "*तो यदि मैं जीसस में विश्वास रखूँ तो क्या मैं बच जाऊँगा?"*[14]

रेमी का जवाब , *"अंकल, आप मरने नहीं जा रहे हैं। यदि आपको उसमें विश्वास है, तो वह आपके सारे रोग ठीक कर देगा। आप बाकी जीवन उसकी सेवा में बिताओगे।"*[20]

इन दो कथनो से स्पष्ट हो जाता है कि जिजस के प्रति उनका विश्वास अपने पुरखों के धर्म के प्रति उनकी निराशा को स्वतः ही व्यक्त करता है।

जब रेमी और उसकी सहेली बियाकी, रौछीङ की चंगाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है और ईश्वर उनकी प्रार्थना सुनकर रौछीङ को तन, मन और आत्मिक चंगाई देता है तो उनसे रौछीङ का यह कहना कि, *"मुझे बहुत खुशी है कि तुम यहाँ आई। मेरा मन ताज़ा हो गया। जो पाप मैंने किए हैं उन्हें लेकर मैं बुरी तरह परेशान हूँ। पर मैं स्वयं उन्हें हटा नहीं सकता। तुम जो कह रही हो वह अब मेरी समझ में आया। अगर मैं मर जाता हूँ, तो जीसस मेरी रक्षा करेंगे।"*[21]

इस प्रकार अंधविश्वास से पूर्ण पुरवाजों के धर्मों को त्यागकर इतने छोटे समय (1894-1903) में सम्पूर्ण मिज़ो समाज का ईसाई धर्म को स्वीकार करना, ईसा मसीह के बलिदान और पापियों को मुक्ति देने की अभूतपूर्व आत्मिक शक्ति के कारण ही संभव हुआ है।

घ) उपन्यास की मूल संवेदना

उपन्यासकार खोलकूङी की प्रसिद्ध उपन्यास 'मलसॉमा' के कथानक की विविधता के आधार पर उपन्यास की मूल संवेदना को विभिन्न स्टार तथा दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। परंतु सम्पूर्ण संवेदनाओं के आधार पर उपन्यास की कथानक वानललरेमी की कष्टपूर्ण जीवन से आरंभ होकर अंत में उसे अपने सच्चे प्यार का फल फल मिलने तक है अर्थात 'अंत भला तो सब भला'के तर्ज पर कथानक की समाप्ती होती है।

उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक रेमी और मलसोमा के जीवन पर आधारित है। यथा वानललरेमी कट्टर ईसाई और धर्म गुरु एल्डर लियानफुङा उर्फ लियाना की पुत्री है। अपनी माँ ही नहीं बल्कि भाई-बहनों की असमय मृत्यु के बाद वह पिता की अकेली जीवित संतान बन जाती है। पिता एल्डर लियाना ही रेमी का सब कुछ है। पिता भी उसे पिता के प्यार–दुलार के साथ साथ ईसाई धर्म की छोटी-बड़ी सभी शिक्षाओं से अवगत कराते है। परिणाम स्वरूप लोग रेमी को मित्तभाषी, सुशील और आज्ञाकारी युवती के रूप में जानने और पहचानने लगते है।

आज्ञाकारी रेमी धार्मिक गतिविधियों में भी आस्थापूर्ण हृदय के साथ भाग लिया करती थी।

परंतु नियति को तो कुछ और ही मंजूर था। एल्डर लियाना ला-इलाज बिमारी से ग्रस्त हो जाते हैं। वह मृत्यु सैया पर लेटे-लेटे ही उनके देहांत के बाद रेमी को रैएक गाँव में रहने वाले अपने माना के यहाँ जाकर रहने को कहती है। तथापि फूलपुई गाँव में ही उनकी सगी बहन और दामात भी रहते थे। परंतु दामात की अधार्मिक प्रवृत्ति और शराबी होने के कारण वे इन पर विश्वास नहीं कर सके थे। तभी बेटी से दूसरे गाँव मामा के यहाँ जाना की बात करते है। इससे एक बात स्पष्ट समझा जा सकता है कि

उपन्यास के कथानक का आरंभ जहाँ पिता की मृत्यु के कारण रेमी का पूर्णतः अनाथ होने के आरंभ होकर कठिन से कठिन परिस्थिति में भी ईश्वर पर विश्वास और भरोसा करने की सच्चाई ही तत्कालीन मिज़ो समाज की धार्मिक विशेषता के रूप में कथानक का अंत होता है।

रेमी की बुआ का पति रौछीङा धूर्त शराबी है। उसका व्यवहार धर्म की शिक्षा के पूर्णतः विपरीत है। वह कुछ रुपए और दोनाली बंदूक के लोभ में सरदार के प्रमुख सलाहकार के बेटे ललमुआना से रेमी की शादी कराना चाहता है। ललमुआना शराबी ही नहीं बल्कि चारित्रहीन युवक है।

इस घटना से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि लेखिका ने उपन्यास के कथानक में तत्कालीन मिज़ो समाज के गुण तथा अवगुण दोनों का आवश्यकतापूर्ण समावेश करने का प्रयास किया है।

मिज़ो समाज की सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत समाज में जरूरतमंदों की आवश्यकतानुसार सामूहीक रूप में जरूरतमंदों सहायता करने की प्रवृत्ति के चलते प्रधानाध्यापक मलसोमा के लिए गाँव वालों द्वारा घर बनाने का भी उल्लेख किया है।

यह ऐसी प्रवृत्ति है जिसे मिज़ो समाज की अहम् और विशिष्ट विशेषता के रूप में देखा जा सकती है। अतः उपन्यासकार ने समय-समय पर ऐसे सामाजिक गुणों का भी आवश्यकतानुसार उल्लेख किया है।

मलसोमा और रेमी एक दूसरे को चाहते है। परंतु खुलकर अपने प्यार का इजहार नहीं करते।

गाँव की ही युवती ललखोथङी भी मलसोमा को प्यार करती है। परंतु जब उसे पता चलता है कि मलसोमा तो रेमी से प्यार करता है तो बदहवासी के कारण वह गाँव के ही फौजी युवक वानथङा जो छुट्टी बिताने गाँव आया हुआ है, के साथ शारीरिक संबंध बना लेती है।

वानथङा तो छुट्टी बिताकर लौट जाता है पर ललखोथङी के पेट में अपनी निशानी छोड़ जाता है। गर्भवती ललखोथङी अपने पेट में पल रहे बच्चे को लेकर चुप्पी साध लेती है। इस प्रकार लोगों का शक मलसोमा पर जाता है।

हालांकि आगे जाकर मलसोमा के निर्दोषी होने की बात स्पष्ट होती है। फिर भी इस घटना के कारण मलसोमा और रेमी की शादी होते-होते रुक जाती है।

यह घटना मनुष्य की एक ऐसी प्रवृत्ति को दर्शाता है जो बदले की भाव ग्रसित मनोस्थिति होती है। कथानक का यह प्रसंग मिज़ो समाज की ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के सत्य का बोध कराता है।

बुआ के पति के दुर्व्यवहार से हताश रेमी जब क्षेत्र के पादरी के यहाँ रहने के लिए सियालसूक जाती है तो वहाँ उसकी मुलाकात पादरी की छोटी बहन बियाककूङी से होती है। बियाककूङी सरल स्वभाव की ईसाई युवती है। उसके द्वारा सुझाई मार्ग पर चलकर ही रेमी आइज़ोल जाती है और वहाँ ईसाई मिशनरी पी जाई (Ms.Katie Hughes) से उसकी मुलाकात भी बियाककूङी ही कराती है। रेमी की कहानी सुनने के बाद सीट न होने पर भी पी जाई रेमी को अपनी ममतापूर्ण आगोश में ले लेती है। इस घटना को रेमी के जीवन काल में घटी महत्वपूर्ण घटना कहा जा सकता है। जिसके नेपथ्य में बियाककूङी की सहृदयता और परसेवाभाव का उत्कृष्ट परिणाम को देखा जा सकता है।

अतः उपन्यास के कथानक में मानवीय संवेदना, जरूरतमंदों के प्रति करुणा पूर्ण भाव और सहायता करने की प्रवृत्ति आदि गुणों का भी संदर्भानुसार लेखिका ने उल्लेख किया है।

आइज़ोल में पी जाई की छत्र-छाया में सिलाई-कढ़ाई का काम सीखने के साथ-साथ आंतरिक ही नहीं बल्कि व्यावहारिक दृष्टि से भी रेमी को बहुत कुछ सीखने और समझने का मौका मिलता है। अपनी शिक्षा के साथ-साथ पाश्चात्य शैली विशेषकर खान-पान,रहन-सहन और पहनावे आदि की दृष्टि से भी पी जाई की संगति ने रेमी को अच्छी तरह परिचित किया। गाँव की भोली-भाली रेमी शहर के जिंदगी को भी समझने लगी। पर ईश्वार के प्रति आस्था तथा धार्मिक गतिविधियों तथा कार्य कर्मों के प्रति उसकी निष्ठा में उसने कोई कमी आने नहीं दी। यहीं वह काल था जब मलसोमा से उसकी स्पष्ट रूप से उसकी मुलाकात हुई थी।

कथानक के इस प्रसंग को उपन्यास का प्रमुख एवं विशेष प्रसंग माना जा सकता है।

राजनीतिक परिपेक्ष्य में जब मिज़ो अलगाववादी और भारतीय सैनिकों के बीच युद्ध स्तर का माहौल बनमे लगा तो बाहरी लोगों के लिए शहर में रहना न मुमकिन होने लगा। अतः संरक्षिका पी जाई की आज्ञा के अनुसार रेमी भी रैएक में अपने मामा कोला के यहाँ रहने चली गयी। रास्ते में साँप के काटने के कारण झोपड़ी (ठ्लाम) में घायल अवस्था में मलसोमा को असहाय देखकर अपनी सहयात्री पी छोनी को गाँव जाने के लिए कहकर स्वयं मलसोमा की देखभाल करने के लिए रुकने का फ़ैसला करना उसके स्नेहपूर्ण चरित्र एवं आवश्यकमंदों की सहायता करने की प्रवृत्ति को स्पष्ट दर्शाता है।

इस अवतरण में लेखिका ने मिज़ो समाज की उस विशेषता को दर्शाया है जिसमें चाहे जैसे भी परिस्थिति हो क्यों न जरूरतमंदों की सहायता करने को प्रत्येक व्यक्ति अपना परम् कर्तव्य मानता है।

रैएक प्रवासकाल को रेमी और मलसोमा के संबंध के लिए अति महत्वपूर्ण का काल माना जा सकता है। रेमी अपने मामा के यहाँ साल भर से भी अधिक समय गुजारती है।

यह वहीं काल है जब ललखोथङी वाली घटना के चलते मलसोमा से उसकी शादी होते-होते रुक जाति है। और, मलसोमा विभिन्न प्रत्याशित और अप्रत्याशित घटनाक्रमों के चलते प्रधानाध्यापक का पद छोड़कर फौज में अधिकारी के पद पर भर्ती हो जाता है। दोनों का प्रेम पवित्र होने के साथ साथ परिपोक्वाता की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगता है।

ललखोथङी की अमान्य और लज्जापूर्ण व्यवहार के कारण मलसोमा और रेमी की शादी होते-होते रुक जाती है। इसके चलते मलसोमा भी अपनी स्वाभिमान की रक्षा के लिए अध्यापन की नौकरी छोड़कर फौज में अधिकारी के पद पर भर्ती होकर प्रशिक्षण के लिए कलकत्ता चला जाता है। इस घटना को रेमी के जीवन की एक एसी घटना माना जा सकता है, जो भविष्य की उम्मीदों के साथ-साथ वर्त्मान के अनेकानेक लाक्ष्न और अकथनीय दुःख और वैदना को सहने की मजबूरी से भरा था। अपने प्रति

लोगों का विभिन्न व्यवहार देखकर मलसोमा की याद उसे सदेव आती रहती थी।

रेमी की व्यथित मनोदशा को समझ कर मामा कोला उसे उसकी सहेली बियाककूङी के साथ पुश्तैनी गाँव फूलपुई भेज देते है। वहाँ पिता के कब्र का दर्शन करने के साथ साथ पुराने जान पहचान वालो से मिलकर उसका दिल काफी हल्का होने लगता है।

वह अपने गाँव आई तो थी मन के झनझावट कम करने और नए वातावरण में स्वयं को अच्छी तरह समझने की आकांक्षा से ईश्वार ने दोनों सहेलियों के हाथ इससे भी बड़ा ज़िम्मेदारी सौपा दिया। वह ज़िम्मेदारी कुछ इस प्रकार दिखाई दी। यथा बुआ का शराबी पति रौछीङा अत्यधिक नशा करने के कारण कई दिनों से बीमार पड़ा था। उसे परमेश्वर का वचन सुनाने और यीशु मसीह का पापियों के उद्धार के लिए हमारे पापी को धोकर क्रूस पर बलिदान होने आदि धार्मिक प्रवचन देने की ज़िम्मेदारी आदि। परमेश्वार का वचन सुनाने और समझाने के साथ-साथ अन्तस्तल से वे दोनों बारम्बार प्रार्थना करती रही। अंत में भगवान उनकी सुनली। बीमारी और कमजोरी के कारण कई महीनों से बिस्तर पर लेटे रौछीङा पर परमेश्वार का बहुत बड़ा कार्य प्रकट हुआ वह अच्छा हो गया। उसकी चंगाई केवल शारीरिक चंगाई मात्र न होकर आत्मिक दृष्टि से भी उसने परमेश्वार को पा लिया था। मोक्ष और उद्धार की प्राप्ति ने उसके सम्पूर्ण जीवन को बदल दिया। उसने रोते हुए रेमी से उसके साथ किए अपने सारी अत्याचार तथा दुष्टव्यवहार को क्षमा करने की बिनती की। रेमी ने भी ईश्वर के पवित्र नाम पर उन्हें क्षमा कर दिया ।

इस प्रकरण में जहाँ रेमी को परिस्थिति जन्य अवहेलना पूर्ण अप्रत्याशित व्यवहारों को सहन पड़ा। वहीं अपने प्रेमी से बिछड़ने का गम व उसके अकेलापन का दर्द भी उसके लिए असहाय दर्द होने लगा था।

उपन्यास के कथानक में यह ऐसा प्रसंग है जो रेमी के लिए जीवन में अमिटछाप छोड़ने वाली घटना बन हो जाती है।

मलसोमा और उसकी शादी होते-होते रुक गई थी। इसका मूल कारण ललखोथङी का अवैध रूप में गर्भवती होना और उसके बदले की भावना के चलते ऐसा व्यवहार करना कि मलसोमा ही उसके बच्चे का पिता

है आदि लज्जापूर्ण परिस्थितियों का सामना करने को मजबूर रेमी हमेशा उदास एवं परेशान रहती थी।

कलकत्ता में फौजी अधिकारी का प्रशिक्षण ले रहे प्रिय मलसोमा की याद में ये सभी बाते उसे अंदर से हमेशा कचोटती रहती थी। उसके मनोभाव को समझ कर ही मामा कोला ने उसे नए वातावरण में भेजने का फ़ैसला किया था।

अपने पुश्तैनी गाँव में पिता के कब्र को देखने के साथ साथ उसे पापी और शराबी रौछीङा को अपने पापों से मूक्ति देने वाले यीशु मसीह के चरणों में लाने का सौभाग्य भी प्राप्त होता है।

इन प्रसंगों के माध्यम से उपन्यासकार ने जीवन के कठिन परिस्थितियों को भी परमेश्वर पर विश्वास करने वालों के लिए सुखद परिणाम मिलने का उल्लेख किया है।

दूसरी ओर विश्वासी या यूँ कहे ईसा मसीह पर विश्वास करने वालों को विभिन्न परिस्थितियों में भी अपने विश्वास पर अडिग रहने की शिक्षा मिलती है।

इसके बाद दोनों सहेली फूलपुई में ही क्रिस्मस के महापर्व को मनाते हैं। धूम-धाम के साथ क्रिस्मस मनाने के बाद दोनों सहेली नए साल के आगमन से पहले बियाककूङी के गाँव चली जाती है। नए साल के बाद रेमी का अकेली आइज़ोल जाना तथा वहाँ पी जाई की छत्र-छाया में सभी आवश्य काम करती हुई वह समय बिताती है।

करीब एक वर्ष तक पी जाई के साथ रहती है। प्रशिक्षण समाप्त कर फौजी अधिकारी बन जब मलसोमा आता है तो पी जाई की देख-रेख मैँ बड़ी धूम-धाम के साथ पादरी के हाथों इनकी शादी हो जाती है।

इस प्रकार सम्पूर्ण उपन्यास के कथानक में रेमी, मलसोमा के साथ साथ अन्य पात्रों के सहारे कभी सुखद कभी दुखद और उतार चढ़ाव भरे वातावरण में झूलने वाली जीवन के विभिन्न घटनाओं का उल्लेख किया गया है।

उपन्यास के सम्पूर्ण कथानक परिस्थिति और घटनाओं के संदर्भ में पात्रों की विभिन्न चारित्रिक विशेषताओं का गहनता के साथ विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि केवल मिज़ो उपन्यास साहित्य की दृष्टि से खोलकूङी द्वारा लिखित 'मालसॉमा' उपन्यास अपना अलग स्थान रखती है।

संदर्भ सूची

1. खॉलकुंगी, '**मलसॉमा'**, सुरभि प्रकाशन, 109, ग्राउन्ड फ्लोर, बी-ब्लॉक, प्रीत विहार, दिल्ली : 2014, पृ॰27
2. खॉलकुंगी, '**मलसॉमा'**, सुरभि प्रकाशन, 109, ग्राउन्ड फ्लोर, बी-ब्लॉक, प्रीत विहार, दिल्ली : 2014, पृ॰26
3. खॉलकुंगी, '**मलसॉमा'**, सुरभि प्रकाशन, 109, ग्राउन्ड फ्लोर, बी-ब्लॉक, प्रीत विहार, दिल्ली : 2014, पृ॰93
4. खॉलकुंगी, '**मलसॉमा'**, सुरभि प्रकाशन, 109, ग्राउन्ड फ्लोर, बी-ब्लॉक, प्रीत विहार, दिल्ली : 2014, पृ॰12
5. वहीं पृ॰ 20
6. वहीं पृ॰137
7. वहीं पृ॰137
8. वहीं पृ॰95
9. वहीं पृ॰60
10. वहीं पृ॰25
11. वहीं पृ॰28
12. वहीं पृ॰99
13. सी॰कामलोवा, **'मध्यकालीन मिज़ौ काव्य साहित्य के सात अमर गायक'**, सी॰कामलोवा, Mualchin Publication & Paper Works, Peter Street, Khatla, Aizawl-796001:2018, पृ॰86

14. सी॰कामलोवा, **'मध्यकालीन मिज़ौ काव्य साहित्य के सात अमर गायक'**, सी॰कामलोवा, Mualchin Publication & Paper Works, Peter Street, Khatla, Aizawl-796001:2018, पृ॰91

15. वहीं पृ॰116

16. वहीं पृ॰121

17. वहीं पृ॰110

18. वहीं पृ॰115,117

19. खॉलकुंगी, '**मलसॉमा'**, सुरभि प्रकाशन, 109, ग्राउन्ड फ्लोर, बी-ब्लॉक, प्रीत विहार, दिल्ली : 2014, पृ॰8

20. वहीं, पृ॰104

21. खॉलकुंगी, '**मलसॉमा'**, सुरभि प्रकाशन, 109, ग्राउन्ड फ्लोर, बी-ब्लॉक, प्रीत विहार, दिल्ली : 2014, पृ॰104

22. वहीं, पृ॰104

तृतीय अध्याय

'मलसाँमा' उपन्यास के अनुवाद की चुनौतियाँ

क) समस्याएँ

ख) सावधानियाँ

तृतीय अध्याय

'मालसॉमा' उपन्यास के अनुवाद की चुनौतियाँ

"*लेखक होना आसान है, किन्तु अनुवादक होना अत्यंत कठिन है,' यह कथन है मराठी के सुविख्यात साहित्यकार मामा वारेरकर का*"[1] अनुवाद एक जटिल प्रक्रिया है इसमें किसी एक भाषा में प्राप्य लिखित अथवा मौखिक रूप का किसी दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। अनुवादक का कार्य एक भाषा रूपी शरीर से उसकी आत्मा को सुरक्षित रूप से संभालते हुए उसे दूसरे भाषा रूपी शरीर में प्रत्यारोपित करना, ढालना संवारना होता है। भाषा कोई स्थिर या सामान्य माध्यम या साधन नहीं है, इस के कारण अनुवादक थोड़ा बहुत संघर्ष करना तो पड़ता है।

एम॰पी॰पांडे ने "Some problems of theory and practice of translation" निबंध में अनुवाद की समस्या पर अपना विचार तथा सिद्धान्त प्रस्तुत करते हुए उद्धृत किया है, "*The main problem while translating is to convey the exact information, the actual content, and the means used for conveying the information depend on the norms of the target language.*"[2] इन्होंने आगे जाकर साहित्यिक अनुवाद कार्य में निम्न लिखित सावधानियाँ प्रस्तुत किया है- "*It is also expected that in the process of translation, the translator will put all his efforts to keep intact the richness of the author's original imagery as well as his ideas and purport. He will also make a conscious attempt to follow the author's style and his method.*"[3] यहाँ एम॰पी॰पांडे रचनाकार का रचनात्मक कला तथा शैली और मूल भाव को अनुवाद कार्य में महत्व दिया है, अतः इनके अनुसार अनुवादक भी इन चरणों पर ध्यान देना चाहिए।

जी.गोपीनाथन और एस॰कंदस्वामी ने अपने पुस्तक "अनुवाद की समस्याएँ" में अनुवाद की समस्या का वर्गिकरण दो कोटियों में किया है- अर्थ की समस्याएँ और शैली की समस्याएँ। इनके शब्दों में-

"*अनुवाद में अर्थ की समस्या सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के अंतरण में पैदा होती है। सामाजिक-सांस्कृतिक विभिन्नताएँ हिन्दी एवं विदेशी भाषाओं के बीच में ही नहीं, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के बीच भी द्रष्टव्य है। ये समस्याएँ सामाजिक-सांस्कृतिक शब्दावली, मुहावरे और लोकोक्तियों,लोक बिम्ब, अलंगकार एवं मिथक तथा हास्य-व्यंग के अनुवाद में विशेष रूप से पैदा होती है।*"[4] इस कथन में व्यक्त समस्याएँ 'मालसॉमा' उपन्यास में साफ साफ दिखाई देता है।

"*शैली की समस्याएँ स्रोत एवं लक्ष्य भाषा की व्यतिरेकी संरचनाओं के कारण पैदा होती है। ये समस्याएँ स्वनीम, शब्दकोश, रूप एवं वाक्य के स्तर की होती है।*"[5]

डॉ॰ भ.हा.राजूरकर और डॉ॰राजमल बोरा द्वारा संपादित पुस्तक "अनुवाद क्या है" में भीमसेन निर्मल जी ने अनुवाद की समस्या के संदर्भ में अनुवाद की प्रक्रिया इस प्रकार स्पष्ट तथा संक्षिप्त में दिया है-"... *अनुवाद की प्रक्रिया में स्रोत भाषा की रचना में अभिव्यक्त भावों या विचारों को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जाता है। इस प्रक्रिया में प्रथमतः अर्थ तत्व को महत्व दिया जाता है तो अभिव्यंजना की शैली को द्वितिय। दूसरे बात यह है कि स्रोत भाषा की अभिव्यक्ति के स्थान पर लक्ष्य भाषा में यथासंभव समान अर्थत् अधिक-से-अधिक समान, निकटतम अभिव्यक्ति को प्रधानता देना चाहिए। तीसरी बात यह है कि स्रोत भाषा की अभिव्यक्ति के स्थान पर प्रस्तुत की गयी अभिव्यक्ति, लक्ष्य भाषा की प्रकृति के यथासंभव सहज रूप में, प्रस्तुत की गयी हो। यदि इन बातों को ध्यान रखकर ईमानदारी के साथ अनुवाद के कार्य में प्रवृत्त हो तो मूल अभिव्यक्ति की प्रभावशीलता को लक्ष्य भाषा में ला सकते है।* "[6]

यह तो सर्वविदित ही है की प्रत्येक भाषा की अपनी अलग विशेषता होती है। यह विशेषता ध्वनि स्तर से लेकर भाषा की सबसे बड़ी इकाई वाक्य स्तर तक देखी जा सकती है। भाषा की यहीं तथ्य अनुवाद कार्य को जटिल प्रक्रिया बनाती है।

क) समस्याएँ

'मालसॉमा' उपन्यास के अनुवाद कार्य में भी अनुवादक के समक्ष कथित समस्या कई स्तरों पर दिखाई देती हैं।

इस समस्या को हिन्दी और मिज़ो भाषा की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान भाषा प्रयोग में दिखाई देने वाली सम्पूर्ण विभिन्नताओं को माना जा सकता है। जिनमें दोनों भाषा बोलने वालों की सांस्कृतिक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों में अंतर के साथ-साथ नित्य प्रयोग में आने वाली वस्तुओं की भिन्नता को भी एक मुख्य कारण माना जा सकता है।

'मालसॉमा' उपन्यास की मूल रचना मिज़ो भाषा में की गई है और अनुवाद हिन्दी में। अतः अनुवाद की चुनौतियाँ के चलते निम्नलिखित त्रुटियाँ स्पष्ट दिखाई देती है, जो इस प्रकार है-

नामों के संदर्भ में

सही वर्तनी	अशुद्ध वर्तनी
मलसोमा	मालसॉमा
खोलकूङी	खॉलकुंगी
छीङी	चिंगी
रौछीङा	रोछिंगा
त्लुआङी	त्लुअंगी
रौसाङी	रोसंगी

सही वर्तनी	अशुद्ध वर्तनी
बियाककूङी	बियाक्कुंगी/बैखुंगी
ललमुआना	ललमुअना
छुआह्खमा	छुआखामा
ठुआमी	थुआमी
मातैई	मेतेई
लियानदाईलौवा	लियनडेलोवा
छोनी	छॉनी
कोला	कौला
थङतेई	थंगतेई
सोमा	सॉमा
थियाङह्लिमी	थियांघलिमि
वुङी	वुंगी
मोइया	माविया
ललखोथङी	लालखोथंगी
लली	लाली
वानथङा	वानथंगा
लियानथङी	लियानथंगी
रुआला	रौला
ललङूरा	लालन्गुरा
थङरुआला	थंगरोला

सही वर्तनी	अशुद्ध वर्तनी
वानदाईलोवा	वानडैलोवा
ठुआमलियाना	थौमलियाना
रुआलखूमी	रौलखुमी
लोम्जुआला	लॉजौला
थ्याङा	थियांगा

स्थानों के नाम के संदर्भ में

सही वर्तनी	अशुद्ध वर्तनी
रैएक	रिइक
दिह्मुन्ज़ोल	दीहमुजोल
वाईपुआनफौ	वैपुआनफो
ज़ौत्लाङ	जोतलंग
बियाते	बियात
काङह्मुन	काघमुन
कोनजार	कॉनजार
ङाइज़ैल	नगेजेल
मुआललुंथू	मौलंगथू
ज़ोलपला ठ्लान त्लाङ (Zawlpala Thlan Tlang)	ज़ॉलपाला थ्लान तलांग (Zawlpapala Thalan Tlang)

महीनों के नाम के संदर्भ में

सही वर्तनी	अशुद्ध वर्तनी
टौमिर	तोमीर
सम्हूलफाह् ठ्ला	सहमलफा थ्ला
मीम्कूत	मिमकुट
वोक्ह्निनयाह्ज़ोन ठ्ला	वॉक्खनियाजॉन थ्ला
खुआङ्चोई ठ्ला	खुआंगछवी थ्ला

सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त शब्द के संदर्भ में

सही वर्तनी	अशुद्ध वर्तनी
लोम	लॉम
खोछियार	ख्वाछियार
प्यालत्लेप	पियालतलेप
छङ	छंग
खोठ्लीर	खॉथलीर
सेरट्रोक	सर्तोक

'मालसॉमा' उपन्यास मिज़ो उपन्यासकार खोलकूङी की 'ज़ोलपाला ठ्लान त्लाङ' मूल शीर्षक को बदल कर हिन्दी में अनुवाद किया गया नया रूप है।

हिन्दी में अनुवाद करने के लिए इसका मूल शीर्षक ही नहीं बदला गया बल्कि उपन्यास के अंतिम छः अध्यायओं को भी छोड़ दिया गया है।

इसके पीछे अनुवादक की क्या महबूरी रही होगी अनुमान लगाना इतना आसान नहीं दिखता। इसके चलते उपन्यास के सम्पूर्ण या भूल संवेदना में भी पर्याप्त अंतर देखी जा सकती है।

प्रस्तुत उपन्यास की मूल शीर्षक के भाव को हिन्दी में पूर्णतः बदल दिया गया है। इसका उपन्यास के मूल संवेदना पर काफी प्रभाव पड़ा है।

जैसे 'ज़ोलपाला ठ्लान ल्लाङ' मिज़ो लोक कथा के अनुसार पुराने दिनों तुआलवुङी और ज़ोलपाला के प्रेम कथा को बड़े चाव से सुना और कहा जाता था।

दोनों की शादी तो होती है परंतु ज़ोलपाला की भूल के कारण उसे एक धनी व्यापारी के हाथों पत्नी को गवाना पड़ता है। पत्नी के बिछोड़ से दुखित विरही ज़ोलपाला मर जाता है और जहां उसकी लाश को डफाना गया था उस पहाड़ी को *ज़ोलपाला ठ्लान* कहा जाता है। अतः उपन्यास के मूल शीर्षक में निहित भाव और इसके अनूदित रूप 'मालसॉमा' शीर्षक के भाव में पर्याप्त अंतर दिखाई देता है।

संक्षेप में कहे तो शीर्षक बदलने के कारण उपन्यास के मूल भाव और अनूदित उपन्यास के भाव में काफी अंतर आ गया है।

शीर्षक परिवर्तन के पीछे अनुवादक की जो भी मजबूरी या मनसा रही हो, इतना तो स्पष्ट समझा जा सकता है कि हिन्दी और मिज़ो भाषा में दिखाई देने वाली अंतर के चलते आई कठिनाई इत्यादि का कई सौपानों में विश्लेषण किया जा सकता है। यथा:

I. हिन्दी एक परिनिष्ठ और व्यवस्थित मानक भाषा है। भारतीय आर्यभाषा परिभाषा से संबन्धित हिन्दी सम्पन्न भाषा ही नहीं वरन् अपने गौरवपूर्ण इतिहास और साहित्य के कारण विश्व में अपना अलग पहचान रखती है।

परंतु उद्भव और विकास की दृष्टि से मिज़ो भाषा का संबंध 'तीब्ती बर्मन' भाषा परिवार से हैं। इस परिवार से संबन्धित अन्य बोली-भाषाओं की तरह ही मिज़ो भाषा भी तानपूर्ण भाषा है।

अतः किसी भी हिन्दी भाषी के लिए मिज़ो भाषा की रचनाओं का सहीं-सहीं अनुवाद करने के लिए मिज़ो भाषा की ध्वनि व्यवस्था से लेकर औचारणिक विशेषता तथा संदर्भ विशेष में प्रयोग की जाने वाली शब्द तथा वाक्यों की अर्थागत-व्यंजना को समझना अति अवाश्यक है।

अनुवादक द्वारा 'मालसॉमा' उपन्यास का अनुवाद करते समय मिज़ो भाषा के कठित भावों को सहीं रूप में न समझ पाने की समस्या हर अध्याय में दिखाई देती है।

वर्तनी की त्रुटियों का भी मूल कारण ध्वनि स्तर के प्रयोग और उच्चारण स्थिति में हिन्दी और मिज़ो भाषा के बीच दिखाई देने वाले अंतर और विभिन्नता को मुख्य कारण माना जा सकता है।

II. सामाजिक व्यवसथा या जीवन पद्धति में भी हिन्दी भाषा-भाषी और मिज़ो भाषा-भाषियों में अमूलचूल अंतर परिलक्षित है। यह अंतर संबोधन वेश-भूषा,खान-पान आदि के साथ भाषा प्रयोग के अंतर्गत सूचक शब्द अथवा वाक्य स्तर में भी पूर्णतः देखा जा सकता है। जैसे-

हिन्दी में पिता के लिए **पिताजी**, **आप** आदि शब्दों के प्रयोग के साथ-साथ अन्य कई आदर सूचक शब्दों का प्रयोग अपने से बड़ो के लिए किया जाता है, वही मिज़ो में इनके लिए अलग शब्दों का प्रावधान नहीं हैं।

जैसे-

आप – Nang

तुम – Nang

तू – Nang

इस तरह सम्बोधन भाव एक होते हुए भी शब्द प्रयोग की भिन्नता के कारण अर्थ की दृष्टि से भी भिन्नताएँ दोनों भाषाओं के संदर्भ में देखी जा सकती है। इसे अनुवाद के प्रक्रिया में किसी अर्थ विशेष के लिए किए गए शब्द प्रयोग के अर्थों को सन्दर्भ विशेष में कैसे और किस भाव के अंतर्गत लिया जाए आदि समस्याओं को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता।

ख) सावधानियाँ:

मिज़ो भाषा से हिन्दी भाषा में जब अनुवाद करे तो उपर्युक्त कथित समस्याओं के आधार पर निम्नलिखित सावधानियाँ बरतने का प्रयास करे तो अच्छा होगा।

क) मिज़ो भाषा की उत्पत्ति और विकास का इतिहास।

ख) मिज़ो भाषा की ध्वन्यात्मक विशेषताएँ और उनका सही औचराणिक गुण।

ग) मिज़ो वाक्य विन्यास की सरचनात्मक विशेषता।

घ) संदर्भ अनुसार शब्द और वाक्य की अर्थगत विशेषताएँ।

ङ) मिज़ो भाषा में कई ऐसे शब्द है जो उच्चारण संबंधी भिन्नता के साथ-साथ अलग-अलग अर्थ की प्रतीतिकराते हैं।

जैसे-

Lei = खरीद

Lei = मिट्टी

Lei = जीभ

Lei= किसी चीज़ या वस्तु का टेड़ा होना।

इन शब्दों के अर्थ की भिन्नता औचारणिक स्थिति पर निर्भर करता है।

च) त्योंहार की पृष्ठभूमि और समाज में इनका प्रभाव 'धार्मिक सांस्कृतिक आदि' दृष्टि से।

छ) नित्य प्रयोग में लाने वाली विभिन्न वस्तुओं के नाम एवं संदर्भानुसार उनकी उपयोगिता।

ज) पुराने जमाने में प्रयुक्त किए जाने वाले मिज़ो महीनों के नाम साथ ही त्योंहारों के नाम और इनकी पृष्ठभूमि।

अनुवादक के लिए शब्द प्रयोग में निहित भावों की अभिव्यंजनों को सही-सही समझने की आवश्यकता अनुवाद प्रकृति की प्रथम महत्वपूर्ण सौपन होना चाहिए।

प्रस्तुत उपन्यास के अनुवाद में बिन्दुओं पर अनुवादक सभी न्याय करने में असफल रह है। इसका सीधा प्रभाव उपन्यास की अर्थगत रसास्वादन के निरंतरता में बाधा के साथ-साथ रचना के मूल संवेदना पर भी स्पष्ट दिखाई देता है।

संदर्भ सूची

1. कृष्ण कुमार गोस्वामी, 'अनुवाद विज्ञान की भूमिका', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008, पृ॰9
2. जी॰गोपीनाथ व एस॰कंदस्वामी, 'अनुवाद की समस्याएँ', लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद -211001, 2011, पृ॰19
3. वहीं, पृ॰19
4. वहीं, पृ॰13
5. वहीं, पृ॰13
6. डॉ॰ भ॰हा॰राजूरकर और डॉ॰राजमल बोरा, 'अनुवाद क्या है' , वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली- 110002, 2016, पृ॰127

उपसंहार

उपसंहार

खोलकूङी मिज़ो साहित्य का एक ऐसा नाम है जिसने जीवन के प्रति अपने अनुभव तथा वैचारिक दृष्टि का गहन परिचय अपने कथा साहित्य के माध्यम से देते हुए (उपन्यास) मिज़ो कथा साहित्य को एक नया आयाम देने का सार्थक प्रयास किया है।

अध्ययन की सुविधा हेतु सम्पूर्ण लघु शोध प्रबंध को तीन अध्याय में विभाजित किया गया है। लघु शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में खोलकूङी के व्यक्तित्व और कृतित्व का गहन परिचय दिया गया है। खोलकूङी का जन्म को मिशन वेङठ्लङ 1927 सितंबर 14, आईजाल में हुआ था। इनके पिता का नाम हाउन्हार छूमा तथा माता का नाम जौकाइवेली था। गरीबी के कारण इनकी शिक्षा केवल छठवीं कक्षा तक हुई थी। तैंतीस वर्ष की उम्र में खोलकूङी ने 1960 जनवरी 23को प्रथम असम रेजीमेंट भारतीय) सेनामें कार्यरत एवं (हॉकी खिलाड़ीबुआलखूमा से विवाह किया। विवाह के चालीसवें वर्ष में 2004 फरवरी 23 कोइनके पति का देहांत हो गया। इनकी चार संतान, दो लड़के और दो लड़कियाँ हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान खोलकूङी (1945-1939)**Women Auxiliary Corp** में भरती हो गईं। इसी नौकरी के चलते उन्हें कलकत्ता में रहना पड़ा। वहाँ रहते हुए उन्हें अंग्रेजी के छोटे मोटे उपन्यास तथा कहानी पढ़ने-की आदत लगी। परिणामस्वरूप बाद में वे काफी अच्छी अंग्रेजी बोलने लगीं। परंतु इनके समकालीन सहपाठियों की मानें तो मात्र छठवीं तक ही पढ़ी होने के बाद भी इनकी सोच तथा जीवन के प्रति उनकी दृष्टि और विचार बड़ेबड़े विद्वानों और शिक्षित महानुभावों के विचारों से किसी भी दृष्टि से कमतर - नहीं हैं।

मिज़ो कथा साहित्य के क्षेत्र में इनके अमूल्य योगदान को स्वीकार करते हुए 28 मार्च 1987 ईको भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने अपने कर कमलों से उन्हें पद्मश्री की . उपाधि से सम्मानित किया। इसके अलावा भी उन्हें अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। उन्हें में 1991 **Distinguished in Letters Awards**", 1998 में **"Special Service Star Medal (BS & Guide),** 1998 में **Academy Award (by Mizo Academy of Letters)"** आदि से सम्मानित किया गया। 20 मार्च, 2015 को खोलकूङी की मृत्यु हुई।

खोलकूङी ने उन्नीस वर्ष की छोटी उम्र से ही अपने विचारों एवं अनुभवों को कलमबद्ध करना आरंभ कर दिया था। इनकी रचनाओं को मुख्यतः दो भागों में बाँटकर

देखा जा सकता है मौलिक रचनाएँ और -अनूदित रचनाएँ। इनकी मौलिक रचनाएँ लगभगछो 37 एकाँकी व नाटक और 25 टी कहानी और उपन्यास हैं। इसके अलावा इनकी 37अनूदित रचनाएँ भी हैं। इनके निम्न मौलिक उपन्यास अत्यधिक प्रसिद्ध रहे हैं - 'Hmangaihna khua a var hma in' (प्रेमपूर्ण भोर से पहले तथा ('Duhtak Sangpuii' (प्रिय साङपुई(, 'ज़ोलपाला ठ्लान त्लाङ') ज़ोलपाला के कब्र के पहाड़ आदि। ('ज़ोलपाला ठ्लान त्लाङ' की रचना पहले मिज़ो नाटक के रूप में की गयी थी परंतु बाद में ईसाई प्रेम कहानी लेखन की प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए लेखिका ने इसके काव्य रूप में परिवर्तन कर दिया और उसे एक उपन्यास का रूप दे दिया।

लगभग इनकी सभी रचनाओं में चर्च और ईसाई धर्म की शिक्षाओं का बहुत ही गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। उन्होंने बच्चों की कहानी, प्रेम कहानी -युवा)युवतीऔर (पत्नी से संबन्धित-पतिकहानियाँ भी लिखी हैं। प्रारंभ में खोलकूङी की अंग्रेजी अच्छी नहीं थी। परंतु कलकत्ता प्रवासकाल के दौरान उन्होंने अंग्रेजी के साहित्य का गहन अध्ययन भी किया। तभी इन्होंने अपने समय के परिचित कई अंग्रेजी कहानियों का मिज़ो भाषा में सफलतापूर्वक अनुवाद किया। खोलकूङी कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध लिखने के अतिरिक्त पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सक्रिय थीं। मात्र छठवीं तक पढ़ी खोलकूङी द्वारा मिज़ो साहित्य के प्रति किए गए उनके योगदान को किसी भी दृष्टि से कम कर नहीं देखा जा सकता है। यदि, उनके समय में मिज़ोरम में छापाखाना न होने के कारण (प्रेस) Cyclostyle का सहारा लेने की मजबूरी लेखिका के सामने किसी राक्षस की तरह मुँह बाएँ खड़ी हो जाती थी। उन परिस्थितियों ने लेखिका के सृजनात्मकता को भी बाधित और प्रभावित किया था। यदि उनके समय में आज की तरह प्रकाशन की व्यवस्था होती तो उनके मौलिक तथा अनूदित रचनाओं की संख्या शायद काफी अधिक हो सकती थी। हस्त लिखित और Cyclostyle होने के कारण लेखिका की अधिकांश रचनाएँ आज समय के थपेड़े खाकर लुप्त हो गई हैं। फिर भी आज जो कुछ भी इनकी रचनाएँ उपलब्ध हैं इनके सहारे खोलकूङी को मिज़ो साहित्य का अगुवाई करने वाली महान लेखिका के रूप में याद किया जाता है।

द्वितीय अध्याय में 'मलसॉमा' उपन्यास की संवेदना का वर्णन और विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय को चार उप अध्याय में बाँट कर उसका विवेचन किया गया है।-मिज़ो भाषा में लिखित 'ज़ोलपाला ठ्लान त्लाङ' उपन्यास खोलकूङी का प्रसिद्ध उपन्यास है।

जिसका हिन्दी में अनुवाद 'मलसॉमा' शीर्षक से किया गया है। अनुवादक का नाम और पता ज्ञात न हो पाने के कारण मूल शीर्षक में परिवर्तन क्यों किया गया, इस प्रश्न के सही उत्तर की अकांक्षा रखना अब निरर्थक है। परंतु एक बात तो यह तय है कि इस उपन्यास का अनुवाद किसी गैर मिज़ो भाषा भाषी ने किया है।

प्रथम उप अध्याय में उपन्यास की पृष्ठभूमि को उद्घाटित किया गया है।-प्रस्तुत उपन्यास के उद्देश्य को उद्घाटित करते हुए लेखिका ने उपन्यास के 'प्राक्कथन' में स्वयं लिखा है कि "*वर्ष 1977 में एक ईसाई प्रेम-कहानी लेखन की प्रतियोगिता हुई। तब मैंने एक कहानी लिखने का विचार किया। 31 अक्टूबर, 1977 को कहानी जमा करने की आखिरी तारीख थी, मैंने समय पर रचना जमा कर दी।*"[1] स्पष्ट है कि इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए ही प्रस्तुत उपन्यास की रचना की गयी थी। इसलिए उपन्यास के नायक और नायिका ईश्वर तथा ईसाई धर्म की शिक्षा व चर्च के नियमों में गहरी आस्था रखते हैं।

उपन्यास का आरंभ एल्डर कोला की बीमारी और उनकी एकलौती पुत्री वानललरेमी द्वारा अपने पिता की देखभाल से होता है। इस उपन्यास के (नायिका) कथानक की पृष्ठभूमि और समय1940 ई के आसपास का है। .

मिज़ोरम में प्रतिवर्ष नवंबर महीने के अंत और दिसंबर महीने के दूसरे सप्ताह तक धान की कटाई की जाती है। इससे लोगों में अपनी मेहनत का फल मिलने की खुशी तथा साल भर के लिए अनाज के उपलब्ध होने के संतोष का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। परंतु जिस मुख्य पात्र के घर के चित्रण से कथानक का शुभारंभ होता है, वहाँ का वातावरण धान कटाई के कारण लोगों में दिखाई पड़ने वाले उत्साह और खुशी का न होकर दुख का है। एल्डर कोला अपनी बीमारी के कारण मरणासन्न स्थिति में हैं और वे अपनी मातृविहीन पुत्री रेमी के भविष्य को लेकर चिंतित हैं। कथानक की शुरुआत एल्डर कोला और उनकी पुत्री रेमी निराशा पूर्ण संवाद से होती है। -शाके बीच जीवन के प्रति उनकी आ (नायिका) के जीवन में (नायिका) इसे रेमीसंघर्ष की शुरुआत का काल माना जा सकता है।

प्रस्तुत उपन्यास का कथानक एक प्रेम कथा पर आधारित है, जो ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु आयोजित की गयी एक प्रतियोगिता में भागीदारी हेतु लेखिका द्वारा रचा गया था। उपन्यास का नायक मलसोमा मिशनरी स्कूल का एक हेडमास्टर है, जो एक रूपवान युवक था और नायिका वानललरेमी भी एक धार्मिक प्रवृत्ति की नवयुवती थी।

नायिका रेमी को अपने पिता एल्डर लियाना की मृत्यु के बाद तमाम तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, किन्तु उसकी आस्था कभी भी ईश्वर के प्रति कम नहीं होती है। जब उसकी बुआ के पति रौछीङा जबरदस्ती उसकी शादी एक शराबी युवक ललमुआना के साथ करानेवाले थे तब वह घर से भाग जाती है। वह अपने पिता की इच्छा के अनुसार अपने मामा के घर जाने के लिए निकल पड़ती है। यह दुर्घटना आगे चलकर उसके लिए आशीर्वाद बन जाती है क्योंकि 'रैएक' गाँव जाने के क्रम में उसकी मुलाक़ात मलसोमा से आइज़ोल में पुनः होती है और वहीं से उनकी प्रेम कहानी शुरू हो जाती है। जब मलसोमा 'रैएक' गाँव का हेडमास्टर बनकर गया, तब वहाँ के अधिकतर लड़कियों के माता-पिता उसे अपना दामाद बनाने को लालायित रहते हैं। गाँव की एक सुंदर लड़की ललखोथङी और उनके परिवार वाले भी मलसोमा को पसंद करते हैं। ललखोथङी मलसोमा के साथ प्रेम संबंध बनाना चहती है, पर मलसोमा केवल रेमी को ही प्यार करता है। दूसरी तरफ आईसीएमए का (सेना) एक नवयुवक वानथङा जब छुट्टी में घर आता है तो वह ललखोथङी से शारीरिक संबंध बनाना और अपने खानदान को आगे बढ़ाना चाहता है जिसमें वह बाद में सफल भी हो जाता है, जिसके कारण ललखोथङी गर्भवती हो जाती है। ललखोथङी के परिवार वालों ने मलसोमा को ही उस बच्चे का पिता होने का आरोप लगाया जिसे ललखोथङी भी चुपचाप स्वीकार कर लेती है। परन्तु गाँव के मुखिया और उसके सहायक वरिष्ठ जनों के (एल्डर) सामने इस बात को मलसोमा ने गलत साबित कर दिया, जिससे सभी सहमत थे। इस घटना से ललखोथङी के परिवार की बहुत बदनामी हुई। इससे क्रोधित होकर ललखोथङी के बड़े भाई ने मलसोमा के मुख्य कार्यालय आइज़ोल में उसकी लिखित शिकायत कर दी, जिसके परिणामस्वरूप मलसोमा का 'रैएक' से स्थानांतरण कर दिया जाता है। जिससे स्वाभिमानी मलसोमा अपने को अपमानित महसूस करता है और अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे देता है। वह मिज़ोरम छोड़कर एयरफोर्स अफसर बनने के लिए कलकत्ता चला जाता है। इन सब घटनाओं के बावजूद भी रेमी मलसोमा का साथ नहीं छोड़ती है और अंत में दोनों की शादी हो जाती है। इस प्रकार रेमी और मलसोमा जैसे पात्रों के जीवन और चरित्र के सहारे लेखिका ने सुखदुख और --उतारचढ़ाव वाले जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस उपन्यास की रचनाईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु आयोजित की गयी एक प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए लेखिका द्वारा की गयी थी। परिणाम स्वरूप संपूर्ण कथानक की रचना उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की गयी है, जिसमें

ईसाई धर्म में आस्था रखने वाले पात्रों को चरित्रवान, दयालु, सदाचारी, जीवन में सफल दिखाया गया है जिसका प्रतिनिधित्व नायक और नायिका)मलसोमा और रेमी, एल्डर कोला, पी जाई आदिकरते हैं और ईसाई धर्म में आस्था नहीं रखने वाले पात्रों को (चरित्रहीन, दुष्ट, दुराचारी, जीवन में असफल आदि दिखाया गया है, जिसका प्रतिनिधित्व ललखोथाङी, ललखोथङी का भाई ललङूरा, रौछीङा और ललमुआना आदि करते हैं। इसलिए तमाम परेशानियों के बावजूद नायक सेना का अफसर बन जीवन में सफल हो जाता है और अंत में उसकी शादी नायिका से हो जाती है और दोनों सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं।

द्वितीय उपअध्याय के अंतर्गत उपन्यास के विभिन्न पात्रों एवं उनके चारित्रिक - विशेषताओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास में छोटे छोटे-32 अध्याय हैं और उपन्यास का कथानक 34 विभिन्न पात्रों के सहयोग से रचा गया है। इस उपन्यास की नायिका वानललरेमी है तो नायक मलसोमा है। इसके अतिरिक्त अन्य कई स्त्री और पुरुष पात्र हैं।

वानललरेमी इस उपन्यास की मुख्य पात्र या नायिका है। माँ, भाई और बहनों की आकस्मिक मृत्यु के बाद वह अकेली अपने पिता के साथ रहती है। परंतु पिता की मृत्यु के पश्चात वह पूर्ण रूप से अनाथ हो जाती है। इस घटना ने उपन्यास के कथानक को करुणा पूर्ण बना दिया है। रेमी का चरित्र उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक जिज्ञासापूर्ण और संघर्षशील चरित्र के रूप में दिखाई देता है। प्रारम्भ में वह गाँवगाँव भटकने के बाद ईसाई - मिशनरी पी जाई की छत्रछाया में अपने जीवन के एक नए अध्याय का शुभारंभ करती है और अपने चरित्र के उज्ज्वल पक्ष से सबकोप्रभावित करती है। रेमी एक ऐसी पात्र है जो उपन्यास को आरंभ से अंत तक एक सूत्र में बांधकर रखती है।

इस उपन्यास का नायक मलसोमा है। शायद इसीलिए हिंदी अनुवाद में इस उपन्यास का शीर्षक बदल कर उसे 'मलसोमा' कर दिया गया है। परंतु मलसोमा की तुलना में इस उपन्यास में वानललरेमी का चरित्र पाठकों को अधिक आकर्षित करता है। फिर भी मलसोमा एक ऐसा पात्र है जो अपनी सज्जनता, सहनशीलता, सदाचार, ईमानदारी, स्वाभिमान और ईश्वार के प्रति अटूट आस्था के कारण अपनी अलग पहचान बनाता है।

आरंभ में रेमी से मिलने और उसकी सहायता पाने के कारण मलसोमा उसे मन ही मन चाहने लगता है। जब ललखोथाङी मलसोमा को एक तरफा प्रेम की जाल में फंसाना चाहती है तो मलसोमा उसके प्रेम प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता है। वह एक तरफा प्रेम में असफल होने के कारण उसे बदनाम करने की कोशिश करती है। परंतु मलसोमा अपने सदाचार और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण बदनाम होने से बच जाता है। वह अपनी सदाचार और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण ही अपनी निर्दोषिता को प्रमाणित करने में सफल हो पाता है। परंतु उस झूठे आरोप की वजह से उसका स्थानांतरण कर दिया जाता है तो वह अपने आत्म सम्मान के लिए शिक्षक की नौकरी छोड़ देता है और ब्रिटिश भारतीय सेना में अफसर बन जाता है। फ़ौजी अफसर बनना उसके चरित्र की उत्कृष्ट विशेषता को दर्शाता है। अनेकानेक घटनाक्रमों के बाद अंत में वह रेमी से शादी कर अपना घर बसाता है जो उसके चारित्रिक गुण तथा विश्वसनीयता को सिद्ध करती है।

बियाककूङी और पी जाई इस उपन्यास के ऐसे स्त्री पात्र हैं जो समय पड़ने पर किसी भी जरूरतमंद की सेवा करने में पीछे नहीं हटती हैं। पी जाई जहाँ धार्मिक प्रवृत्ति की ममता पूर्ण ईसाई मिशनरी है वहीं बियाककूङी अंत तक रेमी का साथ देने वाली धार्मिक प्रवृत्ति की लड़की है। ललखोथङी, रौछीङा और ललमुआना ऐसे पात्र हैं जो नकारात्मक मनोभावों का प्रतिनिधित्व करते हैं और उपन्यास के कथानक को एक तरह से पूर्ण बनाते हैं। इसी तरह एल्डर कोला ईसाई धर्म की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं के प्रति अपनी विश्वसनीयता और आस्था के परिचायक हैं।

इसी तरह प्रस्तुत उपन्यास के अन्य गौण पात्र भी उपन्यास के कथानक को गति देते हैं तथा उसके रसास्वादन में पाठकों की सहायता के लिए विभिन्न भावों को परोसने का कार्य करते हैं। संक्षेप में कहें तो उपन्यास की मूल संवेदना भी कथित पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं या विशेष भूमिका पर ही आधारित है।

तृतीय अध्याय में मिज़ो भाषा से हिंदी भाषा में 'मलसॉमा' उपन्यास का अनुवाद करने की राह में आने वाली चुनौतियों का उल्लेख किया गया है। इसमें अनुवाद की कठिनाइओं के विभिन्न घटकों का विश्लेषण किया गया है।

मिज़ो भाषा (लक्ष्य भाषा) और हिन्दी भाषा (स्रोत भाषा) अपनी उत्पत्ति से लेकर प्रकृति में भिन्न हैं। इसकी ध्वनि व्यवस्था, ध्वनियों के औचारणिक गुण, शब्द रचना तथा सम्पूर्ण वाक्य व्यवस्था आदि में अत्यधिक भिन्नता है, जिसके कारण अनुवादक को अनुवाद कार्य करने में भाषा के सभी स्तरों पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है।

इस उपन्यास के हिंदी अनुवाद का शीर्षक 'मलसॉमा' रखा गया है जो इस उपन्यास के नायक और मुख्य पुरुष पात्र का नाम है। परंतु मिज़ो भाषा की उच्चारण संबंधी विशेषता के साथ साथ इसकी तानपूर्ण प्रकृत्ति से परिचित न होने के कारण अनुवादक ने सही वर्तनी- 'मलसोमा' का 'मलसॉमा' कर दिया है। जबकि मिज़ो भाषा में ॅ ध्वनि का प्रयोग नहीं किया जाता है। जबकि अ, आ, ओ और औ स्वर ध्वनियों का प्रयोग प्रचुर मात्र में होता है। अतः 'मलसोमा' की जगह 'मलसॉमा' लिखना मिज़ो ध्वनि व्यवस्था को सही रूप में न समझ पाना ही है। व्यक्तिवाचक संज्ञा यथाव्यक्त -ि एवं स्थान आदि के नाम में वर्तनी की त्रुटियाँ प्रचुर मात्रा में परिलक्षित हैं, जो मिज़ो भाषाभाषियों के उपन्यास के रसास्वादन - में बाधक बन जाती हैं।

इसी तरह मिज़ो समाज की सामाजिक व्यवस्था तथा सांस्कृतिक मूल्यों को सही-सही अर्थ में न समझ पाने के कारण सम्पूर्ण उपन्यास के संवेदनात्मक भावपक्ष का अनुवाद आशानुकूल नहीं हो पाया है। इस संदर्भ में झूमरेख में किए -खेती और इसके देख- जाने वाले विभिन्न क्रियाओं का भी अनुवाद पूर्णतः सफल नहीं माना जा सकता है।

इस संदर्भ में उपन्यास के प्रारम्भ में ही मूल शीर्षक के औचित्य के संबंध में उद्धृत गीत की पंक्तियों के अनुवाद को लिया जा सकता है:

"Zawlpala thlân sumtualah,

Ṭuangṭuah pâr a vul bung e,

Sehran lû a tlar bung e,

Ka di e, Zawlpala e."[2]

इन पंक्तियों का अनुवाद उपन्यास में निम्न प्रकार से किया गया है जो सही नहीं लगता है-

"ज़ॉलपाला की कब्र के सामने

खिले है कोरल के फूल खूब सुंदर

सामने हैं मिथुन के कपाल

मेरा प्यारा ज़ॉलपाला!"[3]

वैसे तो अनुवाद की प्रक्रिया की जटिलता को देखते हुए कहा जा सकता है कि कोई भी अनुवाद कार्य सौ प्रतिशत सही नहीं हो सकता है फिर भी प्रस्तुत पंक्तियों की अनुवाद की वैधता को कविता की अर्थगत विशेषता की दृष्टि से सही मानना अपने आप में काफी कठिन है। इसका अनुवाद यदि इस प्रकार किया जाता तो अर्थगत दृष्टि से कुछ सीमा तक तसल्ली मिल पाती-

"ज़ोलपल के कब्र के आँगन में

झूम उठे हैं मतमाते महुए के फूल-

लगी हैं मिथुन के सिरो -ं की कतार

ओ!प्रिय ज़ोलपल !"

मूल उपन्यास और उसके हिन्दी अनुवाद के अध्ययन के पश्चात अनुवाद की दृष्टि से मनन करने पर कुछ बातें स्वतः ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित करती हैं, जिसे निम्न प्रकार से अभिव्यक्त किया जा सकता है:

1) मूल उपन्यास का शीर्षक 'ज़ोलपाला ठ्लान त्लाङ' को बदलकर 'मलसॉमा' करने के पीछे अनुवादक की क्या मजबूरी रही होगी साफसाफ कहना तो कठिन है। परंतु-, इतना तो कहा ही जा सकता है कि विभिन्न स्तरों पर उन्हें अनुवाद की कठिनाइयों का सामना अवश्य ही करना पड़ा होगा।

2) मूल उपन्यास 'ज़ोलपाला ठ्लान त्लाङ' में कुल 32अध्याय हैं, परंतु हिंदी अनुवाद में केवल अध्याय हैं और वे भी संक्षिप्त हैं। अनुवादक ने अनुवाद करते समय गैर जरूरी 26 अध्यायों को पूर्ण रूप से छोड़ दिया है। परंतु इन अध्यायों की हिंदी 6 समझकर अंतिम अनुवाद में अनुपस्थिति से भी कथा रस में कोई फर्क नहीं पड़ता है।

3) अनुवाद एक कठिन प्रक्रिया है तिस पर मिज़ो भाषा की रचना का हिन्दी में अनुवाद कार्य तो और भी कठिन है क्योंकि -

क) दोनों भाषाओं की उत्पत्ति, प्रकृति, प्रायोगिक पद्धति तथा वातावरण में अंतर है।

ख) दोनों भाषासांस्कृतिक परिवेश में बहुत ज् -भाषियों के सामाजिक-यादा अंतर है।

ग) मिज़ो नाम और स्थान के उच्चारण और लेखन हेतु हिन्दी में वर्तनी की समस्या है।

घ) मिज़ो भाषा में कुछ ऐसे ध्वनि युग्म हैं जिनका हिन्दी में कोई भी समानान्तर रूप नहीं है। जैसे नाम के संदर्भ में उपन्यास का शीर्षक -'मलसॉमा' ही हिन्दी में गलत लिखा है-

Malsawma- 'मलसॉमा'

Ṭhuami- थुअमी

Mâtei- मेतेई

Kawla- कौला

Lali- लाली

Ruala- रौला, आदि।

स्थान के संदर्भ में –

Aizawl – आइजल

Biate – बियात

Reiek – रीइक

Zotlang – जोतलंग

Kanghmun – काघमुन

Ngaizel – नंगेजेल, आदि।

इसी तरह महीनों के नाम के संदर्भ में –

Ṭomir - तोमिर

Mîmkût - मिमकुट

Sahmulphah thla - सहमलफा थला

Khuangchawi thla - खुआंगछवी थला, आदि

वर्तनी की ये त्रुटियाँ भी अनुवाद की जटिलता को ही व्यक्त करती हैं।

ङ) उपन्यास की मूल संवेदना और भावों का हिंदी में हुहु अनुवाद करने में -ब- अनुवादक की विवशता को भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। ऐसी बहुत सारी बाते हैं जो अनुवाद की दृष्टि से काफी जटिल लगती हैं फिर भी मिज़ो समाज की कुछ विशेषताएँ यथासामाजिक -, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्य आदि से अनभिज्ञ अनुवादक के लिए यदि ऊपर युक्त अनुवाद की समस्या से जूझना पड़ा तो आश्चर्य की कोई बात नहीं है। फिर भी मिज़ो साहित्य का हिन्दी में अनुवाद कर अनुवादक ने बहुत ही सराहनीय कार्य किया है।

च) यह तो सर्वविदित ही है कि विश्व में कोई भी प्रयास अंतिम नहीं होता है। फिर भी 'मलसॉमा' उपन्यास का हिंदी अनुवाद मिज़ो हिन्दी अनुवाद के क्षेत्र में-आने वाली पीढ़ी के लिए बहुत ही उपयोगी मार्गदर्शक की भूमिका निभाएगा।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि तत्कालीन मिज़ो जनजातियों में उपन्यास साहित्य के प्रति अल्पज्ञान की स्थिति को देखते हुए उपन्यासकर खोलकूङी का प्रयास सराहनीय है। अनुवाद कार्य की जटिलता तो प्रत्येक अनुवादक के लिए चुनौतियाँ लाती ही हैं। अतः अनुवाद की दृष्टि से यह उपन्यास भी इससे अछूता नहीं है। परंतु एक मिज़ो उपन्यास की हिंदी में प्रस्तुति ही अपने आप में इसकी सबसे बड़ी सफलता है।

संदर्भ सूची

1. खॉलकुंगी, 'मलसॉमा', प्राक्कथन से
2. Khawlkungi, 'Zawlpala Thlân Tlâng' (Christian Love Story), पृ iii
3. खॉलकुंगी, 'मलसॉमा', पृ॰ 5

संदर्भ ग्रंथ-सूची

(क) आधार ग्रंथ

(ख) सहायक ग्रंथ

संदर्भ-ग्रंथ सूची

क) आधार ग्रंथ:

1. खॉलकुंगी, मलसॉमा, सुरभि प्रकाशन, 109, ग्राउन्ड फ्लोर, बी-ब्लॉक, प्रीत विहार, दिल्ली : 2014
2. Khawlkungi, Zawlpala Thlan Tlang (Christian Love Story), Exodus Press, Tuikhuahtlang, Aizawl : 2001

ख) सहायक ग्रंथ :

हिन्दी ग्रंथ :

1. प्रो.एल.टी. ख्याङते, सी. कामलौवा (अनुवादक), शूरवीर खुआङ्चेरा, कैम्ब्रिज प्रेस, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली: 2014.
2. सी. कामलौवा, मिज़ो जनजातियों का परिचयात्मक संक्षिप्त इतिहास (An Introductory BriefHistoryMizoTribes), Mualchin Publication & Paper Works, Peter Street, Khatla, Aizawl, 2016.
3. कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली , 2008
4. जी.गोपीनाथन और एस. कन्दस्वामी,अनुवाद की समस्याएँ, लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद, 2011
5. डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, अनुवाद कला, प्रभात प्रकाशन, 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली, 2001

6. डॉ॰ भ.ह.राजूरकर और डॉ॰ राजकमला बोरा, अनुवाद क्या है, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

7. डॉ.जयन्ती प्रसाद नौटियाल, अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार, राधाकृष्ण प्रकाशन

8. प्राइवेट लिमिटेड 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, 2006.

9. डॉ. रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया, साहित्य निधि प्रकाशन, 29/59-ए, गली नं 11, विश्वासनगर शाहदरा, दिल्ली, 1992.

अंग्रेजी ग्रंथ :

1. Dr.Laltluangliana Khiangte, TRIBAL CULTURE FOLKLORE AND

   LITERATURE, Mittal Publications 4594/9, Daryaganj, New Delhi, 2013

2. Dr.Laltluangliana Khiangte, Mizos of North East India An introduction to Mizo Culture, Folklore, Language & Literature, L.T.L Publication, Mission Veng, 2008

मिज़ो ग्रंथ :

1. Dr. Laltluangliana Khiangte, Khawlkungi leh a kutchhuak, L.TL. Publications Mission Veng, Felfim Computers, 2007

2. B. Lalthangliana, Mizo Literature, Remkungi, Gilzom offset, 2019

3. Dr. K.C. Vannghaka, Literature Kawngpui, Vanhlupuii, Gilzom offset,2015

4. Chaldailova.R., Mizo Pi Pute Khawvel, Vanlalnghaki,Gilzom offset, A-54, Electric Veng, 2011

5. Colney Lalzuia & Lalthianghlima, Mizo Thu leh Hla cl-IX & X, Mizoram Board of School Education,Thakthing Bazar Press 1999.

6. Duhsaka,V.L, MARY WINCHESTER (ZOLUTI) & Israel-Mizo, Sabbath vrs Sunday, Krishmas, Good Friday etc. L.R.Offset & Flex PrintingCanteen Kual Dawrpui Aizawl:,2013

7. Dokhuma, James., Hmanlai Mizo Kalphung, Electric veng, Aizawl: R. Lalrawna, 2015

8. Dr. Laltluangliana, Khiangte, THU LEH HLA THLITFIMNA LAM, L.T.L Publication, Mission Veng, 2016

9. Dr. Laltluangliana Khiangte, Pasaltha khuangchera, L.T.L Publication, Mission veng, 1997

10. Lalauva,R., Mizo Mi Bikte, Upper Bazar: R.Lalauva, Maranatha, 2010.

11. Laithanga,C., Mizo Khua, Chandmari: L.V Art, 2002

12. Lalbiakliana,C, Zawlbuk Ti Ti, Milan Computerise, 2000

13. Lalthangliana,B, & Lalthangliana,B, Mizo hnam zia leh Khawtlang nun siam that, 2016

14. Lalbiakliana, H.K.R, Pasalthate Chanchin, Khatla: H.R.KLalbiakliana, 2006

15. Lalhruaitluanga, Ralte, Thangliana, Aizawl: Art &Culture Department Govt. of Mizoram, 2013

16. Liangkhaia, Rev, MIZO AWMDAN HLUI & MIZO MI LEH THIL HMINGTHANGTE LEH MIZO SAKHUA, L.T.L Publication Mission Veng, 2008

17. Liangkhaia, Rev, Mizo Chanchin, L.T.L Publication, Felim Computer B- 43, Fakrun, Mission Veng, 2002.

18. Lalthangliana.B, Laithanga.C, Lalchungngunga, HlunaJ.V, Lal Sangliana,F, Mizo Hnam Zia Leh Khawtlang nunsiam thatna, The Synod Publication BoardAizawl, Mizoram. Synod Press Aizawl, 1988.

19. Lalthangliana.B, Zotui, M.C Lalrintluanga RTM Press Chhinga Veng Aizawl,2006.

20. Thanga, Selet,. Pi Pu Len Lai, Bara bazar, Aizawl: Lianchhungi Book store,1989.

21. Vanlallawma,C,. Bengkhuaia Silo, Lengchhawn press, Mission veng: 1996.

शोधार्थी का विवरण

नाम	: डूर्नुनसाङी
शिक्षा	: एम. ए.
विभाग	: हिन्दी
लघु शोध-प्रबंध का	
शीर्षक	: 'मलसॉमा' उपन्यास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
प्रवेश शुल्क के भुगतान	
की तिथि	: 23.07.2018
शोध प्रस्ताव की संस्तुति	
(i) बी.ओ.एस.	: 15.04.2019
(ii) स्कूल बोर्ड	: 08.05.2019
पंजीयन संख्या	: MZU/M.Phil./528 of 08.05.2019
अतिरिक्त समय	:

अध्यक्ष

हिन्दी विभाग

मिज़ोरम विश्वविद्यालय

जीवनवृत्त

नाम	: डूर्नुनसाङी
पिता का नाम	: आर. ललनुनमोया
माता का नाम	: साईडूर्पुई साइलौ
पता	: कुलिकोन
शैक्षिक योग्यता	: a) HSLC (2010) – 2nd Div b) HSSLC (2012) – 2nd Div c) B.A. (2015) – 1st Div d) M.A. (2017) – 1st Div
मोबाइल	: 9612468420
ई.मेल	: sangteisiakeng0107@gmail.com
भाषा	: मिज़ो, अंग्रेजी, हिन्दी

‘मलसॉमा’ उपन्यास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

‘MALSAWMA’ UPANYAS: EK VISHLESHANATMAK ADHYAYAN

एम.फिल. लघु शोध-प्रबंध सार

ABSTRACT

ङुर्नुनसाङी

NGURNUNSANGI

हिंदी विभाग

मिज़ोरम विश्वविद्यालय

DEPARTMENT OF HINDI

MIZORAM UNIVERSITY

'मलसॉमा' उपन्यास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

'MALSAWMA' UPANYAS: EK VISHLESHANATMAK ADHYAYAN

प्रस्तुतकर्ता

डूर्नुनसाङी

NGURNUNSANGI

हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय

DEPARTMENT OF HINDI
MIZORAM UNIVERSITY

मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के शिक्षा एवं मानविकी संकाय के अंतर्गत
हिंदी विषय में मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल.) की उपाधि के लिए
अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध

प्रो. संजय कुमार
आचार्य एवं अध्यक्ष
हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आईजाल-796004

केंद्रीय विश्वविद्यालय
A Central University
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

Prof. Sanjay Kumar
Professor & Head
Department of Hindi
Mizoram University,
Aizawl-796004

Mobile No. - 09402112143; 09774517465; E-mail: sanjaykumarmzu@gmail.com ; Website : www.mzu.edu.in

दिनांक: 23.12.2019

<u>प्रमाण-पत्र</u>

प्रमाणित किया जाता है कि **डूर्नुनसाङी** ने मेरे निर्देशन में मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ॉल की **मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल. - हिंदी)** की उपाधि हेतु '**'मलसॉमा' उपन्यास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन**' विषय पर शोध-कार्य किया है। प्रस्तुत शोध कार्य शोधार्थी की अपनी निजी गवेषणा का फल है। यह इनका मौलिक कार्य है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध या इसके किसी भी अंश को किसी विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी प्रकार की उपाधि हेतु अद्यावधि प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ॉल की **मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल. - हिंदी)** की उपाधि हेतु मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करने की संस्तुति करता हूँ।

(प्रो. संजय कुमार)
शोध-निर्देशक

हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आइज़ॉल

दिसंबर - 2019

घोषणा पत्र

मैं **डूर्नुनसाङी** एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की विषय-सामग्री मेरे द्वारा किए गए शोध-कार्यों का सुपरिणाम है। इस शोध-सामग्री के आधार पर न तो मुझे और जहाँ तक मुझे ज्ञात है, न किसी अन्य को कोई उपाधि प्रदान की गई है और न ही यह लघु शोध-प्रबंध मेरे द्वारा कोई अन्य उपाधि प्राप्त करने के लिए किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में प्रस्तुत किया गया है। इस लघु शोध-प्रबंध लेखन के दौरान जिन ग्रंथों की सहायता ली गयी है उसे समुचित रूप से उद्धृत किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मिज़ोरम विश्वविद्यालय के सम्मुख हिंदी विषय में **मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल. - हिंदी)** की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

(डूर्नुनसाङी)
शोधार्थी

(प्रो. संजय कुमार)
अध्यक्ष

(प्रो. संजय कुमार)
शोध-निर्देशक

लघु शोध-प्रबंध सार

खोलकूङी मिज़ो साहित्य का एक ऐसा नाम है जिसने जीवन के प्रति अपने अनुभव तथा वैचारिक दृष्टि का गहन परिचय अपने कथा साहित्य (उपन्यास) के माध्यम से देते हुए मिज़ो कथा साहित्य को एक नया आयाम देने का सार्थक प्रयास किया है।

अध्ययन की सुविधा हेतु सम्पूर्ण लघु शोध प्रबंध को तीन अध्याय में विभाजित किया गया है। लघु शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में खोलकूङी के व्यक्तित्व और कृतित्व का गहन परिचय दिया गया है। खोलकूङी का जन्म 14 सितंबर 1927 को मिशन वेङठ्लङ, आईजाल में हुआ था। इनके पिता का नाम हाउन्हार छूमा तथा माता का नाम जौकाइवेली था। गरीबी के कारण इनकी शिक्षा केवल छठवीं कक्षा तक हुई थी। तैंतीस वर्ष की उम्र में खोलकूङी ने 23 जनवरी 1960 को प्रथम असम रेजीमेंट (भारतीय सेना) में कार्यरत एवं हॉकी खिलाड़ी बुआलखूमा से विवाह किया। विवाह के चालीसवें वर्ष में 23 फरवरी 2004 को इनके पति का देहांत हो गया। इनकी चार संतान, दो लड़के और दो लड़कियाँ हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945) के दौरान खोलकूङी Women Auxiliary Corp में भरती हो गईं। इसी नौकरी के चलते उन्हें कलकत्ता में रहना पड़ा। वहाँ रहते हुए उन्हें अंग्रेजी के छोटे-मोटे उपन्यास तथा कहानी पढ़ने की आदत लगी। परिणामस्वरूप बाद में वे काफी अच्छी अंग्रेजी बोलने लगीं। परंतु इनके समकालीन सहपाठियों की मानें तो मात्र छठवीं तक ही पढ़ी होने के बाद भी इनकी सोच तथा जीवन के प्रति उनकी दृष्टि और विचार बड़े-बड़े विद्वानों और शिक्षित महानुभावों के विचारों से किसी भी दृष्टि से कमतर नहीं हैं।

मिज़ो कथा साहित्य के क्षेत्र में इनके अमूल्य योगदान को स्वीकार करते हुए 28 मार्च 1987 ई. को भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने अपने कर कमलों से उन्हें पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया। इसके अलावा भी उन्हें अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। उन्हें 1991 में Distinguished in Letters Awards", 1998 में "Special Service Star Medal (BS & Guide), 1998 में Academy Award (by Mizo Academy of Letters)" आदि से सम्मानित किया गया। 20 मार्च, 2015 को खोलकूङी की मृत्यु हुई।

खोलकूङी ने उन्नीस वर्ष की छोटी उम्र से ही अपने विचारों एवं अनुभवों को कलमबद्ध करना आरंभ कर दिया था। इनकी रचनाओं को मुख्यतः दो भागों में बाँटकर देखा जा सकता है- मौलिक रचनाएँ और अनूदित रचनाएँ। इनकी मौलिक रचनाएँ लगभग 25 एकाँकी व नाटक और 37 छोटी कहानी और उपन्यास हैं। इसके अलावा इनकी 37 अनूदित रचनाएँ भी हैं। इनके निम्न मौलिक उपन्यास अत्यधिक प्रसिद्ध रहे हैं- 'Hmangaihna khua a var hma in' (प्रेमपूर्ण भोर से पहले) तथा 'Duhtak Sangpuii' (प्रिय साङपुई), 'Zawlpala Thlan Tlang' (जोलपला के कब्र के पहाड़), Cowboy Label Jeans (काउबॉय लबेले जीन्स) आदि। लगभग इनकी सभी रचनाओं में चर्च और ईसाई धर्म की शिक्षाओं का बहुत ही गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। उन्होंने बच्चों की कहानी, प्रेम कहानी (युवा-युवती) और पति-पत्नी से संबन्धित कहानियाँ भी लिखी हैं। प्रारंभ में खोलकूङी की अंग्रेजी अच्छी नहीं थी। परंतु कलकत्ता प्रवासकाल के दौरान उन्होंने अंग्रेजी के साहित्य का गहन अध्ययन भी किया। तभी इन्होंने अपने समय के परिचित कई अंग्रेजी कहानियों का मिज़ो भाषा में सफलतापूर्वक अनुवाद किया। खोलकूङी कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध लिखने के अतिरिक्त पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सक्रिय थीं। मात्र छठवीं तक पढ़ी खोलकूङी द्वारा मिज़ो साहित्य के प्रति किए गए उनके योगदान को किसी भी दृष्टि से कम कर नहीं देखा जा सकता है। यदि, उनके समय में मिज़ोरम में छापाखाना (प्रेस) न होने के कारण Cyclostyle का सहारा लेने की मजबूरी लेखिका के सामने किसी राक्षस की तरह मुँह बाएँ खड़ी हो जाती थी। उन परिस्थितियों ने लेखिका के सृजनात्मकता को भी बाधित और प्रभावित किया था। यदि उनके समय में आज की तरह प्रकाशन की व्यवस्था होती तो उनके मौलिक तथा अनूदित रचनाओं की संख्या शायद काफी अधिक हो सकती थी। हस्त लिखित और Cyclostyle होने के कारण लेखिका की अधिकांश रचनाएँ आज समय के थपेड़े खाकर लुप्त हो गई हैं। फिर भी आज जो कुछ भी इनकी रचनाएँ उपलब्ध हैं इनके सहारे खोलकूङी को मिज़ो साहित्य का अगुवाई करने वाली महान लेखिका के रूप में याद किया जाता है।

द्वितीय अध्याय में 'मलसॉमा' उपन्यास की संवेदना का वर्णन और विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय को चार उप-अध्याय में बाँट कर उसका विवेचन किया गया है। मिज़ो भाषा में लिखित 'जोलपला ठ्लान त्लाङ' उपन्यास खोलकूङी का प्रसिद्ध उपन्यास है। जिसका हिन्दी में अनुवाद 'मलसॉमा' शीर्षक से किया गया है। अनुवादक का नाम और पता

ज्ञात न हो पाने के कारण मूल शीर्षक में परिवर्तन क्यों किया गया, इस प्रश्न के सही उत्तर की अकांक्षा रखना अब निरर्थक है। परंतु एक बात तो यह तय है कि इस उपन्यास का अनुवाद किसी गैर मिज़ो भाषा भाषी ने किया है।

प्रथम उप-अध्याय में उपन्यास की पृष्ठभूमि को उद्घाटित किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास के उद्देश्य को उद्घाटित करते हुए लेखिका ने उपन्यास के 'प्राक्कथन' में स्वयं लिखा है कि "वर्ष 1977 में एक ईसाई प्रेम-कहानी लेखन की प्रतियोगिता हुई। तब मैंने एक कहानी लिखने का विचार किया। 31 अक्टूबर, 1977 को कहानी जमा करने की आखिरी तारीख थी, मैंने समय पर रचना जमा कर दी।"1 स्पष्ट है कि इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए ही प्रस्तुत उपन्यास की रचना की गयी थी। इसलिए उपन्यास के नायक और नायिका ईश्वर तथा ईसाई धर्म की शिक्षा व चर्च के नियमों में गहरी आस्था रखते हैं।

उपन्यास का आरंभ एल्डर कोला की बीमारी और उनकी एकलौती पुत्री वानललरेमी (नायिका) द्वारा अपने पिता की देखभाल से होता है। इस उपन्यास के कथानक की पृष्ठभूमि और समय 1940 ई. के आसपास का है।

मिज़ोरम में प्रतिवर्ष नवंबर महीने के अंत और दिसंबर महीने के दूसरे सप्ताह तक धान की कटाई की जाती है। इससे लोगों में अपनी मेहनत का फल मिलने की खुशी तथा साल भर के लिए अनाज के उपलब्ध होने के संतोष का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। परंतु जिस मुख्य पात्र के घर के चित्रण से कथानक का शुभारंभ होता है, वहाँ का वातावरण धान कटाई के कारण लोगों में दिखाई पड़ने वाले उत्साह और खुशी का न होकर दुख का है। एल्डर कोला अपनी बीमारी के कारण मरणासन्न स्थिति में हैं और वे अपनी मातृविहीन पुत्री रेमी के भविष्य को लेकर चिंतित हैं। कथानक की शुरुआत एल्डर कोला और उनकी पुत्री रेमी (नायिका) के बीच जीवन के प्रति उनकी आशा-निराशा पूर्ण संवाद से होती है। इसे रेमी (नायिका) के जीवन में संघर्ष की शुरुआत का काल माना जा सकता है।

प्रस्तुत उपन्यास का कथानक एक प्रेम कथा पर आधारित है, जो ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु आयोजित की गयी एक प्रतियोगिता में भागीदारी हेतु लेखिका द्वारा रचा गया था। उपन्यास का नायक मलसोमा मिशनरी स्कूल का एक हेडमास्टर है, जो एक रूपवान युवक था और नायिका वानललरेमी भी एक धार्मिक प्रवृत्ति की नवयुवती थी। नायिका रेमी को अपने पिता एल्डर लियाना की मृत्यु के बाद तमाम तरह की कठिनाइयों

का सामना करना पड़ता है, किन्तु उसकी आस्था कभी भी ईश्वर के प्रति कम नहीं होती है। जब उसकी बुआ के पति रौछीङा जबरदस्ती उसकी शादी एक शराबी युवक ललमुआना के साथ करानेवाले थे तब वह घर से भाग जाती है। वह अपने पिता की इच्छा के अनुसार अपने मामा के घर जाने के लिए निकल पड़ती है। यह दुर्घटना आगे चलकर उसके लिए आशीर्वाद बन जाती है क्योंकि 'रैएक' गाँव जाने के क्रम में उसकी मुलाक़ात मलसोमा से आइज़ोल में पुनः होती है और वहीं से उनकी प्रेम कहानी शुरू हो जाती है। जब मलसोमा 'रैएक' गाँव का हेडमास्टर बनकर गया, तब वहाँ के अधिकतर लड़कियों के माता-पिता उसे अपना दामाद बनाने को लालायित रहते हैं। गाँव की एक सुंदर लड़की ललखोथङी और उनके परिवार वाले भी मलसोमा को पसंद करते हैं। ललखोथङी मलसोमा के साथ प्रेम संबंध बनाना चहती है, पर मलसोमा केवल रेमी को ही प्यार करता है। दूसरी तरफ आईसीएमए (सेना) का एक नवयुवक वानथङा जब छुट्टी में घर आता है तो वह ललखोथङी से शारीरिक संबंध बनाना और अपने खानदान को आगे बढ़ाना चाहता है जिसमें वह बाद में सफल भी हो जाता है, जिसके कारण ललखोथङी गर्भवती हो जाती है। ललखोथङी के परिवार वालों ने मलसोमा को ही उस बच्चे का पिता होने का आरोप लगाया जिसे ललखोथङी भी चुपचाप स्वीकार कर लेती है। परन्तु गाँव के मुखिया और उसके सहायक वरिष्ठ जनों (एल्डर) के सामने इस बात को मलसोमा ने गलत साबित कर दिया, जिससे सभी सहमत थे। इस घटना से ललखोथङी के परिवार की बहुत बदनामी हुई। इससे क्रोधित होकर ललखोथङी के बड़े भाई ने मलसोमा के मुख्य कार्यालय आइज़ोल में उसकी लिखित शिकायत कर दी, जिसके परिणामस्वरूप मलसोमा का 'रैएक' से स्थानांतरण कर दिया जाता है। जिससे स्वाभिमानी मलसोमा अपने को अपमानित महसूस करता है और अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे देता है। वह मिज़ोरम छोड़कर एयरफोर्स अफसर बनने के लिए कलकत्ता चला जाता है। इन सब घटनाओं के बावजूद भी रेमी मलसोमा का साथ नहीं छोड़ती है और अंत में दोनों की शादी हो जाती है। इस प्रकार रेमी और मलसोमा जैसे पात्रों के जीवन और चरित्र के सहारे लेखिका ने सुख-दुख और उतार-चढ़ाव वाले जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस उपन्यास की रचना ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु आयोजित की गयी एक प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए लेखिका द्वारा की गयी थी। परिणाम स्वरूप संपूर्ण कथानक की रचना उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की गयी है, जिसमें ईसाई धर्म में आस्था रखने वाले पात्रों को चरित्रवान, दयालु, सदाचारी, जीवन में सफल

दिखाया गया है जिसका प्रतिनिधित्व नायक और नायिका (मलसोमा और रेमी), एल्डर कोला, पी जाई आदि करते हैं और ईसाई धर्म में आस्था नहीं रखने वाले पात्रों को चरित्रहीन, दुष्ट, दुराचारी, जीवन में असफल आदि दिखाया गया है, जिसका प्रतिनिधित्व ललखोथाङी, ललखोथङी का भाई ललङूरा, रौछीङा और ललमुआना आदि करते हैं। इसलिए तमाम परेशानियों के बावजूद नायक सेना का अफसर बन जीवन में सफल हो जाता है और अंत में उसकी शादी नायिका से हो जाती है और दोनों सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं।

द्वितीय उप-अध्याय के अंतर्गत उपन्यास के विभिन्न पात्रों एवं उनके चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास में छोटे-छोटे 32 अध्याय हैं और उपन्यास का कथानक 34 विभिन्न पात्रों के सहयोग से रचा गया है। इस उपन्यास की नायिका वानललरेमी है तो नायक मलसोमा है। इसके अतिरिक्त अन्य कई स्त्री और पुरुष पात्र हैं।

वानललरेमी इस उपन्यास की मुख्य पात्र या नायिका है। माँ, भाई और बहनों की आकस्मिक मृत्यु के बाद वह अकेली अपने पिता के साथ रहती है। परंतु पिता की मृत्यु के पश्चात वह पूर्ण रूप से अनाथ हो जाती है। इस घटना ने उपन्यास के कथानक को करुणा पूर्ण बना दिया है। रेमी का चरित्र उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक जिज्ञासापूर्ण और संघर्षशील चरित्र के रूप में दिखाई देता है। प्रारम्भ में वह गाँव-गाँव भटकने के बाद ईसाई मिशनरी पी जाई की छत्रछाया में अपने जीवन के एक नए अध्याय का शुभारंभ करती है और अपने चरित्र के उज्ज्वल पक्ष से सबको प्रभावित करती है। रेमी एक ऐसी पात्र है जो उपन्यास को आरंभ से अंत तक एक सूत्र में बांधकर रखती है।

इस उपन्यास का नायक मलसोमा है। शायद इसीलिए हिंदी अनुवाद में इस उपन्यास का शीर्षक बदल कर उसे 'मलसोमा' कर दिया गया है। परंतु मलसोमा की तुलना में इस उपन्यास में वानललरेमी का चरित्र पाठकों को अधिक आकर्षित करता है। फिर भी मलसोमा एक ऐसा पात्र है जो अपनी सज्जनता, सहनशीलता, सदाचार, ईमानदारी, स्वाभिमान और ईश्वार के प्रति अटूट आस्था के कारण अपनी अलग पहचान बनाता है।

आरंभ में रेमी से मिलने और उसकी सहायता पाने के कारण मलसोमा उसे मन ही मन चाहने लगता है। जब ललखोथाङी मलसोमा को एक तरफा प्रेम की जाल में फंसाना चाहती है तो मलसोमा उसके प्रेम प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता है। वह एक तरफा प्रेम में असफल होने के कारण उसे बदनाम करने की कोशिश करती है। परंतु मलसोमा अपने सदाचार और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण बदनाम होने से बच जाता है। वह अपनी सदाचार और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण ही अपनी निर्दोषिता को प्रमाणित करने में सफल हो पाता है। परंतु उस झूठे आरोप की वजह से उसका स्थानांतरण कर दिया जाता है तो वह अपने आत्म सम्मान के लिए शिक्षक की नौकरी छोड़ देता है और ब्रिटिश भारतीय सेना में अफसर बन जाता है। फ़ौजी अफसर बनना उसके चरित्र की उत्कृष्ट विशेषता को दर्शाता है। अनेकानेक घटनाक्रमों के बाद अंत में वह रेमी से शादी कर अपना घर बसाता है जो उसके चारित्रिक गुण तथा विश्वसनीयता को सिद्ध करती है।

बियाककूङी और पी जाई इस उपन्यास के ऐसे स्त्री पात्र हैं जो समय पड़ने पर किसी भी जरूरतमंद की सेवा करने में पीछे नहीं हटती हैं। पी जाई जहाँ धार्मिक प्रवृत्ति की ममता पूर्ण ईसाई मिशनरी है वहीं बियाककूङी अंत तक रेमी का साथ देने वाली धार्मिक प्रवृत्ति की लड़की है। ललखोथङी, रौछीङा और ललमुआना ऐसे पात्र हैं जो नकारात्मक मनोभावों का प्रतिनिधित्व करते हैं और उपन्यास के कथानक को एक तरह से पूर्ण बनाते हैं। इसी तरह एल्डर कोला ईसाई धर्म की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं के प्रति अपनी विश्वसनीयता और आस्था के परिचायक हैं।

इसी तरह प्रस्तुत उपन्यास के अन्य गौण पात्र भी उपन्यास के कथानक को गति देते हैं तथा उसके रसास्वादन में पाठकों की सहायता के लिए विभिन्न भावों को परोसने का कार्य करते हैं। संक्षेप में कहें तो उपन्यास की मूल संवेदना भी कथित पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं या विशेष भूमिका पर ही आधारित है।

तृतीय अध्याय में मिज़ो भाषा से हिंदी भाषा में 'मलसॉमा' उपन्यास का अनुवाद करने की राह में आने वाली चुनौतियों का उल्लेख किया गया है। इसमें अनुवाद की कठिनाइओं के विभिन्न घटकों का विश्लेषण किया गया है।

मिज़ो भाषा (स्रोत भाषा) और हिन्दी भाषा (लक्ष्य भाषा) अपनी उत्पत्ति से लेकर प्रकृति में भिन्न हैं। इसकी ध्वनि व्यवस्था, ध्वनियों के उच्चारण संबंधी गुण, शब्द रचना तथा सम्पूर्ण वाक्य व्यवस्था आदि में अत्यधिक भिन्नता है, जिसके कारण अनुवादक को अनुवाद कार्य करने में भाषा के सभी स्तरों पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है।

इस उपन्यास के हिंदी अनुवाद का शीर्षक 'मलसॉमा' रखा गया है जो इस उपन्यास के नायक और मुख्य पुरुष पात्र का नाम है। परंतु मिज़ो भाषा की उच्चारण संबंधी विशेषता के साथ-साथ इसकी तानपूर्ण प्रकृत्ति से परिचित न होने के कारण अनुवादक ने सही वर्तनी 'मलसोमा' का 'मलसॉमा' कर दिया है। जबकि मिज़ो भाषा में ॅ ध्वनि का प्रयोग नहीं किया जाता है। जबकि अ, आ, ओ और औ स्वर ध्वनियों का प्रयोग प्रचुर मात्र में होता है। अतः 'मलसोमा' की जगह 'मलसॉमा' लिखना मिज़ो ध्वनि व्यवस्था को सही रूप में न समझ पाना ही है। व्यक्तिवाचक संज्ञा यथा- व्यक्ति एवं स्थान आदि के नाम में वर्तनी की त्रुटियाँ प्रचुर मात्रा में परिलक्षित हैं, जो मिज़ो भाषा-भाषियों के उपन्यास के रसास्वादन में बाधक बन जाती हैं।

इसी तरह मिज़ो समाज की सामाजिक व्यवस्था तथा सांस्कृतिक मूल्यों को सही-सही अर्थ में न समझ पाने के कारण सम्पूर्ण उपन्यास के संवेदनात्मक भावपक्ष का अनुवाद आशानुकूल नहीं हो पाया है। इस संदर्भ में झूम-खेती और इसके देख-रेख में किए जाने वाले विभिन्न क्रियाओं का भी अनुवाद पूर्णतः सफल नहीं माना जा सकता है।

इस संदर्भ में उपन्यास के प्रारम्भ में ही मूल शीर्षक के औचित्य के संबंध में उद्धृत गीत की पंक्तियों के अनुवाद को लिया जा सकता है:

"Zawlpala thlân sumtualah,

Ṭuangṭuah pâr a vul bung e,

Sehran lû a tlar bung e,

Ka di e, Zawlpala e."2

इन पंक्तियों का अनुवाद उपन्यास में निम्न प्रकार से किया गया है जो सही नहीं लगता है-

"ज़ॉलपाला की कब्र के सामने

खिले है कोरल के फूल खूब सुंदर

सामने हैं मिथुन के कपाल

मेरा प्यारा ज़ॉलपाला!"3

वैसे तो अनुवाद की प्रक्रिया की जटिलता को देखते हुए कहा जा सकता है कि कोई भी अनुवाद कार्य सौ प्रतिशत सही नहीं हो सकता है फिर भी प्रस्तुत पंक्तियों की अनुवाद की वैधता को कविता की अर्थगत विशेषता की दृष्टि से सही मानना अपने आप में काफी कठिन है। इसका अनुवाद यदि इस प्रकार किया जाता तो अर्थगत दृष्टि से कुछ सीमा तक तसल्ली मिल पाती-

"ज़ोलपल के कब्र के आँगन में

झूम उठे हैं मत-माते महुए के फूल

लगी हैं - मिथुन के सिरों की कतार

ओ! प्रिय ज़ोलपल!"

मूल उपन्यास और उसके हिन्दी अनुवाद के अध्ययन के पश्चात अनुवाद की दृष्टि से मनन करने पर कुछ बातें स्वतः ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित करती हैं, जिसे निम्न प्रकार से अभिव्यक्त किया जा सकता है:

1) मूल उपन्यास का शीर्षक 'जोलपला ठ्लान त्लाङ' को बदलकर 'मलसॉमा' करने के पीछे अनुवादक की क्या मजबूरी रही होगी साफ-साफ कहना तो कठिन है। परंतु, इतना तो कहा ही जा सकता है कि विभिन्न स्तरों पर उन्हें अनुवाद की कठिनाइयों का सामना अवश्य ही करना पड़ा होगा।

2) मूल उपन्यास 'जोलपला ठ्लान त्लाङ' में कुल 32 अध्याय हैं, परंतु हिंदी अनुवाद में केवल 26 अध्याय हैं और वे भी संक्षिप्त हैं। अनुवादक ने अनुवाद करते समय गैर जरूरी समझकर अंतिम 6 अध्यायों को पूर्ण रूप से छोड़ दिया है। परंतु इन अध्यायों की हिंदी अनुवाद में अनुपस्थिति से भी कथा रस में कोई फर्क नहीं पड़ता है।

3) अनुवाद एक कठिन प्रक्रिया है तिस पर मिज़ो भाषा की रचना का हिन्दी में अनुवाद कार्य तो और भी कठिन है क्योंकि -

क) दोनों भाषाओं की उत्पत्ति, प्रकृति, प्रायोगिक पद्धति तथा वातावरण में अंतर है।

ख) दोनों भाषा-भाषियों के सामाजिक- सांस्कृतिक परिवेश में बहुत ज्यादा अंतर है।

ग) मिज़ो नाम और स्थान के उच्चारण और लेखन हेतु हिन्दी में वर्तनी की समस्या है।

घ) मिज़ो भाषा में कुछ ऐसे ध्वनि युग्म हैं जिनका हिन्दी में कोई भी समानान्तर रूप नहीं है। जैसे- नाम के संदर्भ में उपन्यास का शीर्षक 'मलसॉमा' ही हिन्दी में गलत लिखा है-

Malsawma- 'मलसॉमा'

Ṭhuami- थुअमी

Mâtei- मेतेई

Kawla- कौला

Lali- लाली

Ruala- रौला आदि।

स्थान के संदर्भ में –

Aizawl – आइजल

Biate – बियात

Reiek – रीइक

Zotlang – जोतलंग

Kanghmun – काघमुन

Ngaizel – नंगेजेल आदि।

इसी तरह महीनों के नाम के संदर्भ में –

Ṭomir - तोमिर

Mîmkût - मिमकुट

Sahmulphah thla - सहमलफा थला

Khuangchawi thla - खुआंगछवी थला आदि

वर्तनी की ये त्रुटियाँ भी अनुवाद की जटिलता को ही व्यक्त करती हैं।

ङ) उपन्यास की मूल संवेदना और भावों का हिंदी में हु-ब-हु अनुवाद करने में अनुवादक की विवशता को भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। ऐसी बहुत सारी बाते हैं जो अनुवाद की दृष्टि से काफी जटिल लगती हैं फिर भी मिज़ो समाज की कुछ विशेषताएँ यथा- सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्य आदि से अनभिज्ञ अनुवादक के लिए यदि उपर्युक्त अनुवाद की समस्या से जूझना पड़ा तो आश्चर्य की कोई बात नहीं है। फिर भी मिज़ो साहित्य का हिन्दी में अनुवाद कर अनुवादक ने बहुत ही सराहनीय कार्य किया है।

च) यह तो सर्वविदित ही है कि विश्व में कोई भी प्रयास अंतिम नहीं होता है। फिर भी 'मलसॉमा' उपन्यास का हिंदी अनुवाद मिज़ो-हिन्दी अनुवाद के क्षेत्र में आने वाली पीढ़ी के लिए बहुत ही उपयोगी मार्गदर्शक की भूमिका निभाएगा।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि तत्कालीन मिज़ो जनजातियों में उपन्यास साहित्य के प्रति अल्पज्ञान की स्थिति को देखते हुए उपन्यासकर खोलकूङी का प्रयास सराहनीय है। अनुवाद कार्य की जटिलता तो प्रत्येक अनुवादक के लिए चुनौतियाँ लाती ही हैं। अतः अनुवाद की दृष्टि से यह उपन्यास भी इससे अछूता नहीं है। परंतु एक मिज़ो उपन्यास की हिंदी में प्रस्तुति ही अपने आप में इसकी सबसे बड़ी सफलता है।

संदर्भ सूची

1. खॉलकुंगी, 'मलसॉमा', प्राक्कथन से

2. Khawlkungi, 'Zawlpala Thlân Tlâng' (Christian Love Story), पृ iii

3. खॉलकुंगी, 'मलसॉमा', पृ॰ 5

संदर्भ-ग्रंथ सूची

क) आधार ग्रंथ:

1. खॉलकुंगी, मलसॉमा, सुरभि प्रकाशन, 109, ग्राउन्ड फ्लोर, बी-ब्लॉक, प्रीत विहार, दिल्ली : 2014
2. Khawlkungi, Zawlpala Thlan Tlang (Christian Love Story), Exodus Press, Tuikhuahtlang, Aizawl : 2001

ख) सहायक ग्रंथ :

हिन्दी ग्रंथ :

1. प्रो.एल.टी. ख्याङते, सी. कामलौवा (अनुवादक), शूरवीर खुआङ्चेरा, कैम्ब्रिज प्रेस, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली: 2014.
2. सी. कामलौवा, मिज़ो जनजातियों का परिचयात्मक संक्षिप्त इतिहास (An Introductory Brief History Mizo Tribes), Mualchin Publication & Paper Works, Peter Street, Khatla, Aizawl, 2016.
3. कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली , 2008
4. जी.गोपीनाथन और एस. कन्दस्वामी,अनुवाद की समस्याएँ, लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद, 2011

5. डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, अनुवाद कला, प्रभात प्रकाशन, 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली, 2001

6. डॉ॰ भ.ह.राजूरकर और डॉ॰ राजकमला बोरा, अनुवाद क्या है, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

7. डॉ.जयन्ती प्रसाद नौटियाल, अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार, राधाकृष्ण प्रकाशन

8. प्राइवेट लिमिटेड 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, 2006.

9. डॉ. रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया, साहित्य निधि प्रकाशन, 29/59-ए, गली नं 11, विश्वासनगर शाहदरा, दिल्ली, 1992.

अंग्रेजी ग्रंथ :

1. Dr.Laltluangliana Khiangte, TRIBAL CULTURE FOLKLORE AND

   LITERATURE, Mittal Publications 4594/9, Daryaganj, New Delhi, 2013

2. Dr.Laltluangliana Khiangte, Mizos of North East India An introduction to Mizo Culture, Folklore, Language & Literature, L.T.L Publication, Mission Veng, 2008

मिज़ो ग्रंथ :

1. Dr. Laltluangliana Khiangte, Khawlkungi leh a kutchhuak, L.TL. Publications Mission Veng, Felfim Computers, 2007
2. B. Lalthangliana, Mizo Literature, Remkungi, Gilzom offset, 2019
3. Dr. K.C. Vannghaka, Literature Kawngpui, Vanhlupuii, Gilzom offset,2015
4. Chaldailova.R., Mizo Pi Pute Khawvel, Vanlalnghaki,Gilzom offset, A-54, Electric Veng, 2011
5. Colney Lalzuia & Lalthianghlima, Mizo Thu leh Hla cl-IX & X, Mizoram Board of School Education,Thakthing Bazar Press 1999.
6. Duhsaka,V.L, MARY WINCHESTER (ZOLUTI) & Israel-Mizo, Sabbath vrs Sunday, Krishmas, Good Friday etc. L.R.Offset & Flex PrintingCanteen Kual Dawrpui Aizawl:,2013
7. Dokhuma, James., Hmanlai Mizo Kalphung, Electric veng, Aizawl: R. Lalrawna, 2015
8. Dr. Laltluangliana, Khiangte, THU LEH HLA THLITFIMNA LAM, L.T.L Publication, Mission Veng, 2016

9. Dr. Laltluangliana Khiangte, Pasaltha khuangchera, L.T.L Publication, Mission Veng, 1997

10. Lalauva,R., Mizo Mi Bikte, Upper Bazar: R.Lalauva, Maranatha, 2010.

11. Laithanga,C., Mizo Khua, Chandmari: L.V Art, 2002

12. Lalbiakliana,C, Zawlbuk Ti Ti, Milan Computerise, 2000

13. Lalthangliana,B, & Lalthangliana,B, Mizo hnam zia leh Khawtlang nun siam that, 2016

14. Lalbiakliana, H.K.R, Pasalthate Chanchin, Khatla: H.R.KLalbiakliana, 2006

15. Lalhruaitluanga, Ralte, Thangliana, Aizawl: Art &Culture Department Govt. of Mizoram, 2013

16. Liangkhaia, Rev, MIZO AWMDAN HLUI & MIZO MI LEH THIL HMINGTHANGTE LEH MIZO SAKHUA, L.T.L Publication Mission Veng, 2008

17. Liangkhaia, Rev, Mizo Chanchin, L.T.L Publication, Felim Computer B- 43, Fakrun, Mission Veng, 2002.

18. Lalthangliana.B, Laithanga.C, Lalchungngunga, HlunaJ.V, Lal Sangliana,F, Mizo Hnam Zia Leh Khawtlang nunsiam thatna, The Synod Publication BoardAizawl, Mizoram. Synod Press Aizawl, 1988.

19. Lalthangliana.B, Zotui, M.C Lalrintluanga RTM Press Chhinga Veng Aizawl,2006.

20. Thanga, Selet,. Pi Pu Len Lai, Bara bazar, Aizawl: Lianchhungi Book store,1989.

21. Vanlallawma,C,. Bengkhuaia Silo, Lengchhawn press, Mission veng: 1996.